ऑयल इंडिया लिमिटेड
(भारत सरकार का उद्यम)
Oil India Limited
(A Government of India Enterprise)

छमाही हिंदी गृह पत्रिका

ऑयल किरण

अइल किৰণ OIL KIRAN | 2019 | वर्ष 16 अंक 24

सम्पादकीय

आप सब के समक्ष ''ऑयल किरण'' का 24वां अंक प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है।

ऑयल इंडिया लिमिटेड की छमाही हिंदी पत्रिका की विकास यात्रा आप सभी के सहयोग से जारी है, जिसके लिए मैं आप सभी को पूरे राजभाषा परिवार की तरफ से धन्यवाद ज्ञापित करता हूं। इस पत्रिका के माध्यम से हमारे कार्मिकों और हमारी नई पीढ़ी को अपनी सृजनात्मक एवं साहित्यिक प्रतिभा की अभिव्यक्ति के लिए एक सुअवसर मिलता है। विगत वर्ष में हमने अपने कार्मिकों के मध्य राजभाषा नीति के अनुपालन, प्रचार-प्रसार एवं प्रशिक्षण के लिए कुछ महत्वपूर्ण उल्लेखनीय कार्य किए हैं, जिन्हें मैं आपके साथ साझा करना चाहूंगा।

ऑयल इंडिया लिमिटेड अपने कार्यालयीन कार्य राजभाषा हिंदी में करने से इतर अपने कार्मिकों को हिंदी में दक्ष बनाने के लिए हिन्दी प्रशिक्षण कार्यक्रम (प्रबोध, प्रवीण, प्राज्ञ, पारंगत) के साथ-साथ अपने कार्मिकों को असमिया भाषा में सक्षम बनाने के लिए 'निपुण' प्रशिक्षण कार्यक्रम का भी आयोजन करता है। नराकास की बैठकें, हिन्दी कार्यशाला, हिन्दी माह, हिन्दी की विभिन्न प्रतियोगिताओं के साथ ही विगत वर्ष में हमने राजभाषा से लोगों को अवगत कराने के लिए 'राजभाषा संवाद' कार्यक्रम का भी आयोजन किया। राजभाषा हिन्दी में काम करने के लिए कम्प्यूटर आधारित ई-टूल्स की जानकारी के लिए तकनीकी कार्यशालाएं आयोजित की गई । इन सबको एक बड़ा फलक प्रदान करते हुए, ऑयल के सभी राजभाषा कार्यक्रमों को सिर्फ ऑयल के कार्मिकों तक ही सीमित न रख कर कार्मिकों के आश्रितों, नराकास के सदस्यों एवं प्रचालन क्षेत्रों के विद्यार्थियों के लिए भी आयोजित किया जाता है, जिससे हमें नए लोगों के विचारों के साथ भी जुड़ने का सुअवसर मिलता रहे।

आशा करता हूं कि आपको 'ऑयल किरण'का यह अंक पसंद आयेगा। ऑयल किरण के इस अंक को उत्कृष्ट एवं पठनीय बनाने के लिए विशेष प्रयास किए गए हैं, इसे और बेहतर बनाने के लिए आपके सुझावों और मनोभावों का सदैव स्वागत है।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित।

डॉ. शैलेश त्रिपाठी, हिन्दी अधिकारी
क्षेत्र मुख्यालय, दुलियाजान

सलाहकार

श्री प्राणजित डेका
कार्यकारी निदेशक (मानव संसाधन एवं प्रशासन), क्षेत्र मुख्यालय, दुलियाजान
श्री दिलीप कुमार भूयाँ, महाप्रबंधक (जन संपर्क), क्षेत्र मुख्यालय, दुलियाजान

प्रधान सम्पादक

डॉ. शैलेश त्रिपाठी, हिन्दी अधिकारी, क्षेत्र मुख्यालय, दुलियाजान

संपादक मंडल

डॉ. रमणजी झा, उप महाप्रबंधक (रा. भा.), निगमित कार्यालय, नोएडा
डॉ. वी. एम. बरेजा, उप महाप्रबंधक(रा. भा.) कोलकाता कार्यालय, कोलकाता
श्री हरेकृष्ण बर्मन, मुख्य प्रबंधक (रा. भा.) राजस्थान परियोजना, जोधपुर
श्री नारायण शर्मा, वरिष्ठ प्रबंधक (रा. भा.) पाइपलाइन मुख्यालय, गुवाहाटी

सम्पादन-सहयोगी

श्री दीपक प्रसाद, पर्यवेक्षण सहायक (इजी -III), क्षेत्र मुख्यालय, दुलियाजान
श्री विजय कुमार गुप्ता, पर्यवेक्षण सहायक (पीजी), क्षेत्र मुख्यालय, दुलियाजान
श्री दिगन्त डेका, वरिष्ठ सहायक - I (हिन्दी अनुवादक), क्षेत्र मुख्यालय, दुलियाजान

संपादकीय कार्यालय :
राजभाषा अनुभाग, जन संपर्क विभाग
ऑयल इंडिया लिमिटेड, क्षेत्र मुख्यालय
डाकघर : दुलियाजान - 786602, जिला : डिब्रूगढ़ (असम)
ई-मेल : hindi_section@oilindia.in

ऑयल किरण
वर्ष - 16, अंक - 24

आवरण विषय
हिन्दी और ई-टूल्स

इस अंक में .....

परिश्रम का फल	4
परिश्रम का फल	5
घमंडी हाथी	6
लोभी दर्जी	6
दृढ़ निश्चय	6
हार की जीत	7
बुजुर्गों की छाया	7
बड़ी खोज	8
यह कहां आ गए हम	9
आधुनिक प्रेम का नतीजा	10
प्रेम	11
अधूरा प्रेम	12
एक अनूठा आधुनिक प्रेम	13
व्हाट्सएप प्रेम	14
सोच	15
हिंदी के उत्थान के लिए मिलकर काम करें	16
क्या सब कुछ बदल रहा है?	16
दीपावली	17
किसी का बुरा मत सोचिए	17
नाश्ता : दिन का ईंधन	18
11वां विश्व हिंदी सम्मेलन : मेरी नजर में	19
यात्रा वृत्तांत (रामगढ़, जिला नैनीताल, उत्तराखंड प्रदेश)	21
माँ	22
लंदन यात्रा	23
11वां विश्व हिन्दी सम्मेलन, मॉरीशस	24
हिंदी हमारी मातृभाषा	25
नोट बंदी	25
स्वच्छ भारत एक सपना	25
युगपुरुष	25
नन्हीं चिड़िया	26
माँ	26
बरसात की बूंदे	26
माँ	26
डिगबोई में	27
ऑयल राजभाषा समाचार	**28-42**

पत्रिका में प्रकाशित लेख, रचनाओं आदि में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण संबंधित लेखक के हैं। ऑयल राजभाषा अनुभाग तथा सम्पादक का इससे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

नि:शुल्क एवं आंतरिक विरतण हेतु प्रकाशित।

मुद्रक सैकिया प्रिंटर्स, दुलियाजान, दूरभाष - 9435038425

अध्यक्ष की लेखनी से....

आज हिंदी विश्व में सर्वाधिक बोली और समझे जाने वाली भाषाओं में, अग्रिम पंक्ति में अपना स्थान बना चुकी है। इसकी स्वीकार्यता और प्रचार-प्रसार के बड़े कारणों में से एक है विस्थापन तो वहीं दूसरी तरफ इसकी सरलता, वैज्ञानिकता और इसकी सुलभ समझ इसके विस्तार में मददगार साबित हो रही है। इस संदर्भ में मैं आपका ध्यान अगस्त 2018 में मॉरीशस में आयोजित ''विश्व हिन्दी सम्मेलन'' की तरफ ले जाना चाहता हूं। जहां पर विभिन्न मुद्दों पर चर्चा हुई, जिन से होकर हिन्दी के प्रचार-प्रसार की कई नई राहें खुलती हैं।

इस सम्मेलन में विभिन्न सरकारी घोषणाओं के मध्य यह प्रस्तावित किया गया कि 'नई पीढ़ी को सांस्कृतिक दृष्टि से जागरूक बनाया जाय' अर्थात मुझे यह लगता है कि यह राजभाषा को राष्ट्रभाषा और इससे भी एक कदम आगे बढ़कर इसे जनभाषा बनाने की एक नवीन पहल की घोषणा है, जिस पर हमें अपना दैनिक कार्यालयीन कार्य करते हुए भी सोचना चाहिए। वहीं दूसरी महत्वपूर्ण घोषणा जिसने मेरा ध्यान आकर्षित किया कि 'हिंदी के लिए अधिकतम ई-टूल्स विकसित किया जाना चाहिए' अर्थात अब हम उस दौर में कदम रख रहें हैं जहां हमें अपनी भाषा की वैज्ञानिकता इसकी पहुंच को और भी विभिन्न कसौटियों पर कसकर इसे और भी सुंदर, जनग्राह्य, स्वीकार्य बना सकते हैं। इसके माध्यम से राजभाषा को हम सिर्फ अनुवाद की भाषा बनने से बचा सकते हैं। आज यह एक प्रचलित धारणा बन गई है, कि राजभाषा हिन्दी, अनुवाद की भाषा बन गई है जबकि वास्तविकता यह है कि अनुवाद इसका एक पक्ष मात्र है। इस धारणा को नकारने के लिए हमें अपने कार्यालयों में हिन्दी में मूल कार्य को और अधिक प्रोत्साहित करना होगा। दूसरे या सरल शब्दों में कहूं तो यह कहना ज्यादा उचित होगा कि हमें अपनी कार्यालयीन कार्य पद्धति की सोच से एक कदम आगे बढ़कर हिन्दी में कार्य करने के लिए बेहतर माहौल बनाना होगा।

ऑयल इंडिया लिमिटेड में हम इन्हीं पहलों को कार्यान्वित करने का प्रयास कर रहें हैं। अपने कार्यालयीन कार्य को हिन्दी में करने के साथ ही साथ हम अपने संस्थान में हिंदी का माहौल बनाने एवं अपनी नई पीढ़ी को हिंदी भाषा के साथ-साथ अपनी संस्कृति, अपनी माटी और अपने जीवन मूल्यों में जोड़ने के लिए प्रयासरत रहते हैं। हिन्दी को वैश्विक पटल पर स्थापित करने, इसे विकसित करने के लिए हमें 'नई सोच एवं ऊर्जा' की जरूरत है, और उन्हें इसके लिए अवसर देकर उन्हें विकसित करने के लिए भी हमें प्रयासरत रहना चाहिए। हम हिन्दी के विकास के लिए भी अपनी कंपनी की टैग लाइन ''नवीन क्षितिजों की ओर'' को चरितार्थ करने के लिए सदैव संकल्पबद्ध हैं, और आप सभी का सहयोग इसके लिए अपेक्षित है।

जय हिन्द!!!

प्राणजित डेका

(प्राणजित डेका)

कार्यकारी निदेशक (मानव संसाधन एवं प्रशासन) एवं

अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति, ऑयल

परिश्रम का फल

✍**अखिलेश राय,** *कक्षा 10*
राष्ट्रभाषा विद्यालय, दुलियाजान

एक लड़का था। जिसका नाम था अमन। अमन काफी शांत स्वभाव का लड़का था। वह कभी किसी से झगड़ा लड़ाई नहीं करता था और हमेशा शांतिपूर्वक अपना काम करता रहता था। अमन कक्षा दसवीं का छात्र था। अमन मानसिक रूप से थोड़ा कमजोर था। जिसकी वजह से अमन की मां हमेशा उसकी चिंता किया करती थी। अमन के पिता एक बहुत बड़े व्यापारी थे। उनका सपना था कि वह अमन को एक बहुत अच्छा वकील बनाएं, पर अमन की मानसिक कमजोरी की वजह से और उसके भविष्य को लेकर दुखी थे। अमन अपने स्वास्थ्य के कारण कक्षा में पढ़ाए गए पाठ को याद नहीं रख पाता था। जिसके कारण उसके मित्र उसका मजाक उड़ाया करते थे। वह अपने मित्रों के लिए मजाक का पात्र बन गया था। अमन भी चाहता था कि वह अपने दोस्तों की तरह कक्षा में पढ़ाए गए पाठ को याद रख सके। इन्हीं सब कारणों से अमन काफी मेहनत करने लगा। वह काफी रात तक पढ़ाई करने लगा। लेकिन उसके मित्रों ने उसका मजाक उड़ाना नहीं छोड़ा। जब भी वह कक्षा में पढ़ाई करता, उसके कक्षा के साथी अपनी पढ़ाई करने की जगह उसकी निंदा किया करते, उसका मजाक उड़ाया करते थे। वे कहा करते थे कि चाहे जितना भी परिश्रम कर लो तुम पास नहीं हो पाओगे। उन सब की बातों का ध्यान न देकर पास होने और अपने पिता के सपनों को साकार करने के लिए अमन दिन रात परिश्रम करने लगा। वह जब भी खाली रहता अपने शिक्षक की बताई बातें याद कर पढ़ाई में लग जाता था। एक दिन की बात है, जब अमन के कुछ मित्र उसका मजाक उड़ा रहे थे। एक शिक्षक ने उन्हें देख लिया। शिक्षक ने अमन से पूछा कि क्या बात है? अमन ने सारी बातें पूरी सच्चाई के साथ बता दी। इस बात पर शिक्षक ने अमन को सुझाव दिया कि परिश्रम का फल सदा मीठा होता है। तुम परिश्रम करते जाओ फल तुम्हें अवश्य मिलेगा। इस बात को गांठ बांधकर वह पूरी तरह से पढ़ाई में लग गया। अब उसका परिश्रम उसके आत्मविश्वास को बढ़ाने लगा। वह अपने विषयों को याद करने में सक्षम होने लगा। यह देख उसके पिता तथा मां को काफी खुशी होने लगी थी। उसके पिताजी के सपने एक बार फिर से सच होते दिख रहे थे। इसी बीच उनकी कक्षा में छमाही परीक्षा का कार्यक्रम लिखवाया गया। यह देख काफी बच्चों ने अमन को चिढ़ाना शुरू किया कि तुम तो फेल ही होगे। पर अमन ने अपने परिश्रम में कोई कमी नहीं की वह परिश्रम करता रहा। कुछ दिन बीते फिर परीक्षा होने लगी। अमन ने परीक्षा दिया और उसे लगा कि वह पहले से अच्छा कर रहा है, अब वह अच्छे से लिख पा रहा है। यह देख उसका आत्मविश्वास बढ़ा और वह बहुत खुश हुआ। उसने अपना परिश्रम जारी रखा। वह खूब मेहनत और लगन के साथ पढ़ाई करता रहा। परीक्षा के कुछ दिन बीतने के बाद आज परिणाम आने वाला था। अमन काफी डरा हुआ था। बाकी बच्चे भी उतने ही डरे हुए थे। अमन को डर था कि असफल होने पर उसके मित्र उसे फिर से चिढ़ाएंगे। अंतत: परिणाम आया और अमन पास हो गया। यह देख सभी बच्चों का मुंह खुला का खुला रह गया। वे सोचने लगे कि यह कैसे हुआ। उस समय काफी बच्चों का परिणाम खराब आया। उस दिन किसी ने उसे नहीं चिढ़ाया। सभी अमन को काफी गौर से देख रहे थे। तभी एक शरारती बच्चे ने अमन को फिर से चिढ़ाया उसने कहा कि इस परीक्षा में पास होने से क्या होगा। फाइनल में पास करके दिखाओ। इस तरह अमन और बाकी बच्चों के बीच एक मुकाबला सा छिड़ गया। सभी मेहनत में लग गए। अमन के परीक्षा में पास होने की खबर सुनकर उसका परिवार भी काफी खुश हुआ। उसके माता पिता उसे शाबाशी दे रहे थे। अमन अपने काम में लगा रहा। अब सभी बच्चे पढ़ाई में लग गए थे। अमन का मजाक अब कोई नहीं उड़ाता था। इसी तरह यह कार्यक्रम चलता रहा। परीक्षाएं आती रहीं-जाती रहीं। आखिरकार वह दिन भी आ गया जिसका सभी को इंतजार था। अब अमन की फाइनल परीक्षा होने वाली थी। उसने परीक्षा दिया। उसके पिता सोच में डूबे हुए थे। अमन भी यही सोचता रहता था कि उसका क्या होगा।

उसके मित्र भी काफी सोच में थे। अब अमन का रिजल्ट आने वाला था। सब डरे हुए थे। रिजल्ट आया। आखिरकार अमन पास हो गया। पास ही नहीं वह अपने कक्षा में सबसे अव्वल आया। अमन अपने पिता की उम्मीदों पर खरा उतरा और आगे चलकर वह भारत का बहुत बड़ा वकील बना। उसने अपने पिता के सपने को साकार किया तथा अपने भविष्य को बनाया। यह सब सिर्फ उसके परिश्रम की वजह से हुआ। इसलिए कहा गया है कि परिश्रम का फल हमेशा मीठा होता है। परिश्रम करने वालों की कभी हार नहीं होती।

इस कहानी से हमें यह सीख मिलती है कि हमें दूसरों की बातों पर ध्यान नहीं देना चाहिए। हमें हमेशा मेहनत करते रहना चाहिए।

परिश्रम का फल

✍ **जिज्ञासा गुप्ता,** *कक्षा 8,*
राष्ट्रभाषा विद्यालय, दुलियाजान

एक गांव में एक किसान रहता था। वह खेती करके अपना घर बार चलाता था। वह खेती करके अनाज पैदा कर सकता था। मगर वह यह सब नहीं करना चाहता था। एक दिन जब वह बाजार की ओर जा रहा था तो उसने देखा की एक दुकानदार अपने टेबल पर बैठे-बैठे सो गया है तो उसके मन में यह ख्याल आया कि वह उसके दुकान में से कुछ सामान उठा लाए और इसी सोच के साथ वह दुकान की ओर चल पड़ा। जैसे ही वह अपने कदम बढ़ा ही रहा था कि तभी एक सज्जन व्यक्ति वहां पहुंचे और उस किसान से बोला कि - प्रिय। आप ये बहुत बड़ा अनर्थ करने जा रहे हैं। किसी के परिश्रम की कमाई को आप इस तरह हासिल नहीं कर सकते। किसान ने कहा - आप कौन हैं और मेरा रास्ता क्यों रोक रहे हैं? सज्जन ने कहा कि - हमें आप अपना दोस्त समझ लीजिए। हम आपको गलत सलाह नहीं देंगे, यह दुकानदार अपना पेट भरने के लिए बहुत ही परिश्रम करता है। वह आपकी ही तरह दिन भर खेती करके अपने बेटे और पत्नी के लिए अन्न उपजाता है और शाम होते ही सब्जी की दुकान चलाता है। इतना सब करने के कारण वह ठीक से सो नहीं पाता है। तो वह कभी-कभी इस दुकान में इसी तरह सो जाता है। आप इस तरह चोरी करके इसके परिश्रम का फल आप प्राप्त नहीं कर पाएंगे। आप मेरी बात मानिए आप स्वयं परिश्रम कीजिए और विश्वास रखिए कि आपको भी आपके परिश्रम का फल जरूर मिलेगा। आपको बहुत बहुत धन्यवाद किसान ने सज्जन आदमी से कहा। सच में आप मेरे प्रिय मित्र हैं। मैं आपका जीवन भर आभारी रहूंगा। इतना कहकर किसान अपने घर चला गया। वह हल और कुल्हाड़ी लेकर खेत जोतने लगा।

आधी रात बीत गई किसान की पत्नी ने सोचा - जो व्यक्ति काम से भागता था वह आज आधी रात में खेत जोत रहा है परंतु पत्नी मन ही मन बहुत खुश हुई। वह किसान लगातार खेत में काम करता रहा फिर देखा की बहुत रात हो गई तो वह सोने चला गया। उसे आज बहुत दिनों बाद सुकून की नींद आयी। वह अपने खेतों में काम करता रहा एक दिन वह भी आया कि जब उसके खेतों में फसल लह-लहा रही थी। वह बहुत प्रसन्न हुआ और अनाज को बेचकर और एक दुकान भी खरीद लिया। उसकी पत्नी यह सोच कर बहुत ही खुश थी कि उसके पति ने मेहनत करना शुरू किया और कामयाबी की ओर बढ़ रहे हैं। उसका बेटा जोकि दसवीं का छात्र था अपने पिता को मेहनत करते देख वह भी खुब मन लगाकर पढ़ाई करने लगा था और जब कुछ महीनों बाद उसके बेटे ने भी दसवीं प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण किया तो वह बहुत खुश हुआ। उसने और भी मेहनत करने की सोची और वह कामयाब भी हुआ। वह दिन रात उस सज्जन व्यक्ति का पूजा करता था जिसने उसे गलत रास्ते के बजाय सही रास्ता दिखाकर उसे कामयाबी दिलाई। फिर वह एक दिन उसी जगह पर गया जहां वह मिले थे। उसने उसको पहचानने में भूल कर दी। लेकिन सज्जन व्यक्ति ने उसे पहचान लिया और बोला कि आप हमें ही ढूंढ रहे हैं ना। किसान ने सज्जन व्यक्ति से कहा कि - मैं आपका बहुत बड़ा आभारी हूं, आपने तो मेरी आंखें खोल दी। मैं आपका मुंह मीठा कराने आया हूं। आपको यह जानकर बेहद ही खुशी होगी कि मेरे बेटे ने कक्षा में प्रथम स्थान हासिल किया है। अब मैं उसके भविष्य की सलाह आपसे लेना चाहता हूं।

मैं अपने बेटे को और शिक्षा देना चाहता हूं इसके लिए और मेहनत करनी पड़ेगी तो और मेहनत करूंगा। वह मेरा इकलौता बेटा है। सज्जन ने कहा यह तो बहुत अच्छी बात है। मगर आप अपने बेटे को मन लगाकर पढ़ने को कहिएगा। इधर अपने पिता की दशा देखकर एक दिन बेटे ने कहा कि पिताजी खेती के काम में मैं आपका हाथ बटाना चाहता हूं जिससे कि आपको इतना परिश्रम न करना पड़े। तब उसके पिता ने उसे पास बैठा कर समझाया कि - बेटा यह सब तो होता ही रहेगा मगर भविष्य में कुछ पाने के लिए कुछ खोना पड़ता है। तुम मन लगाकर पढ़ो, अपना और अपने परिवार का नाम रोशन करो यही मेरे परिश्रम का फल होगा। किसान के बेटे ने कहा कि पिताजी आपने मुझे सब कुछ बता दिया, अब मैं बहुत अच्छे से मन लगाकर पढ़ूंगा और आपके सभी सपनों को साकार करूंगा। उसने खूब पढ़ाई किया और पढ़ने के लिए ही विदेश चला गया और वहीं पे नौकरी भी करने लगा। कुछ साल बाद वह दिन आया जब किसान वृद्ध हो गया और उसका बेटा भी विदेश से लौटकर घर आ गया किसान उसे पहचान ही नहीं सका और बोला तुम कौन हो बेटे? बेटे न कहा मैं आपका पुत्र हूं पिताजी। आप सब से मिलकर बहुत अच्छा लग रहा है। मैंने आपके सपनों को साकार कर दिखाया। किसान ने कहा - बेटे तुम तो बहुत बदल गए हो। यह तो आपके ही कर्मों का फल है पिताजी जो आज हम सबको इस मोड़ तक ले आया है। पूरा परिवार मिलकर बेटे का विवाह बहुत धूमधाम के साथ किया और सबलोग मिल जुल कर खुशी खुशी रहने लगे।

तो दोस्तों आप परिश्रम करें तो कोई भी काम असंभव नहीं है। कर्म करो तो फल मिलता है, आज नहीं तो कल मिलता है।

घमंडी हाथी

✍ **मंजीत गौर,** *कक्षा 12*
ऑयल हायर सेकेन्ड्री स्कूल, दुलियाजान

एक समय की बात है। एक नदी के किनारे एक बहुत विशाल वृक्ष था जिस पर बहुत सारे पक्षी जैसे – तोता, मैना, कौवा और गौरैया इत्यादि रहते थे। वहीं एक बहुत बड़ा और बिगड़ैल हाथी रोज पानी पीने आता था। जब हाथी नदी में पानी पीने आता तो वह पानी पीकर उस बड़े वृक्ष के नीचे जाता और वृक्ष को बहुत जोर–जोर से हिलाता और झकझोर देता था जिसके कारण बहुत से पक्षियों के अंडे नीचे गिरकर फूट जाते थे।

हाथी रोज आता और रोज वृक्ष को हिलाकर पक्षियों के अंडों को तोड़ देता। छोटे और लाचार पक्षी उस विशाल हाथी का कुछ नहीं कर पाते। एक दिन सभी पक्षियों ने एक सभा बुलाई और उसके उपरांत उन्होंने एक तरकीब निकाली। अगले दिन जब हाथी पानी पीकर वृक्ष की तरफ बढ़ा तो पक्षियों के सरदार कौवे ने हाथी से वृक्ष ना हिलाने की विनती की और जब हाथी न माना तो कौवे ने गौरैया को हाथी के कान में एवं चिंटियों को उसके सूंड़ में घुसने का आदेश दिया। जिसके परिणाम स्वरूप घमंडी हाथी जिसको अपने विशाल रूप पर घमंड था वह कुछ ही पल में जमीन पर गिर कर अधमरा सा हो गया। और विनती करने लगा कि उसे छोड़ दिया जाय। कौवे के आदेश पर गौरैया और चींटी बाहर आ गए और हाथी ने सभी पक्षियों से क्षमा याचना की और अपनी गलती का अफसोस किया। उसके बाद उस हाथी ने कभी भी पक्षियों को परेशान नहीं किया और अब वह नदी से पानी पीकर उस वृक्ष के नीचे थोड़ा आराम करता और फिर चला जाता।

इस तरह हाथी अपने विशाल आकार और बल के बाद भी घमंड के कारण हार गया।

लोभी दर्जी

✍ **पूजा रॉय,** *कक्षा 8*
ऑयल हायर सेकेन्ड्री स्कूल, दुलियाजान

एक लोभी दर्जी था। उसे बहुत जोरों की भूख लगी थी। वह घर खाना खाने जाना चाहता था। इतने में एक आदमी उसके पास शर्ट सिलाने के लिए आया तो दर्जी ने कहा कि मैं आपका शर्ट सिल दूंगा पर क्या आप मेरा एक काम करेंगे। अगर मैं आपसे कहूं कि थोड़ी देर के लिए आप मेरी दुकान देख लेंगे तो मैं आपका शर्ट सील दूंगा। ठीक है, उस आदमी ने कहा मैं तुम्हारी दुकान देख लूंगा, बदले में मुझे क्या मिलेगा? दर्जी बहुत लोभी था उसने उस आदमी से कहा कि मैं तुम्हारी शर्ट सिल कर दूंगा, ठीक है न? उस आदमी ने उसकी बात मान ली और थोड़ी देर बाद दर्जी घर से वापस दुकान आ गया। तभी उस आदमी ने दर्जी से कहा आपने कहा था कि मैं आपकी दुकान देख लूंगा तो आप मेरी शर्ट सीलकर देंगे। दर्जी लोभी था उसने तुरंत पुलिस बुला ली और उस आदमी को फंसा दिया। ये कहकर कि उस आदमी ने दुकान से शर्ट चुराई है। पुलिस उस आदमी को पकड़ कर ले जा रही थी। तभी वहां पर एक लड़की आयी और उसने पुलिस को सबकुछ सच सच बता दिया और कहा कि दर्जी चाचा झूठ बोल रहे हैं। मैंने अपने कानों से सुना था कि दर्जी चाचा कह रहे थे की तुम मेरी दुकान देख लोगे तो मैं तुम्हारी शर्ट सील दूंगा। दर्जी चाचा को शर्ट न सिलना पड़े इसलिए उन्होंने इन्हें फंसा दिया। पुलिस दर्जी को पकड़कर थाने ले गई और उस आदमी को छोड़ दिया। यह है एक लोभी दर्जी की कहानी।

दृढ़ निश्चय

✍ **शाहिदा खातून,** *कक्षा 12*
केंद्रीय विद्यालय, दुलियाजान

कुछ भी नामुमकिन नहीं
यह हमारे अपने विचार हैं
चट्टानों को या पहाड़ों को तोड़ पाना
हमारे विचारों का ही फल है।
काले काले घनघोर यह बादल भी
क्या कभी रोक पाते हैं प्रकाश को?
क्षण भर के लिए ही तो काले बादल हैं
फिर तो प्रकाशित नभ ही है।
आये कितने भी आंधी तूफान
क्या डगमगाता आती कभी पहाड़ है?
जितना ही कष्ट यह सहता है
उतना ही मजबूत होता रहता है
क्या कभी पहाड़ ने अपना शीश झुकाया है?
या तो इसका शिखर, दृढ़ता के कारण बड़े मुश्किल से टूटता है।
या ना टूट कर यह पहाड़, मजबूत शिखर वाला कहलाता है।
जो भी हो
लेकिन यह पहाड़
अपने विचारों में
विजयी भाव ही दर्शाता है
टूटना मंजूर है इसे, झुकना यह स्वीकार्यता नहीं।

हार की जीत

✍ **पंकज कुमार यादव,** *कक्षा 8*
केंद्रीय विद्यालय, दुलियाजान

दिल्ली शहर के नामी कॉलेज में एक नए बच्चे ने अपना दाखिला कराया। उसका नाम रोहन था। पहले दिन ही उसने अपनी अच्छी आदतों एवं मिलनसार स्वभाव से नए दोस्त बना लिए। रोहन पढ़ने में, खेल में, नाच इत्यादि में काफी अच्छा था। इन्हीं कारणों से जहां उसके कई अच्छे दोस्त भी बने तो वहीं कॉलेज के कई छात्र उससे जलने भी लगे। उन्हीं में से एक लड़का था विशाल जो रोहन की तरह ही स्मार्ट था।

उनके कॉलेज में एक प्रतियोगिता का आयोजन हो रहा था। उस प्रतियोगिता का नाम था 'स्टूडेंट ऑफ द ईयर' अर्थात जो बच्चा इस प्रतियोगिता में बेहतरीन प्रदर्शन करेगा और जीतेगा उसे एक लाख रूपये और गोल्ड मेडल मिलेगा। सभी बच्चे अपनी-अपनी तैयारियों में जुट गए। इस प्रतियोगिता के कुल चार भाग थे। और केवल चार बच्चे ही फाइनल में जा सकते थे। रोहन और विशाल भी इस प्रतियोगिता में एक प्रतिभागी थे और इस प्रतियोगिता को लेकर इन दोनों के बीच जंग सी छिड़ गई थी। दोनों खूब मेहनत कर रहे थे।

सेमीफाइनल तक दोनों ने अच्छा प्रदर्शन दिया। फाइनल के दिन चार बच्चों के बीच प्रतियोगिता आरंभ हुई जिनमें रोहन और विशाल भी थे। सबसे पहले साइकिल रेस थी, फिर भूल भुलैया और अंत में दौड़। जब अंतिम प्रतियोगिता दौड़ शुरू हुई तो विशाल सबसे आगे था, उसके पीछे रोहन था। दौड़ के बीच में ये दोनों आगे पीछे हो रहे थे और जब दौड़ खतम होने वाली थी उस समय विशाल आगे निकल रहा था, विशाल जितने ही वाला था की बीच में उसने अपनी गति कम कर दी और रोहन को आगे जाने दिया। रोहन यह देखकर आश्चर्य से भर गया परंतु उसने अपनी गति बढ़ाकर दौड़ प्रतियोगिता जीत ली।

विशाल के ऐसा करने पर रोहन हैरान था। वह सोच रहा था जो बच्चा मुझसे एक कदम आगे था, वह मेरे पीछे क्यों रुक गया? यह क्यों उसे परेशान कर रहा था। प्रथम पुरस्कार प्राप्त करने के बाद भी रोहन खुश नहीं था।

कार्यक्रम समाप्त होने के बाद रोहन ने विशाल से पूछा- तुमने आखिर ऐसा क्यों किया? तुम तो जीतने वाले थे। विशाल ने हंसकर कहा - दोस्त प्रतियोगिता शुरू होने से पहले मैं तुम्हारे घर गया था, वहां मैंने देखा कि तुम्हारे घर में कोई नहीं था। केवल तुम्हारी दादी थी, जो बिमार होकर बिस्तर पर लेटी हुई थी। उन्होंने मुझे बताया कि तुम कितनी मेहनत करते हो और उनका ख्याल भी रखते हो। तभी मैंने सोच लिया कि मैं तुम्हारी मदद करूंगा और इस पुरस्कार राशि से तुम अपनी दादी का इलाज करा सको और अपनी जिंदगी बेहतर बना सको। प्रतियोगिता के अंत तक मैं तुम्हारे साथ था ताकि मैं यह देख सकूँ कि मेरा दोस्त कितना जांबाज़ है।

रोहन ने जब यह सुना तो उसके आंखों में आंसू आ गए और उसने विशाल को गले लगाकर उसका शुक्रिया अदा किया, और दोनों बेहतरीन दोस्त बन गए।

खेल में तो हार जीत होती रहती है। पर जो लोगों के दिलों को जीतते हैं वही असली विजेता होते हैं।

बुजुर्गों की छाया

✍ **साहिल अली,** *कक्षा 12*
केंद्रीय विद्यालय, दुलियाजान

आजकल की भागदौड़ भरी जिंदगी में हम अपने बुजुर्गों की पूर्ण रूप से सेवा नहीं कर पाते हैं। जो कि हमारा कर्तव्य ही नहीं बल्कि उनका अधिकार भी है। मेरी कहानी की आधारशिला बुजुर्गों की सेवा है।

रमेश एक सफल व्यापारी है। वह अपने परिवार के साथ शहर में रहता है। उसके परिवार में वह, उसकी पत्नी, उसकी बूढ़ी मां, तथा दो बच्चे हैं। बच्चों को अपनी दादी मां से बेहद लगाव है। लेकिन उसकी पत्नी को उनका बुढ़ापा तथा चिड़चिड़ापन बहुत खलता है। वो उन्हें बिल्कुल पसंद नहीं करती तथा उनके दैनिक काम जैसे उनके कपड़े धोना, उनको शौचालय ले जाना और बढ़ती अर्थराइटिस से उसे बहुत परेशानी होती है।

एक दिन इन सब से परेशान होकर रमेश की पत्नी ने रमेश के सामने यह शर्त रखी कि या तो वह अपनी मां को वृद्धाश्रम भेज दे, नहीं तो वह उसे तलाक दे देगी। अब रमेश भारी असमंजस में पड़ गया और उसे कुछ समझ में नहीं आ रहा था। अंत में मजबूर होकर वह यह तय करता है कि वह अपनी मां को वृद्धाश्रम भेज देगा। उसने यह निर्णय अपने दिमाग से लिया, उसने यह सोचा कि उसकी मां तो कुछ ही दिनों की मेहमान है इसके लिए अपनी पत्नी को छोड़ना उचित नहीं होगा। वह अगले दिन अपनी मां को वृद्धाश्रम ले गया यह कह कर की वे लोग अपना घर किसी दूसरी जगह शिफ्ट कर रहे हैं इसलिए कुछ दिनों के लिए उन्हें यहां रहना होगा। उसकी मां खुशी खुशी हामी भर देती है और चलने के लिए राजी हो जाती है।

वृद्धाश्रम पहुंचकर वह अपने ही उम्र के लोगों को देख कर खुश हो जाती है। धीरे-धीरे समय बीतने लगता है और जब उसे यह सब पता चलता है कि यहां पर जीतने भी लोग हैं उनके बेटों ने उन्हें यहां यूं ही अकेले छोड़ दिया है। धीरे-धीरे उसे भी यह एहसास हो जाता है कि उसके बेटे ने भी उससे छुटकारा पाने के लिए ही उसे यहां छोड़ा है। उन्हें इस बात से बहुत ही दुख होता है और अपने बेटे के इस व्यवहार के कारण वह बिमार रहने लगती हैं और एक दिन इस दुनिया से विदा कर जाती है। जब उसके बेटे को यह बात पता चलती है तो उसे अपने किए पर बहुत अफसोस होता है और अपनी मां को याद कर बस रोते ही रहता है।

कुछ दिनों के बाद अपने कर्मो का प्रायश्चित करते हुए वह अपनी पत्नी को स्वंय ही तलाक दे देता है। और प्रण लेता है कि वह अपनी पूरी जिंदगी बुजुर्गों की सेवा करेगा और उन्हें खुश रखेगा।

वह अपना काम छोड़कर एक वृद्धाश्रम में छोटी सी नौकरी कर लेता है, और अपने पूरे सामर्थ्य से बुजुर्गों की देखभाल करता है। उन सब में उसे अपनी मां का प्रतिबिंब नजर आता है।

शायद इसीलिए कहा जाता है कि - हमें अपने बुजुर्गों की सेवा करनी चाहिए तथा पूर्ण रूप से उनकी देखभाल करनी चाहिए, ठीक उसी तरह से जिस तरह से हमारे बचपन में स्वछंद भाव से उन्होंने हमारी परवरिश की थी। वे लोग बहुत किस्मत वाले होते हैं, जिनके सिर पर बड़े बुजुर्गों की छाया होती है।

बड़ी खोज

✍ **निहारिका राभा,** *कक्षा 9*
दिल्ली पब्लिक स्कूल, दुलियाजान

ग्रीष्म काल में अगर किसी समुंदर के पास किसी द्वीप पर जाने का मौका मिले तो मजा ही आ जाए! हम भी इस साल की गर्मियों की छुट्टियों में गोवा गए थे। वहां हम एक सप्ताह के लिए रहे। उसी बीच एक दिन तैरते वक्त मुझे एक शीशे की बोतल के अंदर एक छोटा सा कागज दिखाई दिया। मैंने उसे झट से पकड़ा और जितनी जल्दी हो सके, उतनी जल्दी अपने होटल के कमरे में ले गई। उस कमरे में मैं और मेरा छोटा भाई रहता था। अपने कमरे में जाने के बाद, मैंने उस बोतल को बहुत प्रयासों के बाद खोला और फिर उसके अंदर से कागज को निकाला। मैंने तीन चार बार उस कागज को एक से दूसरी तरफ देखा परंतु यह क्या कुछ था ही नहीं। अपनी आशा टूटने की वजह से मैं बाथरूम में चली गई। मेरे बाथरूम के अंदर रहने के वक्त, मेरे भाई ने मेज पर रखे उस कागज को अचानक देखा और उछल कूद करते समय उस पर संतरे का जूस गिरा दिया। उस में लिखे शब्द नजर आए तथा मेरा भाई उसे जोर जोर से पढ़ने लगा। मैं उसकी आवाज सुनकर शीघ्र ही बाथरूम से निकली और पूछा - इतना शोर क्यों कर रहे हो? मम्मी पापा को तुम्हारी शैतानियों की खबर दूं क्या, तब पता चलेगा। वह चुप हो गया तथा उसने मुझे वह कागज दिखाया। मैंने अपने भाई को कमरे से बाहर भेज दिया और कागज पर किसी सफेद पत्थर से लिखे गये शब्दों को खोज कर पढ़ने लगी। मैं सोचने लगी की शायद यह बहुत बड़ी खोज है इसलिए लिखने वाले ने ऐसा लिखा है। यह बात मैं सबको बताना नहीं चाहती थी। सबसे पहले मुझे पैसों और खजानों का ख्याल आया। इसलिए मैं अब पूरे द्वीप की सैर करने लगी ताकि मुझे कोई मिल जाए जो मुझे इसके बारे में कुछ बता सके। प्रवास के अंतिम दिन तक मेरी कोशिश असफल रही परंतु उस दिन किसी दूर कहीं छोटी द्वीप में जाने का मौका मिलने पर मेरी समस्याओं का समाधान निकला।

हम वहां से उस छोटे द्वीप के लिए सुबह ही रवाना हो गए। वह एक बहुत ही दूर समुद्र के बीच छोटा सा द्वीप था, जो शहर के तौर तरीकों से अनजान भी था। वहां पर रहने वाले लोग कई वर्षों से रह रहे थे। हमारा गाइड वहां कई बार जा चुका था। इसलिए उन्होंने बड़ी आसानी से हमें उन लोगों से परिचित करवाया। वे सब बहुत ही अच्छे थे और हम आसानी से उनके साथ घुल मिल गए। वहां की सैर करते समय मैं एक इंसान से मिली जिसके रहन-सहन के भाव वहां के लोगों से कुछ भिन्न थे। मेरे हाथ में उस कागज को देख कर वह लड़का मुझसे मिलने आया। वह करीब 25-26 साल का रहा होगा। उसने मुझे अपनी कहानी सुनाते हुए कहा-मैं यहां कुछ समय पहले अपने मित्रों के साथ घूमने आया था। इस बीच मैंने इधर ही रहने का फैसला लिया तथा मेरे दोस्त चले गए। उन्हें यह खबर देने के लिए की यहां मैंने असली खुशियों की खोज की है, जो शहर की बाहरी खुशियों से बिल्कुल अलग है। मैंने ही यह लिखा है। ओहो! मैं भी कितनी पागल थी खजानों के बारे में ही सोच रही थी। यह लड़का सच ही बोल रहा है। यहां के लोग अपने सरल स्वभाव से किसी का भी मन मोह सकते हैं। वे एक दूसरे की मदद करने में कोई कसर नहीं छोड़ते तथा हमेशा खुश रहते हैं। इस बीच कैसे पूरा दिन बीत गया पता ही नहीं चला। सूरज के ढलने का वक्त आ गया और हमें अपने होटल लौटना पड़ा। आखिर में मैंने उस लड़के से पूछा - तुम यहां कब तक रूकोगे? उसने जवाब देते हुए कहा -पता नहीं, शायद तब तक, जब तक मन ना भरे। मेरे ख्याल से शायद कभी नहीं। इन्हीं शब्दों को ध्यान में रख मैंने उसे बधाई दी कि उसे उसकी जिंदगी की खुशी इस द्वीप से मिल गई है। अपने साथ इन सुखद स्मृतियों को हृदय में लिए, हम अगले दिन सुबह की फ्लाइट से मुंबई रवाना हो गए।

यह कहां आ गए हम

✍ **डॉ. नवनीत स्वरगिरी**
उप मुख्य चिकित्सा अधिकारी (दंतचिकित्सा)
चिकित्सा विभाग, दुलियाजान

स्नेहा बेटी, कहां हो तुम? मां ने धीरे से आवाज लगाई। आई मां, बस कॉलेज के लिए ही तैयार हो रही हूं। स्नेहा अब एक सुंदर युवती के रूप में बड़ी हो चुकी थी। एक मध्यम वर्ग के परिवार में जन्म लेने के बाद भी वह सर्वगुण सम्पन्न युवती थी और अपने कॉलेज में काफी लोकप्रिय भी थी। अपने नाम की ही तरह वह सब पर अपना स्नेह न्यौछावर करती थी। जल्दी तैयार होकर वह अपनी दोस्त कविता के साथ कॉलेज के लिए रवाना हो गयी। आज का दिन बहुत महत्वपूर्ण था क्योंकि आज उसके परीक्षाओं के परिणाम घोषित होने वाले थे। सबको मालूम था कि स्नेहा विगत वर्षों की तरह इस वर्ष भी अव्वल नम्बरों में उत्तीर्ण होगी। यह उसका कॉलेज में आखिरी वर्ष था।

बधाई हो स्नेहा! तुम इस साल भी प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुई हो। आशीष ने कहा जो उसके खास दोस्तों में से था। धन्यवाद आशीष तुमने मेरी बहुत मदद की है। मैं सच में तुम्हारी ऋणी हूँ। आशीष मुस्कुराया और बोला - तुम खुद ही इतनी सक्षम हो, मैंने तो बस तुम्हें राह दिखाई है।

उन दोनों के बीच की बातें खत्म होते ही, स्नेहा अपना परीक्षाफल लेकर घर की ओर रवाना हो ही रही थी कि कविता ने उसे मिठाई खिलाने की जिद कर दी। स्नेहा बोली - क्या मिठाई खाएगी मैं तुझे अपने हाथों से हलवा बनाकर खिलाऊंगी। कविता मान गई और दोनों घर की ओर बढ़ गये। अरे वाह मेरी तो किस्मत अच्छी है, वरना हलवा तो मेरे हाथ से जाना था। आशीष बोला। आओ आशीष बेटा- अच्छे परीक्षाफल हेतु, तुम्हें भी बहुत बधाई। स्नेहा की मां बोली। सब मिलजुल कर हलवा पूरी का आनंद लेने लगे और बातों बातों में शाम ढल गई।

स्नेहा और आशीष का मिलना भी जैसे पहले से ही निश्चित था। कॉलेज के पहले वह दोनों स्कूल की वैज्ञानिक प्रतियोगिता में मिले थे। दोनों ने अपने- अपने स्कूल को वैज्ञानिक प्रतियोगिता में विजय दिलाई थी। तभी से उनकी मित्रता प्रगाढ़ होने लगी थी। आशीष ने मोबाइल फोन पानी में गिरने पर भी खराब न हो ऐसा एक नये मोबाइल फोन का निर्माण किया था और स्नेहा ने मोबाइल फोन की बैटरी ज्यादा से ज्यादा कैसे काम करे उस पर काम किया था।

फिर बाद में दोनों इंजीनियरिंग कॉलेज में मिले तो रिश्ता और गहरा होता गया। दोनों को इनके दोस्त स्नेहाशीष बुलाते तो उनके गालों में खुशी और लज्जा से लाली छा जाती थी। अपने स्कूल के ही काम को आगे बढ़ाते हुए आज दोनों ने मिलकर एक ऐसे मोबाइल फोन का इजाद किया जिसे लेकर दोनों आज जेनेवा में है। उनका फोन कई विदेशी कंपनियों ने खरीदने की सिफारिश की थी। लेकिन स्नेहा और आशीष को अपनी मातृभूमि से बहुत प्यार था, इसलिए उन्होंने इसका अपने देश में ही रहकर निर्माण किया और आज दुनिया के मशहूर लोगों में शुमार है।

साथ में काम करते करते प्यार और भी गहराया, स्नेहा और आशीष आखिर में अपने गुरुजनों और परिवार के आशीर्वाद से विवाह के बंधन में बंध गए। दिन-ब-दिन दोनों के बीच का प्रेम प्रगाढ़ होता गया। वे दोनों जब एक बार विदेश में एक अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लेने के लिए जा रहे थे तो उनके विमान को कुछ आतंकवादियों ने अपहरण कर लिया। आशीष ने सारा वाकया अपने द्वारा निर्मित फोन में कैद कर लिया। एक आतंकवादी ने उसके हाथ से मोबाइल छीन कर पानी में डाल दिया, लेकिन उसकी तकनीक की वजह से सारा किस्सा सही सलामत उसमें कैद रहा। स्नेहा की बैटरी को ज्यादा समय तक चलने देने वाली तकनीक भी काम आयी। आज उन आतंकवादियों को उसी मोबाइल में कैद फिल्म की वजह से अदालत ने सजा सुनाई है। स्नेहा और आशीष ने अपने प्यार और कर्म निष्ठा से न जाने कितने ही लोगों का भला किया होगा। भगवान से दुआ करता हूं कि ऐसे स्नेहा और आशीष हर घर में जन्म ले और हमारी भारत भूमि को धन्य करें।

हिन्दुस्तानी होने की पहली छाप,
जब करेंगे हिन्दी में वार्तालाप।।

- मुक्ति आचार्जी
तेल एवं गैस उत्पादन सेवाएं विभाग, दुलियाजान

आधुनिक प्रेम का नतीजा

✍ **ऋतुराज बोरा**
कनिष्ठ सहायक (II)
सामग्री विभाग, दुलियाजान

मानस गुवाहाटी शहर का निवासी है। उसके पिता एक सरकारी दफ्तर में नौकरी करते हैं। मानस कॉलेज की डिग्री खत्म होने के बाद सिक्किम मणिपाल विश्वविद्यालय में एमबीए करने गया। मानस पढ़ने में तेज होने के साथ साथ देखने में सुंदर और कला संस्कृति के क्षेत्र में भी बहुत अच्छा था। मानस एक अच्छा गिटार वादक भी था, इसलिए उससे दोस्ती करने के लिए लड़कियां तरसती रहती थी। लेकिन मानस लड़कियों पे ज्यादा ध्यान नहीं देता था। एक दिन कॉलेज कैंटीन में उसने स्मृति नाम के एक लड़की को देखा, उसे देखकर मानस के दिल में प्रेम की फुलझड़ी फूटने लगी। अपने क्लास के दोस्तों से पता लगाकर मानस को यह जानकारी मिली कि उस लड़की का नाम स्मृति है और वह भी एमबीए प्रथम छमाही की छात्रा है और वह दुलियाजान की रहने वाली है। धीरे धीरे मानस स्मृति के प्रेम में पागल होने लगा। एक दिन मौका देखकर कैंटीन में स्मृति को अकेली पाकर उसकी बगल वाली कुर्सी पर जा बैठा और अपने दिल की बात स्मृति से कह ही डाली। मानस स्मृति से यह भी कहा कि अगर वह राजी है तो उससे शादी भी करने के लिए तैयार है। मानस की बात सुनकर स्मृति घबरा गई और वहां से अपने हॉस्टल की ओर भागी। मानस भी काफी घबराया हुआ था वह भी सीधा घर आकर बिस्तर पर पड़ गया। अगले एक सप्ताह तक मानस कॉलेज नहीं जा पाया।

उधर स्मृति भी काफी घबराई हुई थी क्योंकि उसकी शादी पिछले ही महीने दिल्ली के निवासी मोहित के साथ तय हो चुकी थी और एमबीए खत्म होते ही दोनों की शादी होने वाली थी। अपनी सहेलियों से पता लगा कर उसे यह पता चला कि मानस एक बहुत शांत, सरल, सहज और पढ़ने में तेज लड़का है। सहेलियों ने उसे यह भी सलाह दी कि शादी को मारो गोली। तुम और मानस एक अच्छे दोस्त क्यों नहीं बन जाते। सहेलियों की यह बात स्मृति को अच्छी लगी और अगले दिन वह मानस से मिलकर अपनी मजबूरी के बारे में बताया साथ ही मानस के साथ अच्छी दोस्ती निभाने का वादा भी किया। स्मृति का यह शांत और विनम्र स्वभाव मानस को पसंद आया, भले ही उसका दिल टूट चुका था। उस दिन से दोनों अच्छे दोस्त बन गए। दिन गुजरता गया। दोनों ने अच्छे अंकों के साथ पढ़ाई भी पूरी कर ली। स्मृति मोहित के साथ शादी करके दिल्ली चली गई और वहां एक अच्छी कंपनी में नौकरी भी करने लगी। इधर मानस को मारुति सुजुकी में मैनेजर का पद मिला। दूर रहते हुए भी दोनों की आपस में फोन और सोशल मीडिया के जरिए बातचीत होती रहती थी। एक दिन स्मृति ने मानस को अपने भविष्य की जिंदगी की परिकल्पना और शादी के परिकल्पना के बारे में पूछा तो मानस ने दुखी स्वर में कहा मेरा दिल तो उसी दिन टूट गया जिस दिन तुमने मुझे प्रेमी से एक दोस्त बना लिया था। अब यह तुम्हारा कर्तव्य है कि तुम मेरे लिए एक लड़की ढूंढो। तब स्मृति ने मानस को अपने बचपन की सबसे अच्छी सहेली रीता के बारे में बताया और उसका फोन नंबर देकर बात करने की सलाह दी। मानस ने भी वैसा ही किया वह बिना देखे बिना समझे रीता से फोन पर बातें करने लगा और दोनों को गंभीर प्रेम होने लगा। रीता दुलियाजान की लड़की थी और पढ़ने में एकदम कच्ची होने के साथ साथ व्यवहार और खुले दिल की भी नहीं थी। किसी के साथ रीता का संबंध अच्छा नहीं था। छोटी-छोटी बातों पर दूसरों से झगड़ा उसका रोज का काम था। इतना ही नहीं माता पिता के साथ भी वह लड़ जाती थी। एक दिन मानस ने मिलने के लिए रीता को डिब्रूगढ़ बुलाया। रीता से मिलकर मानस बिल्कुल नाराज हो गया, क्योंकि पहली ही मुलाकात में थोड़ी देर हो जाने के कारण रीता ने उसे खूब डांटा। घर जाकर मानस धीरे धीरे रीता से छुटकारा पाने के लिए कोशिश करने लगा, क्योंकि रीता का स्वभाव और व्यवहार उसे बिल्कुल पसंद नहीं था। लेकिन रीता भी कम नहीं थी, एक सुंदर लड़का होने के साथ-साथ एक अच्छी नौकरी और गुवाहाटी में घर इससे ज्यादा किसी को और क्या चाहिए। किसी भी कीमत पर वह मानस को खोना नहीं चाहती थी। इसलिए वह फोन करके मानस को ब्लैकमेल कर रही थी कि अगर वह शादी नहीं करेगा तो वह आत्महत्या कर लेगी और कागज पर मृत्यु का कारण भी लिख कर जाएगी। यह बात सुनकर मानस घबरा गया। वह बहुत परेशान हो गया हर समय यह डर उसे परेशान करता रहता था। उन्हीं दिनों मानस एक बहुत बड़ी दुर्घटना का शिकार हो गया। तीन दिन तक उसे होश नहीं आया। अस्पताल से आकर एक महीने तक बिस्तर में ही पड़ा रहा। इधर रीता बार-बार फोन कर रही है लेकिन फोन ऑफ था। क्योंकि दुर्घटना में उसका मोबाइल फोन टूट गया था। रीता यह समझने लगी की मानस उससे छुटकारा पाने के लिए यह सब कर रहा है। इसलिए वह एक दिन घर छोड़ कर गुवाहाटी जा पहुंची कई जगह से पता लगा कर वह मानस के घर पहुंची और जबरदस्ती उसके घर में उसे बहू के रुप में स्वीकारने के लिए अनुरोध करने लगी। लेकिन बिस्तर पर पड़ा हुआ मरीज आखिर शादी कैसे करेगा। घरवालों ने रीता को समझा कर घर भेज दिया और मानस के ठीक होते ही शादी करने का वादा किया। दो महीने तक मानस ठीक नहीं हुआ, यह देखकर रीता फिर से मानस के घर जाकर जबरदस्ती करने लगी और यह भी कहा अगर वे उसे अपनी बहू के रूप में स्वीकार नहीं करेंगे तो वह आत्महत्या कर

लेगी और सारे घर वाले जेल जाएंगे। मजबूर होकर मानस के घर वालों ने रीता को बहू के रूप में स्वीकार कर लिया। अगले दिन से ही रीता मानस के माता पिता के साथ झगड़ा करना शुरू कर दिया। मानस को यह बात बिल्कुल पसंद नहीं आयी। रोज झगड़ा देखकर मानस घर से अलग होकर रहने लगा। तब भी रीता के स्वभाव में कुछ सुधार नहीं आया। आज भी छोटी-छोटी बातों पर दोनों के बीच झगड़े होते रहते हैं। शादी के आठ साल बाद भी उसके परिवार में सुख, शांति नहीं है। उनका एक सात साल का बेटा भी है। मानस अब रोज का झगड़ा सह नहीं पा रहा है और तलाक देने के लिए सोच रहा है। जवानी की एक गलती उसे आज भी चैन की जिंदगी नहीं जीने दे रही है। बिना देखे, बिना समझे कुछ दिन फोन पर बातें करके किये गये प्रेम का नतीजा वह आज झेल रहा है। मानस की एक गलती ने उसे अपने माता पिता से दूर कर दिया और उसके एक सुखी और शांत परिवार तथा उसकी पूरी जिंदगी को तबाह कर दिया।

प्रेम

✍ **नवनीता डेका**
अधिक्षण अभियंता (एलपीजी)
एलपीजी विभाग, दुलियाजान

असम के नौगांव जिले की एक छोटी सी जगह में पली बढ़ी नेहा। नेहा के पापा बहुत पहले ही एक एक्सीडेंट में गुजर गए थे। उसके बाद नेहा के लिए उसकी मम्मी ही सबकुछ थी। नेहा की मम्मी अपने पन्द्रह साल की बेटी से बहुत प्यार करती थी और नेहा भी अपनी मम्मी की हर बात मान कर चलती थी। नवीं कक्षा की नेहा खूब मन लगाकर पढ़ती थी। क्योंकि उसकी बोर्ड परीक्षा की तैयारी शुरू हो गई थी। नेहा रात-रात भर जाग कर पढ़ाई करती रहती थी। नेहा को उसकी मम्मी ने गणित और विज्ञान के लिए ट्यूशन भी लगा रक्खा था।

नेहा की मम्मी बहुत पुराने खयाल की थी, उनका सोचना था की मोबाइल फोन देने से बेटी बिगड़ जाएगी। पर जब से नेहा ट्यूशन जाने लगी तब से नेहा के लिए बिना मोबाइल के चलना मुश्किल हो गया था। कई बार तो वह सुबह ट्यूशन के लिए जाती पर वहां पहुंच कर पता चलता था कि ट्यूशन नहीं होगा और यह मैसेज कर दिया गया था।

फिर एक दिन नेहा की मम्मी को भी लगा उसे नेहा को एक मोबाइल फोन देना चाहिए। नया मोबाइल फोन पाके नेहा बहुत खुश हो गई। जब से नेहा को नया मोबाइल फोन मिला तब से वह ज्यादातर समय उसी पर लगी रहती थी। नेहा एक मध्यम वर्ग की छात्रा थी। नेहा की मम्मी को अब फिक्र होने लगी थी उसके रिजल्ट की। दिन रात नेहा अपने रूम में ही रहती है। स्कूल ट्यूशन और घर आकर वापस रूम में। नेहा की मम्मी अपनी बेटी से इतना प्यार करती थी कि वह नेहा से कुछ कह भी नहीं पा रही थी कि, यह क्या चल रहा है? कई बार नेहा की मम्मी ने उसे किसी के साथ बात करते हुए भी सुना था देर रात को।

परीक्षा का समय आया तो नेहा की मम्मी की चिंता बढ़ती ही जा रही थी। पर नेहा थी की बदलने का नाम ही नहीं ले रही थी। वही रूम के अंदर रात दिन। परीक्षा खत्म भी हो गई और अब नेहा की मम्मी को लग रहा था कि बेटी किसी भी तरह पास हो जाए और उसके बाद एक अच्छा सा लड़का खोज कर उसकी जल्दी से जल्दी शादी करवा दे।

रिजल्ट का दिन। नेहा अपनी मम्मी के पास टीवी रूम में बैठी हुई थी। दोनों के चेहरों में चिंता की लकीरे साफ दिख रही थी। इतने में नेहा के मोबाइल पे नेहा के प्रिंसिपल का फोन आया। वह नेहा की मम्मी से बात करना चाहते थे। नेहा ने जब यह बात बतायी तो नेहा की मम्मी और डर गई। डरी हुई आवाज में उन्होंने हेलो बोला। प्रिंसिपल सर बोले, आपने इन छह महीनों में ऐसा क्या जादू कर दिया, आपकी बेटी क्लास में फर्स्ट आई है। बधाई हो! नेहा की मम्मी खुशी से रो पड़ी। मां और बेटी दोनों रो रही थी और नेहा की मां ने बेटी को पकड़कर क्षमा मांगी कि उन्होंने उसे गलत समझा।

तब नेहा ने अपना फोन लेकर अपनी मम्मी को दिखाया। उसके क्लास का फर्स्ट आने वाला अभिषेक जिसे प्यार से वह अभी कहती थी का मैसेज। गए छह महीने से वह नेहा को दिन-रात हेल्प कर रहा था। वह अपने सारे नोट्स नेहा को व्हाट्सएप कर देता था। सारे जरूरी लिंक वह नेहा को भेजता था। रात में जब नेहा को नींद आती थी तो वीडियो कॉल करके उसके साथ बातें करके उसको फिर से पढ़ने के लिए बोलता था। सुबह भी वह सुंदर-सुंदर गाना भेज कर नेहा को गुड मॉर्निंग बोलता था। जिससे नेहा का पूरा दिन बहुत अच्छा जाता था। अभी इस बात का विशेष ध्यान रखता था की हर एक घंटे में बस एक बार ही वह लोग बात करें। बाकी समय सिर्फ पढ़ाई।

यह सारी बातें सुनकर नेहा की मम्मी दो मिनट एकदम चुप बैठ गई। फिर बेटी को पास बुला कर अपनी बाहों में ले कर बोली, प्यार करना कोई तुम लोगों से सीखें।

अधूरा प्रेम

✍ **कृष्ण राज गिरी**
पर्यवेक्षण सहायक
लॉजिस्टिक विभाग, दुलियाजान

शाम ढल चुकी है, पंछियों का कलरव वातावरण को आनंदमयी बना रहा है। इस सुहानी शाम में श्याम अपने बंगले के पिछवाड़े लॉन में सोच में डूबा हुआ है। रह रह कर उसका दिल दिमाग अतीत में गोते लगाने लगता है। कॉलेज के जमाने में उसकी भेंट अचानक नीलिमा से हुई थी। दोनों उसी कॉलेज के छात्र थे। उनकी मुलाकात अक्सर कॉलेज की गतिविधियों के वक्त हुआ करती थी। विचारों में समानता उन्हें करीब लाती रही और दोनों की अच्छी दोस्ती हो गई। घर का बड़ा बेटा होने का कारण बहुत सारी जिम्मेदारी उसके सर पर थी, पिता का साया उठ चुका था। मां ने कड़े परिश्रम से उसे पाल पोष कर इस लायक बनाया था कि समाज में उसका भी मान सम्मान हो सके। यह श्याम का यथार्थ था जिसे झूठलाया नहीं जा सकता। नीलिमा बड़े घर की बेटी थी। उसने कभी अभाव नहीं देखा था। पिता की लाडली, पढ़ने में अव्वल। उसकी जिंदगी मानो सतरंगी थी। समय पंख लगा कर उड़ रहा था। श्याम और नीलिमा की दोस्ती अब प्रेम में बदल चुकी थी। उन्होंने भविष्य के सपने देखने शुरू कर दिए थे। पर श्याम अपनी अवस्था तथा व्यवस्था को लेकर चिंतित भी था। वह सब कुछ साफ-साफ नीलिमा को बताना भी चाहता था लेकिन नीलिमा इन सब बातों को ज्यादा महत्व नहीं देती थी। वे बस जिंदगी का मजा अपने ढंग से ले रही थी। मगर श्याम जानता था, आने वाले दिन कष्टप्रद होंगे। शायद उनकी विषमता उनके रास्ते का कांटा हो जाए क्योंकि वह नीलिमा को सुख सुविधा, खुशी नहीं दे सकता जिसकी वह आदी हो चुकी है। श्याम ने अपने दिल की बात मां को बताई। मां सुनकर सन्न रह गई और बरस पड़ी। क्योंकि दुनिया को उन्होंने बहुत पास से देखा समझा था। मां बेटे को समझाने लगी जिंदगी की सच्चाई बयां करने लगी और इस बात को यहीं समाप्त कर दो ऐसा सुझाव भी दिया। मगर दिल तो दिल यह किसके बस में है। एक दिन उसने अपनी सारी वास्तविकता नीलिमा के सामने रख दी और कहा कि हमें अच्छा दोस्त बनें रहने में ही ज्यादा भलाई है। क्योंकि प्रेम अपनी जगह और जिंदगी के ये कटु सत्य अपनी जगह है। नीलिमा कभी इन बातों को गहराई से नहीं लेती थी, लिहाजा वह बात को हंसकर टाल गयी। समय के साथ साथ उनका प्यार भी परवान चढ़ता जा रहा था। पढ़ाई समाप्त होने पर दोनों अलग अलग अपनी मंजिल की ओर बढ़ने लगे। लेकिन प्रेम का सिलसिला भी आगे बढ़ रहा था। इसी दरमियान अपनी पढ़ाई समाप्त करके श्याम प्रशासनिक सरकारी नौकरी की तैयारी करने लगा। लेकिन यह रास्ता भी इतना आसान नहीं था, लेकिन श्याम सकारात्मक सोच के साथ आगे बढ़ रहा था। एक दिन नीलिमा की जिद और अपने प्यार के हाथों मजबूर होकर वह नीलिमा के घर गया। अपने विवाह की बात करने, ऐसा उसने नीलिमा के कहने पर किया था। नीलिमा के पिता से जब मुलाकात हुई और जो बातें उनके बीच हुई उससे श्याम को आज की जिंदगी, अर्थव्यवस्था, भोग विलास की जिंदगी, पैसे के महत्व के साथ साथ उसकी हीनता का भी एहसास दिला दिया।उसे गहरा आघात लगा। एक तरफ प्रेम था तो दूसरी ओर उसके और नीलिमा के बीच की यह असमानता और इसी असमंजस के कारण उसने नीलिमा की जिंदगी से दूर जाने में ही अपनी भलाई समझी। इस वक्त वह बहुत ही बेबस और लाचार महसूस कर रहा था। उसके प्रेम में सामाजिक ढांचा बहुत बड़ी बाधा थी। जिसे वह चाहकर भी पार नहीं पा सकता था। वह सोचता था कि अगर पहले यह सब सोच लिया होता तो शायद आज ऐसी अवस्था नहीं होती। लेकिन उसका मन हार मानने वाला भी नहीं था। सारी हकीकत जानने के बाद भी वह पीछे मुड़कर देखना नहीं चाहता था। आगे बढ़कर कुछ कर गुजरने की तमन्ना थी, लेकिन क्या करता? नीलिमा से इस विषय पर बात की लेकिन कुछ हल नहीं निकला और अंत में उसने अपनी प्रेम की तिलांजलि दे दी। क्या करता,उसका दिल ऐसा करने पर आहत भी हुआ लेकिन परिस्थिति उसके साथ नहीं थी। वह जमाने के साथ लड़ नहीं सकता था। श्याम ने अपनी मां के साथ वह शहर ही छोड़ दिया और जीवन के साथ संघर्ष करने लगा। अंत में उसने अपने बलबूते एक सरकारी नौकरी ज्वाइन कर ली। उसकी प्रेम में असफलता केवल सामाजिक संरचना एवं विषमता के कारण हुई । पता नहीं इस देश से अमीरी गरीबी कब समाप्त होगी। यह सब सोच कर उसका मन खिन्न हो गया। जमाना बदल गया है। लेकिन लोगों की सोच आज भी नहीं बदली। बार बार उसके दिमाग में एक ही बात आती रहती है। आखिर ऐसी सोच और सामाजिक आर्थिक संरचना के कारण कितनों का प्रेम अधूरा ही रहेगा।

एक अनूठा आधुनिक प्रेम

✍ **सत्येंद्र कुमार शर्मा**
मुख्य अभियंता (एम एस ओ - खनन)
उत्पादन सहायक सेवाएं विभाग, दुलियाजान

वर्तमान युग कलयुग है। मानव ने विभिन्न तरह की तरक्की कर ली है और इससे अधिक तरक्की की तरफ अग्रसर है। तकनीकी के आधुनिक युग में जहां मनुष्य चांद और मंगल ग्रह पर अपने कदम रख चुका है, प्रेम का महत्व लगभग कम सा हो गया है। मनुष्य के सारे कार्य और प्रेम अपने परिवार में ही सिमट कर रह गये हैं। मेरे बच्चे, मेरा परिवार, मेरा मकान, मेरी आमदनी इत्यादि के पीछे मनुष्य अपने पड़ोसी एवं समाज की जिम्मेदारियों से विमुख सा हो गया है। इसी परिवेश की मैं एक अनूठी प्रेम कहानी प्रस्तुत कर रहा हूं, जो कि पिता-पुत्र, पुत्री या पत्नी ना होकर एक मानव का दूसरे मानव के प्रति निष्ठा एवं समर्पण की भावना को दर्शाता है।

एक बार मैं मुंबई से अपने पैतृक स्थान रायपुर आ रहा था। गर्मी के दिन थे परंतु आसमान में बादल भी छाये हुए थे। मैं मुंबई मेल ट्रेन पर रात 8:00 बजे बैठा। मेरा रिजर्वेशन ट्रेन के स्लीपर क्लास में था जो यात्रियों से ठसा-ठस भरी हुई थी। बहुत से व्यक्ति जिनके पास जनरल टिकट था वह भी स्लिपर कंपार्टमेंट में यात्रा कर रहे थे। तीन व्यक्तियों के बैठने के स्थान पर छह लोग बैठे हुए थे। खैर जैसे-तैसे अपने आप को अपनी सीट पर धंसा कर बैठा और ट्रेन निकल पड़ी।

कुछ स्टेशन गुजरने के पश्चात टिकट कलेक्टर ने अपना काम शुरू किया। जिनके पास टिकट नहीं थे उन्हें टिकट जारी करना शुरू किया। पेनाल्टी के साथ टिकट बनाने पर लोग हतोत्साहित हो रहे थे। हिल हवाला दे रहे थे, लेकिन टिकट कलेक्टर ने किसी की भी ना सुनी। फिर कुछ समय पश्चात टिकट कलेक्टर ने मेरी ओर इशारा करके टिकट मांगा। मैंने उन्हें बताया कि आप मेरी टिकट जांच कर चुके हैं। टिकट कलेक्टर जोर से बोला- मैं आप से नहीं, उस लड़की से टिकट मांग रहा हूं जो आपकी सीट के नीचे सामानों के बीच छुपी हुई है।

तब मेरा ध्यान एक दुबली पतली लड़की की तरफ गया जो एक फटा हुआ फ्रॉक पहनी हुई थी। टिकट कलेक्टर के जोर से चिल्लाने से वह बाहर निकली और हाथ जोड़कर खड़ी हो गई। टिकट ना मिलने पर टिकट कलेक्टर ने उसका हाथ पकड़ कर खींचा और धमकाने लगा। उसके कुछ ना बोलने पर टिकट कलेक्टर ने निश्चय किया और बोला- अगले स्टेशन पर तुझे उतार कर पुलिस के हवाले कर देंगे।

आस पड़ोस के सब लोग अपने आप में मशगूल थे। किसी ने इस लड़की की तरफ ध्यान भी नहीं दिया। लड़की सकपकाई सी खड़ी रही। मैं जो इतने समय से यह सब देख रहा था, मुझे उस लड़की पर दया आ गई। मैं टिकट कलेक्टर से बोला - इस लड़की की टिकट का पैसा मैं दे दूंगा, आप इसे मत उतारिए। रात का समय है। लड़की है पता नहीं उसके साथ क्या हो? टिकट कलेक्टर आश्चर्यचकित होकर बोला - ''मेरा इन जैसों से रोज ही सामना होता है। आप इसे 10 रुपये दे देंगे तो यह खुश हो जाएगी। फिर भी मेरा मन नहीं माना और मैंने उससे पूछा- तुम कहां जाओगी? उसने कुछ नहीं कहा। मेरे लाख पूछने पर भी जब उसने कुछ नहीं कहा तो मैं टिकट कलेक्टर से बोला इसका टिकट अगले स्टेशन तक बना दीजिए। जहां मन होगा वहीं उतर जाएगी। टिकट कलेक्टर अनमने मन से टिकट बना कर चला गया।

लड़की चुपचाप नीचे बैठकर, गुमसुम सी ताकती रही। जब मैंने उसे खाने के लिए दिया तो उसने खाना लेकर अपने पास रख लिया। सुबह जब मैं रायपुर स्टेशन उतरने लगा तो वह भी मेरे पीछे पीछे आने लगी। मैंने उससे पीछा छुड़ाने की कोशिश की लेकिन वह मेरे साथ ही खड़ी रही। बहुत पूछने पर उसने बताया कि वह एक सौतेली मां की सताई हुई लड़की है, जिसके माता पिता एक दुर्घटना में मारे गए।

मैंने उसे अपनी गाड़ी में बिठा लिया और अपने एक दोस्त हरकेश के घर गया जो कि एक अनाथालय की भी देखभाल करता था। मैंने उसे पूरी राम कहानी बताकर उसे अनाथ आश्रम में जगह देने के लिए कहा। अनाथ आश्रम में उसका पूरा खर्चा उठाने का दावा करने पर हरकेश ने उस लड़की को अनाथालय में रख लिया, जहां उसकी हम उम्र की 8-10 लड़कियां थी।

कुछ ही दिनों में उसने सबका दिल जीत लिया। खाना बनाने से लेकर अनाथ आश्रम का सारा कार्य करते हुए भी पढ़ाई करती थी। मैंने हरकेश से कहकर उसे एक विद्यालय में दाखिल करा दिया। वह बहुत ईमानदारी से मेहनत करते हुए आगे बढ़ती गई।

इस तरह वह धीरे धीरे दसवीं कक्षा में आ गई और उसने बोर्ड परीक्षा में 90% अंक लाए। इस खुशी के मौके पर जब मैं उससे मिलने गया तो उसने मुझे प्रणाम करके आशीर्वाद लिया। उसको इतना अच्छा पढ़ते देख कर मैंने उसकी कॉलेज की पढ़ाई का भी खर्चा उठाने का निश्चय किया, लेकिन उसने मना कर दिया। उसने डिप्लोमा कोर्स, कंप्यूटर साइंस से करने का निश्चय किया जिसमें जल्दी ही नौकरी मिलने की उम्मीद थी।

खैर, इसी तरह बहुत साल गुजर गए और उसकी नौकरी कंप्यूटर उद्यान में लग गयी। नौकरी करते करते विदेश भी घूम आई और

मुंबई में रहने लगी। इसी बीच मेरा भी उस से नाता लगभग कम सा हो गया। जीवन में आगे बढ़ते हुए उसने मेरी थोड़ी सी सहायता लेकर कामयाबी का हर मुकाम खुद ही हासिल किया।

कुछ सालों पश्चात मैं अपने पूरे परिवार के साथ मुंबई घूमने गया। वहां बहुत ही अच्छे होटल में रहकर चार-पांच दिन हमने मुंबई घुमा। अंत में मैं जब वापसी के समय बिल देने गया तो उसने बताया कि आपका बिल हो गया है साथ ही दस दिनों का यूरोप टूर का पैकेज भी आपको मिला है।

मैं आश्चर्यचकित रह गया था। मेरे बच्चे खुशी से झूम उठे। मेरे पूछने पर रिसेप्शन पर खड़े व्यक्ति ने बताया कि एक महिला के कहने पर हम लोगों ने किया है। फिर उसने उस महिला की तरफ इशारा किया जो एक नौजवान लड़के के साथ मुस्कुरा रही थी।

मेरे खुशी का ठिकाना नहीं रहा। यह वही लड़की साक्षी थी जिसकी मैंने थोड़ी सी मदद की थी। उसने आते ही मेरे पांव छुए और साथ खड़े लड़के को भी पाँव छूने के लिए कहा। साक्षी ने बताया की यह मेरा जीवन साथी है और मैंने आपके हाथ से कन्यादान का निश्चय लिया है। मेरे बहुत पूछने पर कि तुम्हारी नई नौकरी है, जीवन शुरू कर रही हो। पैसा बचाओ और जीवन में आगे बढ़ो। साक्षी ने कहा- मेरे जीवन में आपका जो स्थान है वह किसी भगवान से कम नहीं है। मैं आपका उपकार जीवन पर्यंत नहीं उतार सकती।

आपने जाति-पांति, ऊंच-नीच, गरीब अमीर की भावना से उस सहमी हुई लड़की को इस लायक बनाया। यदि आपने दया और प्रेम के विशाल सागर से मुझे ना उबारा होता तो शायद मैं शोषण का शिकार होती या शायद आत्महत्या ही कर लेती। आधुनिकता के इस युग में आपने जो प्रेम प्रकट किया है वह अतुलनीय है।यह मेरी तरफ से आपके उस टिकट के जवाब में तुच्छ भेंट है। आप मेरे लिए परमेश्वर के ही समान और मेरे माता-पिता भी, यह कह कर मेरे पैरों पर लिपट कर रोने लगी।

मेरे भी आंखों से अश्रु धार बहने लगी और ऐसा महसूस हुआ ईश्वर अपने प्रकट रूप में अथाह प्रेम से हम दोनों को आशीर्वाद दे रहा है।

व्हाट्सएप प्रेम

✍ **शिव कुमार गुप्ता**
अधीक्षण अभियंता (गैस प्रबंधन सेवाएं)
एलपीजी विभाग, दुलियाजान

रुचि दौड़ते दौड़ते थक चुकी थी। उसके कपड़े प्राय: फट चुके थे। वह रुकने को सोचती पर तुरंत सिहर उठती। अंधेरे में उसे कुछ सूझ नहीं रहा था। वह किस दिशा में तथा किधर दौड़े जा रही थी उसे कुछ पता ही नहीं चल रहा था। कुछ देर बाद उसे एक मध्यम रोशनी दिखाई पड़ी। रोशनी देखते ही उसे कुछ हिम्मत हुई। कुछ देर दौड़ने के बाद वह रास्ते के किनारे पहुंची। वहां पर उसे गाड़ी की रोशनी में रास्ते किनारे लगे मील का पत्थर दिखाई पड़ा, जिससे वह यह समझ गई कि वह दिल्ली और उत्तर प्रदेश की सीमा पर है। इतने में ही वह बेहोश हो चुकी थी। उसे जब होश आया तो वह अपने को एक अस्पताल के बिस्तर पर पाई। वहीं पर उसके सामने एक डॉक्टर, एक नर्स, एक महिला सिपाही तथा इंस्पेक्टर शालू दिखी। इंस्पेक्टर शालू ने ही अपना परिचय कराया तथा बताया कि उसे उन लोगों ने रास्ते के किनारे बेहोशी की अवस्था में पाया था और उसे अस्पताल ले आए। इंस्पेक्टर शालू ने रुचि से उसकी इस अवस्था के बारे में पूछा वह क्यों इस तरह भागी? तथा उसके इस तरह भागने के पीछे क्या कारण था? रुचि ने कहा की वह अपने घर से शाम को बाजार के लिए निकली थी। रास्ते में कुछ गुंडो ने उसका पीछा किया। वह भागते भागते किधर गई उसको पता ही नहीं चला। इतना कहते ही वह फिर से नींद में चली गई। इंस्पेक्टर ने महिला पुलिस को कहा कि तुम यहीं पर रह कर इसकी निगरानी करना। नींद टूटने पर फिर मुझे खबर देना। रुचि नींद में ही उसकी पिछली सारी घटनाओं का स्मरण करने लगी।

रुचि के परिवार में उसके पिता रमेश चौधरी माताजी शिला देवी, भाई नवीन तथा उसकी छोटी बहन मीना थी। रुचि एमबीए की पढ़ाई कर एक प्राइवेट कंपनी में कार्यरत थी। एमबीए की पढ़ाई के समय ही उसकी दोस्ती नरेंद्र से हुई। फिर कुछ दिनों बाद ही नरेंद्र ने वह स्कूल छोड़कर दूसरे स्कूल में दाखिला ले लिया। इसके बाद नरेंद्र तथा रुचि की बातचीत व्हाट्सएप तथा फोन के जरिए ही होती रहती थी। धीरे-धीरे उन दोनों में प्यार की बातें होने लगी और अंत में उन दोनों ने शादी करने का विचार किया। रुचि ने अपने घर वालों को बता दिया कि वह और नरेंद्र आपस में प्यार करते हैं तथा शादी करना चाहते हैं। रुचि के मां बाप तैयार नहीं हुए। अंतत: रुचि तथा नरेंद्र ने घर से भाग कर शादी कर ली और दोनों ने एक ही कंपनी में नौकरी करने लगे। कुछ दिन बाद रुचि के व्हाट्सएप पर एक मैसेज आया जिसे देख कर वह खुश हो गई। मैसेज उसकी बहन के द्वारा भेजा गया था। जिसमें उसकी बहन ने लिखा था कि उसकी शादी ठीक हो रही है तथा उसके मां पिताजी उसे तथा नरेंद्र को माफ कर दिए हैं और उन्हें घर बुला रहे हैं। रुचि ने नरेंद्र से कहा कि मुझे और तुम्हें मां पिताजी ने माफ कर दिया है और घर पर बुला रहे हैं। लेकिन नरेंद्र को किसी काम से नेपाल जाना था।

इसलिए नरेंद्र ने कहा कि तुम चली जाओ और मैं नेपाल से वापस आकर सीधा घर पर ही आ जाऊंगा। रुचि घर आ गई। सभी लोगों ने उसका स्वागत बड़े जोर-शोर से किया। मां पिताजी नरेंद्र के ना आने पर सवाल करने लगे। रुचि ने कहा वह नेपाल गया है और वापस आते ही आएगा।

दूसरे दिन कृपाशंकर चौबे जोकि पंडित थे, वह रुचि के घर आए। वह मीना के होने वाली ससुराल की तरफ से आए थे। आते ही उन्होंने मीना तथा उसके होने वाले पति की कुंडली का मिलान करने लगे। इतने में रुचि उनके लिए कुछ जलपान लेकर आई। उसे देखते ही पंडित जी ने रुचि के बारे में उनके पिताजी से पूछा। उसके पिता ने बताया कि यह मेरी बड़ी बेटी रुचि है। इसकी शादी नारायण चौधरी के बेटे से हुई है। इतने में ही पंडित जी यह सुनते ही क्रोधित हो गए। उन्होंने कहा कि आपने अपनी बेटी की शादी एक ही गोत्र में कर दी है। इससे तो आपकी छोटी बेटी की शादी में बाधा उत्पन्न होगी। इतना कह कर पंडित जी उठ कर चले गए। अगले दिन पंडित फिर आए और रमेश चौधरी से कहने लगे की आप अपनी बड़ी बेटी का तलाक करवा दीजिए तभी छोटी बेटी की शादी संभव है और इतना कह कर पंडित जी चले गए। उसी रात रुचि अपने कमरे में अचानक रात को उठी और बहन को अपने बिस्तर पर ना पाकर धीरे-धीरे खिड़की पर गई। वहां से उसने देखा की उसके पिता मां तथा बहन मीना और भाई नवीन आपस में धीरे-धीरे बातें कर रहे थे। उनकी बात चीत सुनकर उसने अनुमान लगाया कि वह लोग रुचि की हत्या करना चाहते हैं। उसकी कल्पना से ही रुचि कांप उठी। वह अपने बिस्तर पर दौड़ी तथा अपना मोबाइल खोजने लगी, पर गायब था। यह सब कुछ सोची समझी रणनीति थी। वह जैसे तैसे घर से भागी। यहीं पर उसकी नींद खुल जाती है। महिला सिपाही उसके जागने पर इंस्पेक्टर को खबर देती है। इंस्पेक्टर शालू एक बार फिर उससे निडर भाव से उसके भागने का कारण पूछती है लेकिन वह नहीं बताती है।

वह अस्पताल से ही अपने पति को सारी जानकारी देती है। नरेंद्र अपने पिता को खबर देता है तथा रुचि के घर जाकर उसके मां पिताजी को खबर देने के लिए भेजता है। नरेंद्र के पिता को देखते ही रुचि के पिता के होश उड़ जाते हैं। वह सोचते हैं कि वह रुचि के बारे में पूछेंगे तो मैं क्या जवाब दूंगा। लेकिन नरेंद्र के पिताजी कहते हैं की रुचि ठीक-ठाक है। आप लोग पुरानी रूढ़िवादी सोच लेकर अपनी ही बेटी की हत्या इसलिए करना चाह रहे थे, कि दोनों एक ही गोत्र के हैं। यह सब पुरानी बातें हैं।

नरेंद्र के पिता जी के जाने के बाद रुचि के घर वाले सोचने लगे कि अपने ही घर की एक बेटी का घर बसाने के लिए एक बेटी की हत्या करनें की सोच रहे थे। भले ही एक बेटी कुंवारी रहेगी लेकिन बसी बसाई बड़ी बेटी का घर नहीं उजाड़ेंगे। अगले ही दिन वे लोग रुचि के घर जाकर उससे अपने किये के लिए माफी मांगकर, रुचि को लेकर घर आ गए।

सोच

✍ **पिंकी कुमारी प्रसाद**
क्रय अनुभाग, कोलकाता कार्यालय

हमारी सोच ही, हमारी दुश्मन बनी हुई।
काश ये सोच नहीं होती,
हम सब एक होते।
ऊँच-नीच की बातें ना होती
सभी के चेहरे पर खामोशी ना होती।
इतने लोगों की भीड़ में, हम अकेले ना होते।
जिंदगी की ये बड़ी चुनौती, हम झेल भी लेते।
अगर विधाता ने कहा होता, हाँ सब को मैंने नहीं बनाया।
हमारी सोच ही, हमारी दुश्मन बनी हुई।
हर इंसान एक है, तभी तो उनकी सोच भी
वही हँसना, वही रोना
फिर भी है, ये दूरी दरमियाँ।
पर जिंदगी की कशमकश में, हम फँसे हुए हैं,
हजारों की भीड़ में तन्हा पड़े हुए हैं।
दुनियाँ की खूबसूरती छोड़कर, बेकार में जी रहे हैं।
हर वक्त यह सोचकर, जीवन का मजा खो रहे हैं।
शिकवा किससे, शिकायत किससे,
जिंदगी को बस जिये जा रहे हैं।
अगर ये समझ जायें, हर कोई कि जिंदगी को
जी ले भरपूर, चाहे सुख हो या दु:ख।
तभी तो हर दिल में खुशियों के फूल खिल जाये,
हर चेहरे पर मुस्कान छा जाये।
हमारी सोच ही, हमारी दुश्मन बनी हुई है
काश ये सोच नहीं होती तो
हम सब एक होते।

हिंदी के उत्थान के लिए मिलकर काम करें

✍ **रमेश अग्रवाल**
सहायक (II)
भूविज्ञान और तैलाशय विभाग, दुलियाजान

आज स्कूलों में हिंदी का स्तर दिन प्रतिदिन गिरता जा रहा है। देश भर के पब्लिक स्कूलों में हिंदी का कोई महत्व नहीं है, ऐसे स्कूलों का हाल यह है कि हिंदी के साथ फ्रेंच आदि विदेशी भाषाओं को साथ रखा है।

अब आप सोचिए हिंदी का भविष्य कहां जा रहा है। आने वाली पीढ़ी हिंदी का 'ह' भी नहीं जानेगी और विदेशी भाषाओं को ही बोलेगी। अभी तो हम अंग्रेजी की गुलामी से नहीं उबर पा रहे हैं। भविष्य में अन्य भाषाएं भी हमारे लिए संकट लाने वाली है।

हमारी संस्कृत, संस्कार व धरोहर का क्या होगा? यह विश्व हिंदी सम्मेलन आदि भी दिखावा मात्र रह जाएगा। यहां आने वाले हिंदी विद्वानों का नहीं व्यक्ति विशेष का ही सम्मान होता है, मौका मिलते ही वे विदेशी भाषा का प्रयोग बड़े गर्व से करते हैं।

मुट्ठी भर लोग ही हिंदी की स्थिति के लिए चिंतित रहते हैं। हिंदी की स्थिति के लिए हमारी सरकार का शिक्षा विभाग भी जिम्मेदार है। जब तक पूरे देश में व्यापक स्तर पर हिंदी अनिवार्य नहीं होगी,तब तक हिंदी को सम्मानजनक स्थिति में लाना मुश्किल ही है। शिक्षा विभाग अभी सुप्तावस्था में है। जब तक जागेगा बहुत देर हो चुकी होगी। समय रहते सरकार को चेतना होगा अन्यथा अब पछताए होत क्या जब चिड़िया चुग गई खेत वाली बात ही सही साबित होगी। हम सब हिंदी प्रेमी कितना भी हाथ पैर मारे पर सरकार के सहयोग के बिना हिंदी को सम्मानित स्थिति में लाना असंभव है। हम सभी मिलकर हिन्दी के उत्थान के लिए काम करें और सरकार पूरा सहयोग दें तथा ऐसी नीति बनाएं की हिंदी का सर ऊंचा हो। तभी सही मायने में हिन्दी का विकास संभव है।

क्या सब कुछ बदल रहा है?

✍ **अमित कुमार प्रसाद**
प्रबंधक (संविदा)
संविदा विभाग, दुलियाजान

यह एक प्रश्न है, या हकीकत, अनेकों प्रश्नों को उत्पन्न करती है। वह प्रश्न है यह बदलाव क्यों हो रहा है, कौन कर रहा है, क्या सच में बदलाव हो रहा है या हम भ्रमित हैं इत्यादि। कालचक्र ने समय को विभिन्न युगों में विभाजित किया। सतयुग, द्वापर युग, त्रेता युग और कलयुग। इन विभाजन का वर्णन हमें महर्षि और विद्वानों द्वारा प्राप्त हुए हैं। सतयुग वह युग है जहां सत्य की पूजा होती है। प्रेम, सत्य, अच्छाई, संस्कार, अर्चना, कर्म ही ब्रह्मांड में शक्ति का स्रोत होते हैं। तथा छल, कपट, अहंकार, पाप, माया, राक्षस वृत्ति आदि कुछ शक्तियों का नाश होता है। जैसे कालचक्र सतयुग छोड़ द्वापर युग में प्रवेश करता है वैसे ही बुराई का जीवन समय बढ़ता है। फिर त्रेतायुग तथा कलयुग में राक्षसी गुण अपने विजय की चरम सीमा पर पहुंच जाते हैं। काम, क्रोध, ईर्ष्या, अहंकार, मोह, माया ही मनुष्य में पर्याप्त होती है। यह सब जानकर मुझे आश्चर्य नहीं होता क्योंकि यह तो महर्षि और विद्वानों द्वारा स्थापित ज्ञान है विभिन्न युगों के विषय में। परंतु आश्चर्य तब हो जाता है जब मैं धरती, वायु, अग्नि, जल, पेड़, पौधे तथा विभिन्न प्राकृतिक संपदाओं की तरफ देखता हूं। युग बदलते रहे पर अग्नि अपना ताप, जल अपनी निर्मलता, वायु अपनी शीतलता, धरती ने अपना ममत्वता कभी नहीं बदला।

आखिर क्यों नहीं बदलते इनके भी गुण। युगों से परिभाषित मानव गुण की तरह। बहुत विचार करके भी इनके ना बदलने का रहस्य नहीं जान पाता, तो सोचता हूं की मान ही लू कि सब कुछ बदल रहा है। तभी मेरा ध्यान 'मां' शब्द की तरफ जाता है। सतयुग में भी मां संतान को नौ महीने गर्भ में पालन करती है। आज भी अपने बच्चों को खुशियों में अपना जीवन देखती है। पत्नी, बहन, बहु का धर्म निभाते हुए भी अपने बच्चों को उन्नति के लिए अग्रसर रहती है इत्यादि। मां पृथ्वी से लुप्त हो सकती है पर हृदय से नहीं। मां की ममता का कवच हमेशा संतान के लिए सतयुग में भी था और कलयुग में भी है। फिर भी क्या सब कुछ बदल रहा है? उत्तर देकर सहायता करें ।।

दीपावली

✍ **अंजना मोरल**
वरिष्ठ निजी सचिव
पाइपलाइन मुख्यालय, गुवाहाटी

दीपावली एक ऐसा त्यौहार है जिसे हम सभी प्रत्येक साल बड़े उल्लास एवं उमंग के साथ मनाते हैं। यह दीपों का उत्सव- जहां यह महत्व दर्शाया गया है की- लोगों के मन के अंधेरे को दूर कर प्रकाश की ओर ले जाने तक का सफर। यह उत्सव विशेषतया पश्चिम बंगाल, उड़ीसा, बिहार, असम, नॉर्थ दिल्ली- लगभग भारत के हर राज्य में मनाया जाता है। सभी लोग दीपावली में घर की सफाई बड़े ही सुंदर तरीके से सजावट करते हैं। यह उत्सव अक्टूबर से नवंबर के बीच मनाया जाता है। हिंदू धर्म के अनुसार यह माना जाता है कि देवी लक्ष्मी की पूजा तीन स्वरूपों में की जाती है। दीपावली में निम्न पांच प्रकार विशेष होते हैं-

1) धनतेरस - धनतेरस के दिन से ही मानो दीपावली की शुभ शुरुआत होती। यह देखा गया है कि इस दिन लोग सोने या चांदी की चीजें खरीदते हैं। क्योंकि प्राचीन काल से चलता आ रहा है और ऐसा करने से देवी लक्ष्मी घर में स्थान लेती हैं।

2) छोटी दीपावली- इस दिन मां काली का पूजन होता है। यह देवी लक्ष्मी का ही एक अन्य रूप जिससे हम सभी वाकिफ है। सभी लोग अपने घरों को पूरी तरह से साफ कर शाम को दीया और पटाखे जलाते हैं।

3) प्रधान दिवाली - यह इस महीने का एकदम काला एवं अंधकारमय दिन माना जाता है। चाहे वह छोटे हो या बड़े, सभी इस दिन बड़े ही जोरो शोरों से पटाखे और दीयें जलाकर और मिठाई का स्वाद लेकर बहुत ही आनंद करते हैं। दीये का जलना और आसमान में पटाखें बड़ा ही सुन्दर दृश्य निर्मित करते हैं।

4) गोवर्धन पूजा - यह पूजा दीपावली के ठीक बाद अगले ही दिन की जाती है। यह विशेषकर पति और पत्नी आपसी प्रेम और साथ सदैव बना रहे, इसलिए मनाया जाता है।

5) भाई दूज - यह कार्तिक महीने में मनाई जाता है। इस दिन बहनें अपने भाइयों की पूजा करती है। यह लगभग रक्षाबंधन के ही तरह ही मनाया जाता है। यह कई जगहों में विश्वकर्मा पूजा के स्वरूप में भी मनाया जाता है।

दीपावली में हम सभी देवी लक्ष्मी जी के तीन स्वरूपों की पूजा करते हैं - मां लक्ष्मी, मां काली और मां सरस्वती जो हमें आशीर्वाद देती है। जीवन में रोशनी प्रदान करती है। हम जो दीया जलाते हैं, वह दर्शाता हैं कि लोगों के जीवन में अनेकों समस्याएं होती है और उनसे ही निकलने के लिए मां देवी की पूजा करते हैं।

अत: दीपावली का बहुत ही ज्यादा महत्व हर दिन हमारे जीवन में देखने को मिलता है।

किसी का बुरा मत सोचिए

✍ **रमेश अग्रवाल**
सहायक (II)
भूविज्ञान और तैलाशय विभाग, दुलियाजान

किसी का बुरा सोचने में, उसका अनिष्ट चाहने में कोई लाभ नहीं होता अपितु हानी ही होती है।

हम जिसके प्रति बुरी भावना रखते हैं उसको कुछ पता ही नहीं होता है कि कोई उसके बारे में बुरे विचार रखता है। वह तो बहुत सुखमय जीवन व्यतीत करता है। जबकि ईर्ष्या करने वाले सदैव दुखी रहते हैं। छोटी-छोटी बात पर क्रोधित होते हैं। वह खुश रहना भूल जाते हैं। भगवान भी ऐसे लोगों के विरोधी होते हैं।

कहावत भी है जो दूसरों के लिए गड्ढा खोदता है, वह पहले स्वयं उसमें गिरता है।

हम सब जानते हैं की दूसरों के प्रति बुरे विचार रखने पर, मन ही मन उनको बुरा भला कहने पर, अपशब्द बोलने पर स्वयं की ही महान क्षति होती है। हमारी आत्मा दूषित होती है। हम बेचैन रहते हैं। हम अशांत हो कर इधर उधर भटकते हैं। भूख प्यास कम हो जाती है। तो हम दूसरों के प्रति कुविचार क्यों रखें? किसी से द्वेष क्यों करें? अगर हम सब यह सब जानते हुए भी किसी का अनिष्ट चाहते हैं,तो हम मूर्खता पूर्ण कार्य कर रहे हैं। अपने पैरों पर स्वयं कुल्हाड़ी मार रहे हैं। हमें ईर्ष्या व द्वेष का भाव छोड़कर सभी के प्रति प्रेमभाव रखना चाहिए। स्वार्थ भाव त्याग कर परमार्थ भाव रखना चाहिए, इसी में सबका कल्याण है।

परिवर्तन से डरना और संघर्ष से कतराना मनुष्य की सबसे बड़ी कायरता है। जो वक्त सिखाता है वह कोई नहीं सिखा सकता। कभी कोई आपके बारे में टीका-टिप्पणी करें तो घबराना नहीं चाहिए। बस यह बात याद रखना की हर खेल में दर्शक ही शोर मचाते हैं खिलाड़ी नहीं। इसी भाव से अपने सारे कर्म करते रहना चाहिए।

नाश्ता : दिन का ईंधन

(आपका दिन शुरू करने का एक अच्छा तरीका)

निधि जोशी

पति - रितेश मोहन जोशी, उप महाप्रबंधक (भूभौतिकी)

भूभौतिकी विभाग, दुलियाजान

कई लोग नाश्ता नहीं करते हैं। उन्हें ऐसा लगता है सुबह का नाश्ता छोड़ने से अतिरिक्त कैलोरी बचाई जा सकती है। बहुत से लोग समय के आभाव के कारण दिन का प्रथम भोजन छोड़ते हैं क्योंकि उन्हें कार्यालय या कार्य पर जाने की जल्दी है। लेकिन ऐसा करना किसी मूर्खता से कम नहीं है। लोगों में भ्रान्ति है कि यह एक आसान भोजन है, ज्यादा महत्त्वपूर्ण नहीं है, जबकि वास्तविकता इस भ्रान्ति से परे है। दिन का सबसे महत्वपूर्ण भोजन, निस्संदेह, नाश्ता है। नाश्ता आपके दिन का सबसे महत्वपूर्ण भोजन है। आइये जानते हैं क्यों ?

रात के विश्राम के बाद (अमूमन सात-आठ घंटे) का पहला भोजन है नाश्ता। शरीर पूरी रात उपवास कर चुका है और इसका रक्त शर्करा का स्तर कम है। नाश्ता रात भर के उपवास के बाद शरीर और मस्तिष्क को ईंधन प्रदान करता है। यहीं से अंग्रेजी का यह नाम निकला, ब्रेक फास्ट (व्रत या उपवास तोड़ना)। नाश्ते के बिना आपकी कोशिश बिना किसी ईंधन के वाहन को शुरू करने की जैसी है।

इसलिए जरुरी है एक संतुलित नाश्ता जो आपकी शारीरिक प्रणाली शुरू करने में सक्षम हो। एक संतुलित नाश्ता हमें अधिक जागृत और ऊर्जावान महसूस करने में मदद करता है। नाश्ता ना करने का मतलब है दिन के लिए एक सुस्त शुरुआत। नाश्ता आदर्श रूप में जागने के दो घंटे के भीतर खाया जाना चाहिए। एक स्वस्थ नाश्ते को आपके दिन भर की अनिवार्य कैलोरी का 20 % -30% प्रदान करने लायक होना चाहिए।

आपको दोपहर के भोजन से पहले आपकी पाचक प्रणाली में खाना चाहिए। यदि आप पहली चीज़ नहीं खाते हैं, तो आप बाद में आपको इतनी भूख लगी हो सकती है कि आप उच्च वसा वाले, उच्च-चीनी खाद्य पदार्थों पर टूट पड़ते हैं। इसलिए नहीं की आपको आपकी इच्छाशक्ति पे संयम नहीं ? बल्कि इसलिए क्योंकि मनोवैज्ञानिक तौर पर यह आवश्यक पोषक तत्वों से वंचित होने के लिए शरीर की प्रतिक्रिया है।

हमें ऊर्जा प्रदान करने के अलावा, नाश्ता कैल्शियम, लौह और बी विटामिन के साथ-साथ प्रोटीन और रेशे (फाइबर) जैसे महत्वपूर्ण पोषक तत्वों का भी अच्छा स्रोत हैं। शरीर को इन आवश्यक पोषक तत्वों और स्रोतों की आवश्यकता होती है। यदि इन्हीं पोषक तत्वों को नाश्ते में सम्मिलित किया जाता है, तो दिन में उनकी आवश्यकता की संभावना कम होती है। फल और सब्जियां विटामिन और खनिजों के अच्छे स्रोत हैं इसलिए नाश्ते में अपने दैनिक आवश्यकता का पांचवा हिस्सा शामिल करने का प्रयास करें।

नाश्ते के लाभ:

नाश्ता आपके वजन (भार) को संयमित रखने के लिए भी अच्छा है। शोध से पता चलता है कि नाश्ते करने वाले लोग, नाश्ता ना करने वालो लोगों की तुलना में उनके वजन को आदर्श सीमा के भीतर रखने में ज्यादा सक्षम होते हैं। इसके अलावा नाश्ते से दीर्घकालिक स्वास्थ्य लाभ होता है। यह मोटापे, उच्च रक्तचाप, हृदय रोग और मधुमेह जैसी समस्याओं को कम कर सकता है।

नाश्ता शरीर में ग्लूकोज के स्तर को पुर्नस्थापित करता है जो कि मस्तिष्क के कार्य करने के लिए एक आवश्यक कार्बोहाइड्रेट है। कई अध्ययनों से पता चला है कि कैसे नाश्ता खाने से स्मृति और एकाग्रता के स्तर में सुधार हो सकता है क्योंकि यह हमारी मनोदशा को बेहतर बनाता है और मानसिक तनाव को निम्न स्तर पे रखकर हमारे चित्त को प्रसन्न रख सकता है। नाश्ते के तार बच्चों में केंद्रित ध्यान अध्ययन, सकारात्मक व्यवहार एवं बेहतर परीक्षा परिणाम से भी जुड़े हुए हैं।

कैसा हो आपका नाश्ता ?

नाश्ते के लिए, किसी भी अन्य भोजन के साथ, चीनी को कम करने और इससे बचने के उद्देश्य से भोजन की आपकी पसंद महत्वपूर्ण है। एक आदर्श नाश्ते में उच्च रेशे वाले अनाज, दूध, ताजे फल का रस, अंडा आदि शामिल है। चाय या कॉफी नींबू या कम मलाई वाले दूध के साथ परोसी जा सकती है, यह एक पौष्टिक लेकिन कम कैलोरी वाला नाश्ता है, खासकर उनके लिए जो कैलोरी के प्रति सचेत है।

नाश्ते के लिए मूल मंत्र है, प्रोटीन के साथ कार्बोहाइड्रेट की संधि। कार्बोहाइड्रेट आपके शरीर को ऊर्जा, आपके मस्तिष्क के लिए आवश्यक ईंधन एवं प्रोटीन आपके शरीर में शक्ति समन्वय बनाए रखने और अगले भोजन तक भरा पूरा महसूस करने में मदद करता है।

कार्बोहाइड्रेट: पूरे अनाज की रोटी या ब्रेड, पिसे हुए जौ(रोल्ड ओट्स), मूसली, डोसा, उत्तपम, इडली।

अच्छा वसा (गुड फैट): कम वसा वाले दूध, दही, या पनीर, बादाम, पिश्ता, अखरोट

विटामिन: ताजी फल या ताजी सब्जियां

प्रोटीन: दाल, चना या नट्स, बेसन चीला, मूंग दाल चीला, अंकुरित अनाज

हम अपने दैनिक जीवन में अन्य कामों को समायोजित करने में इतने व्यस्त हैं कि हम सबसे महत्वपूर्ण बात भूल जाते हैं - हमारा स्वास्थ्य।

आपको कभी भी नाश्ता क्यों नहीं छोड़ना चाहिए। चूंकि अधिकांश लोगों के लिए गतिविधि का स्तर, दिन में अधिकतम होता है, इसलिए जो भी आप नाश्ते में ग्रहण करते हैं वह दिन के भोजन तक अच्छी तरह पच जाता है। इसीलिए, वो पुरानी कहावत 'नाश्ता, एक राजा की तरह खाएं, दोपहर का भोजन एक राजकुमार की तरह और रात्रि का भोजन एक गरीब की तरह' आज भी सच है।

आहार विशेषज्ञ और परामर्श पोषण विशेषज्ञ, पी. जी.एफ. एन.(अमेरीका); पी. जी. डी. पी. एच. एन.; बी. एस. सी. एवं मेटाबोलिक कोच

11वां विश्व हिंदी सम्मेलन : मेरी नजर में

✍ डॉ. रमणजी झा
उप महाप्रबंधक (राजभाषा)
निगमित कार्यालय, नोएडा

वर्ष 1975 में नागपुर में प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन के आयोजन के साथ आरंभ हुई हिंदी की विश्व-यात्रा आज उस मोड़ पर पहुँच गई है, जहाँ से सही मायनों में हिंदी अपनी महत्ता का दावा कर सकती है। भारत के आर्थिक विकास और उभरती हुई वैश्विक ताकत के रूप में उसकी पहचान के कारण विश्व समुदाय में हिंदी का महत्व निश्चित रूप से बढ़ा है। इस बढ़ते महत्व और हिंदी वैश्विक स्वरूप के कारण समारोह में पूरे विश्व के हिंदी-प्रेमी 18-20 अगस्त, 2018 तक मॉरीशस में एकत्रित हुए थे। विश्व हिंदी सम्मेलन का यह 11वाँ संस्करण भारतीय संस्कृति पर केंद्रित था; हिंदी उसी संस्कृति का अभिन्न अंग है और उसके संवहन की प्रमुख वाहिका भी है। यह सम्मेलन भारतीय प्रवासी समुदाय को भाषा वैज्ञानिक दृष्टि से परिभाषित अपनी अस्मिता और भाषा के प्रति आत्मीयता ज्ञापित करने का अवसर प्रदान किया। विश्व के कोने-कोने से आनेवाले हिंदी विद्वानों ने सनातन भारतीय संस्कृति तथा उसकी महत्ता पर शोधपूर्ण आलेख प्रस्तुत किये। साथ ही, वे हिंदी के विकास को बढ़ावा देने के लिए किन नीतियों को अपनाया जाए, पर समोचित विचार विमर्श किये। यह सर्वविदित है कि संस्कृत हिंदी की जननी है। शताब्दियों से यह अनेक भाषाओं को स्वयं में समाती रही है। यह खुलापन हिंदी को एक समृद्ध एवं संयोजित भाषा के रूप में उभरने में सहायक बना। भारतीय कवियों, संतों एवं मनीषियों ने हिंदी के संवर्धन में योगदान दिया है। विभिन्न देशों के अन्य रचनाकारों ने हिंदी साहित्य की प्रभा बढ़ाई है और उसका वैश्विक विस्तार निश्चित किया है। सूचना-प्रौद्योगिकी की सहायता से भारत सरकार एवं हिंदी प्रेमियों के ठोस कदम के परिणामस्वरूप अब हिंदी की गति उप-महाद्वीप एवं इससे इतर तीव्र होती जा रही है।

सम्मेलन में कहीं बड़ी संख्या में देश से ही नहीं विदेशों से भी ऐसे लोग वहाँ पहुंचे थे जिनका हिंदी और भारतीय भाषाओं सहित भारत और भारतीयता से गहरा सरोकार है। मॉरीशस में आयोजित 11वें विश्व हिंदी सम्मेलन में मैं ऐसा बहुत कुछ भी देखा जो सकारात्मक है और हिंदी और भारतीय भाषाओं सहित भारत, भारतीयता और भारत की संस्कृति के विकास के मार्ग को प्रशस्त करता दिखता है।

सम्मेलन के ठीक पहले भारत रत्न भारत के पूर्व प्रधानमंत्री, हिंदी-प्रेमी व प्रखर वक्ता माननीय अटल बिहारी वाजपेयी जी के निधन का प्रभाव विश्व हिंदी सम्मेलन पर भी पड़ा। सांस्कृतिक कार्यक्रम के लिए वहाँ पहुंचे कलाकार अपनी कला का प्रदर्शन नहीं कर पाए। लेकिन इसके साथ-साथ यह भी कि मा. अटल बिहारी वाजपेयी जी, जिन्होंने सबसे पहले संयुक्त राष्ट्र संघ में हिंदी का शंखनाद किये थे। उनके निधन से लोगों के दिलों दिमाग में देश-दुनिया में हिंदी के प्रति एक सघन भावनात्मक परिवेश बन गया, जो सम्मेलन में भी दिखा और सांस्कृतिक कार्यक्रम का समय अटल बिहारी वाजपेयी जी की श्रद्धांजलि का सत्र बन गया।

सम्मेलन में मॉरीशस में तो मानो भारतीयता की लहर बह रही थी। हिंदी ही नहीं भारतीय धर्म और संस्कृति कहीं न कहीं हर मॉरीशसवासी के मन को स्पर्श करती दिखी। मुझे तो यह लगता है कि हिंदी के बहाने भारतीयता का रंग मॉरीशसवासियों के सिर चढ़कर बोल रहा था। मॉरीशस के बहुसंख्यक भारतवंशी इन भारतीयों के समूह में अपनी जड़ों को तलाशते दिखे। इन सबके साथ साथ भारत के धर्म और संस्कृति की धूम पूरे वातावरण को भारतमयी कर रही थी। उद्घाटन सत्र में मॉरीशस के प्रधानमंत्री मा. श्री प्रवीण कुमार जगन्नाथ और समापन में कार्यवाहक महामहिम राष्ट्रपति श्री परमशिवम पिल्लैजी के संबोधन प्रभावी व आत्मीयतापूर्ण थे। इसके अतिरिक्त पूर्व प्रधानमंत्री मा. श्री अनिरुद्ध जगन्नाथ और श्रीमती लीला देवी दुकन लछूमन, शिक्षा मंत्री, मॉरीशस सरकार सहित कई वरिष्ठ मंत्री सक्रियता से लगे हुये थे।

सबसे बड़ी बात तो यह है कि विश्व हिंदी सम्मेलन का नेतृत्व भारत की विदेश मंत्री माननीय श्रीमती सुषमा स्वराज कर रही थीं। इनका हिंदी प्रेम तो जगजाहिर है ही, वे हिंदी की प्रखर वक्ता भी हैं। जब भी कोई अवसर आता है वे हिंदी सहित तमाम भारतीय भाषाओं के साथ खड़ी दिखती हैं। उन्होंने सम्मेलन में इस बात को रेखांकित किया कि भोपाल के विश्व हिंदी सम्मेलन से पहले तक के विश्व हिंदी सम्मेलन मुख्यत: ललित साहित्य के सम्मेलन ही बने रहे लेकिन भोपाल और उसके बाद मॉरीशस के विश्व हिंदी सम्मेलन में साहित्य से इतर भाषा के विभिन्न पक्षों को भी पर्याप्त महत्व दिया गया है। विचार गोष्ठियों में पूरी गंभीरता के साथ मंथन भी हुआ। अपने उद्घाटन भाषण में स्वयं श्रीमती सुषमा स्वराज ने कहा कि भोपाल सम्मेलन की सिफारिशों और लिए गए निर्णयों पर निरंतर बैठकें की गई जिसमें वे स्वयं भाग लेती रहीं।

एक बात जिसने मुझे सर्वाधिक प्रभावित किया वह यह थी कि ''भाषा प्रौद्योगिकी के माध्यम से हिंदी सहित भारतीय भाषाओं का विकास'' विषय पर आयोजित समानान्तर सत्र। जिसकी अध्यक्षता भारत सरकार के गृह राज्य मंत्री माननीय श्री किरेन रिजिजू कर रहे थे। उसमें प्रतिभागियों को भी खुलकर अपनी बात रखने का मौका दिया गया। सम्मेलन में गोवा की राज्यपाल माननीय श्रीमती मृदुला सिन्हा तथा हिंदी के कवि व बंगाल के माननीय राज्यपाल भी

सम्मेलन की गरिमा बढ़ाने के साथ-साथ सक्रिय भूमिका भी निभा रहे थे। सम्मेलन में हिंदी और भारतीय भाषाओं के विभिन्न पक्षों पर गहन चिंतन मनन हुआ। 'हिंदी विश्व और भारतीय संस्कृति' से जुड़े चार समानांतर सत्र हुए। चार सत्र दूसरे दिन हुए। तीसरे दिन समापन समारोह हुआ देशी-विदेशी विद्वान सम्मानित हुए। सत्रों की अनुशंसाएं प्रस्तुत की गईं। भविष्य के लिए 'निकष' को भारत का प्रवेश द्वार बताया गया। इस बार 'निकष' का प्रारूप तीन हजार के सभागार में दिखाया गया कि वह हिंदी सीखने, परीक्षा देने और प्रमाण-पत्र प्राप्त करने वाला वैश्विक द्वार होगा। जिसमें उनकी सुनने, बोलने, लिखने और पढ़ने की ऑनलाइन कक्षाएं दी जाएंगी, परीक्षाएं ली जाएंगी, प्रमाण-पत्र दिए जाएंगे। इस प्रकार चर्चा सत्र और उसके बाद सिफारिशों को लेकर की गई मंत्रणा यह संकेत दे रही थी कि यह सम्मेलन हिंदी के लिए कुछ करने का गंभीर प्रयास है।

सम्पूर्ण सम्मेलन के दौरान, अच्छे सुझाव आए और अनुशंसाएँ भी सार्थक थीं। इनमें से कुछ अनुशंसाएँ व सुझाव जैसे -

1. भारत को इंडिया नहीं भारत ही कहा जाए।
2. हिंदी को भारत की राष्ट्रभाषा बनाया जाए।
3. उद्योग व्यापार, रिटेल, बीमा, बैंकिंग, राजस्व आदि सहित सभी कंपनियों आदि के कार्य संबंधी आई.टी. समाधान, ई-गवर्नेंस, ऑन लाइन सेवाएँ तथा वैबसाइट आदि एक साथ द्विभाषी अथवा स्थानीय भाषा सहित त्रिभाषी हों।
4. नई पीढ़ी को सांस्कृतिक दृष्टि से जागरूक बनाया जाए।
5. भारतीय भाषाओं के पत्र-पत्रिकाओं व चैनलों के लिए प्रेस कौंसिल की तरह के भाषा संबंधी नियामक अथवा मार्गदर्शी निकाय बनाए जाएँ जो इन्हें अपनी भाषाओं के जीते-जागते शब्दों की हत्या करना व लिपि को लुप्त करने से रोकें।

सम्मेलन के दूसरे दिन भोजनोपरांत सम्मेलन की ओर से स्थानीय भ्रमण का कार्यक्रम रखा गया था। जिसमें वे सबसे पहले हमें पोर्ट लुइस ले गए। यह वही बंदरगाह है जहां भारत के लोग कुली बन कर पहुंचे थे। जिसे कुली घाट कहा जाता था। अब जिसका नाम बदलकर प्रवासी घाट कर दिया गया है। वहाँ लगी प्रदर्शनी में उस समय भारत से यहां पहुंचे भारतवंशियों की जिंदगी, उनकी तकलीफें और उनके संघर्ष को दिखाया गया था। इस दौरान दिखाए महात्मा गांधी संस्थान के विद्यालय और प्रदर्शनी भारतवंशियों के अतीत और वर्तमान को जोड़ रही थी। अंत में सभी प्रतिभागी विश्व हिंदी सचिवालय पहुंचे जिसके भव्य भवन का पिछले वर्ष भारत के महामहिम राष्ट्रपति ने उद्घाटन किया था।

कहना न होगा कि जिस प्रकार भारत में कुंभ के मेले धर्म से जुड़कर भारतीय संस्कृति और भारतीयता के महासमागम बन जाते हैं कुछ उसी प्रकार हिंदी से जुड़कर मॉरीशस का विश्व हिंदी सम्मेलन भी भारतीय धर्म संस्कृति का समागम था। जिसमें अपने से बिछड़े भारतवंशियों की संवेदनाओं के साथ साथ उनके द्वारा की गई प्रगति का गौरव भी शामिल था। जो कुछ भी था पाने के लिए ही था। खोने के लिए तो कुछ न था। हिंदी व भारतीय भाषाओं के अलावा भी भारत से पहुंचे लोगों के लिए मॉरीशस में बहुत कुछ देखने को और उससे भी ज्यादा सीखने को था। मॉरीशस जो कि भारतवासियों का ही देश माना जाता है वहाँ जिस प्रकार साफ-सफाई की खूबसूरती थी और उससे भी बढ़कर वहाँ के आम लोगों में अनुशासन था, हर कोई भावनाओं से ओतप्रोत था। मॉरीशसवासियों का हिंदी और भारतीय संस्कृति के साथ-साथ भारतवासियों से प्रेम और भावनात्मक लगाव उनमें अपनत्व का संचार करता सा दिख रहा था। उस पर मॉरीशस की खूबसूरत समुद्री तट, ज्वालामुखी के अवशेष, प्राकृतिक सौंदर्य के साथ-साथ साफ सुथरा सुंदर देश ग्यारहवें विश्व हिंदी सम्मेलन में पहुंचे प्रतिभागियों को अभिभूत कर रहा था।

अंत में सम्मेलन के इन तीन दिनों की विचारोत्तेजक गहमागहमी पर सकारात्मक चर्चा के दौरान मुझे अपने मित्र मंडली की टिप्पणी बहुत सटीक लगी, 'डॉ सा'ब ! दही मथने पर हमें मक्खन तोलना चाहिए, न कि छाछ।'

राजभाषा हिन्दी का करें प्रचार,
देश को जोड़ने का यही है आधार।।

- शरीफत अली
भूविज्ञान एवं तैलाशय विभाग, दुलियाजान

यात्रा वृत्तांत (रामगढ़, जिला नैनीताल, उत्तराखंड प्रदेश)

रितेश मोहन जोशी
उप महाप्रबंधक (भूभौतिकी)
भूभौतिकी विभाग, दुलियाजान

भारतवर्ष में न जाने कितने रामगढ़ है, मैंने किसी से सुना था की 42 रामगढ़ है–

सच तो मालूम नहीं पर जिस रामगढ़ की यात्रा का वृतांत मैं लिखने जा रहा हूँ वह मशहूर चलचित्र शोले वाला रामगढ़ भी नहीं है। शोले वाला रामगढ़ बेंगलुरु और मैसूर शहरों के बीच है और यह रामगढ़ शोले वाले रामगढ़ से लगभग 2000 किलोमीटर दूर उत्तर की दिशा में है। उत्तराखंड प्रदेश के एक खूबसूरत से शहर नैनीताल से मात्र 26 किलोमीटर की दूरी पे बसा यह गांव किसी सपने से कम नहीं है।

सामने हिमालय की पर्वत श्रृंखलाएं जिसमें नंदा देवी, नंदा कोट, त्रिशूल पंचाचूली प्रमुख आकर्षण है, पर्वतीय फलों के बगीचे जिनमें आलू बुखारा (पल्म), सेब (एप्पल), खुमानी (एप्रीकॉट), पीच (आड़ू), नाशपाती (पियर), अखरोट (वालनट), कीवी, अंगूर (ग्रेप्स) एवं कई किस्म के बेर सम्मिलित है। यही कारण है की रामगढ़ को कुमाऊं के फलों की कटोरी (फ्रूट बाउल ऑफ कुमाऊं) या फलों की टोकरी (फ्रुट बास्केट ऑफ कुमाऊं) भी कहा जाता है।

बेरों में खासकर काफल नाम का बेर बहुत प्रसिद्ध है। इतना प्रसिद्ध की इस पे बना एक लोक गीत भी काफी चर्चित है (बेड़ो पाको बारहो मास, ओह नारायण काफल पाका चेता मेरी छेला) अर्थात,

बेडु नाम का फल साल भर पकता है पर काफल नाम का बेर सिर्फ चैत के महीने में ही पकता है।

रामगढ़ की जलवायु शीत प्रधान है, इसलिए यहाँ का खान पान भी जलवायु के अनुकूल है। गहत की दाल जो सिर्फ उत्तराखंड में ही होती है, उसकी तासीर काफी गरम होती है। सर्दियों के लिए एकदम अनुकूल। कहते हैं गहत की दाल पेट की पथरी तक गला देती है। इसी तरह भट्ट की दाल जो एक तरह की काली सोयाबीन के समान है पीलिया (जॉन्डिस) बीमारी में बहुत कारगर है। इसमें पाया जाने वाला प्रोभूजिन (प्रोटीन) सेहत के लिए अत्यंत लाभकारी है। किसी भी पर्वतीय स्थल की तरह यहाँ का भी सबसे लोकप्रिय पेय है, दुग्ध शर्करा मिश्रित स्वेत पेय पदार्थ अर्थात चाय।

कुछ महान रचनाकारों की कर्म भूमि जिसमें प्रख्यात कवयित्री महादेवी वर्मा का नाम अग्रिम है– कहते हैं 1937 में महादेवी जी बद्री–केदार की यात्रा में निकली थी पर यह जगह उन्हें इतनी पसंद आयी की उन्होंने इसे अपना गर्मियों का निवास स्थान बनाने का निर्णय लिया। रामगढ़ के प्रसिद्ध श्री हरिदत्त जोशी जी ने उन्हें अपनी जमीन दी जिसपे बना उनका निवास स्थान आज भी उनकी प्रेरणादायक रचनाओं का गवाह है। इस निवास स्थान को अब एक संग्रहालय का स्वरुप दिया गया है।

वहीं दूसरी ओर एक चोटी को 'टैगोर टॉप' का नाम दिया गया है, कहते हैं की इस चोटी पे श्री रवीन्द्र नाथ टैगोर ने अपने मशहूर काव्य गीतांजलि के कुछ अध्याय लिखे थे। सन 1903 एवं 1937 के मध्य गुरुदेव श्री रवीन्द्रनाथ टैगोर ने रामगढ़ को कई बार अपना निवास स्थान बनाया। यह जगह उन्हें अपनी पुत्री के स्वास्थ्य अर्जन के भी अनुकूल लगी जो फेफड़ों की बीमारी (टी. बी.) से जूझ रही थी।

ग्वालियर की राजमाता श्रीमती विजया राजे सिंधीया का गर्मियों का निवास स्थान भी रामगढ़ ही रहा है। यहाँ पे बना उनका बंगला

आज भी उस दौर का प्रतीक है जब राजमाता स्थानीय निवासियों से घुलती मिलती थी जैसे वो राजमाता नहीं हो बल्कि उनमें से ही एक हो।

रामगढ़ देश की राजधानी दिल्ली से लगभग 330 किलोमीटर की दूरी पे है। दिल्ली से आप लौहपथगामिनी से सफर कर सकते हैं जो आपको आखिरी अड्डे काठगोदाम पे लगभग 6 घंटे में छोड़ देगी। सुविधा के अनुसार आप दिल्ली से अत्यंत प्रात:काल, दोपहर या रात की लौहपथगामिनी ले सकते हैं। काठगोदाम से रामगढ़ करीब 50 किलोमीटर है जो प्रदेश परिवहन निगम की प्रस्तर पथ गामी या निजी वाहन से पूरी की जा सकती है-

अगर आप मुंबई या कोलकाता से आ रहे हैं तो आप दिल्ली तक का सफर चीलगाड़ी(एयरोप्लेन) में कर सकते हैं, तत्पश्चात लौहपथगामिनी एवम् चार पहिया वाहन से सफर कर सकते हैं, इस तरह आप यात्रा के सभी साधनों का उपयोग कर पाएंगे। चिंता न करे, आपको अपने कदमों का इस्तेमाल करने का बहुत समय मिलेगा क्योंकि सेब के बगीचों में घूमने का अपना ही मजा है।

रामगढ़ कुछ खास हिंदी चलचित्र की पृष्ठभूमि भी रहा है, बीते दिनों के महानायक श्री धर्मेंद्र भी 1987 में हिंदी चलचित्र 'हुकूमत' के निर्माण के सिलसिले में यहाँ आये। रामगढ़ के प्रसिद्ध शिव मंदिर में अति प्रसिद्ध चलचित्र 'मासूम' (निर्माता शेखर कपूर) के उस गाने को फिल्माया गया जो आज भी हम सब के मन में गूँजता रहता है, गाने के बोल है, ''तुझसे नाराज़ नहीं जिन्दगी, हैरान हूँ मैं''। इस चलचित्र में जो स्कूल दिखाया गया है वह नैनीताल का प्राचीन एवं प्रसिद्ध सेंट जोसफ कॉलेज है। 2005 की विवेक ओबेरॉय अभिनीत एवं सुभाष निर्मित चलचित्र 'किसना' रामगढ़ से किंचित दूर मुक्तेश्वर में फिल्मायी गयी थी।

प्रसिद्ध सामाजिक कार्यकर्ता नारायण स्वामी का आश्रम भी रामगढ़ में है तथा अरबिंदो आश्रम भी है। अरबिंदो आश्रम पांडिचेरी के प्रसिद्ध: ऑरोविले की ही कड़ी है।

उत्तराखंड को वैसे भी देवभूमि की संज्ञा दी गयी है और सच भी है क्योंकि गंगा एवं यमुना का उद्गम यही से होता है, बद्री यहीं, केदार यहीं, महामृतुन्जय यहीं, पंच केदार यहीं। उत्तराखंड प्रदेश में कदम रखते ही यूं लगता है जैसे हम उस अध्यात्म के नजदीक आ गए हैं जिसकी तलाश हमें बरसों से थी।

रामगढ़ यूं तो छोटा सा गांव है पर यहाँ के लोगों का दिल बहुत बड़ा है, जाहिर सी बात है, जिसके सामने विशालकाय हिमालय हो, जो हर रोज, हर पल अपने होने का, अपने अस्तित्व का एहसास दिलाता हो, उसके समकक्ष छोटा दिल रखना, छोटी सोच का परिचायक होता।

जो प्रसिद्ध स्वामियों एवं लेखकों की कर्मभूमि रहा हो, वह जगह कितनी पावन, कितनी नैसर्गिक एवं कितनी विलक्षण होगी इसका अंदाजा कुछ पन्नों के इस आलेख में नहीं मिल सकता। इस सुन्दर एवम आकर्षक जगह में अपनी उपस्थिति दर्ज करके नैसर्गिक सौंदर्य का आनंद लें और इस जद्दोजहद वाली जिन्दगी में कुछ दिनों के लिए अनुपस्थिति दर्ज करे,यकीनन आप रामगढ़ जाके यह गाना जरूर गुनगुनायेंगे की ''तुझसे नाराज नहीं जिन्दगी, हैरान हूँ मैं, कि मैं अभी तक रामगढ़ क्यों नहीं आया''।

माँ

✍ **भोज राज क्षेत्री,** *कक्षा 8*
राष्ट्रभाषा विद्यालय, दुलियाजान

जग, दुनिया में सबसे सुंदर, सबसे प्यारी, पवित्र सदा देखा है मैंने।
वह होती है- मां।
खुद भूखी फिर भी मुझे खिलाएं ऐसा रिश्ता देखा है मैंने।
वह होती है- मां।।
रात भर जगती मुझे सुलाती कभी लोरी गाकर तो कभी परियों की कहानी सुना कर ऐसा प्यार देखा है मैंने।
वह होती है- मां।
बीमार, लगे मुझे चोट, दर्द उसे हो, ऐसा ईश्वर का रूप देखा है मैंने।
वह होती है- मां।

पिता पूछे- कितना कमाया, बहन पूछे - क्या-क्या लाया, बस मां ही पूछे बेटा तुमने कुछ खाया। ऐसा स्नेह देखा है मैंने।
वह होती है- मां।।
स्त्री, नारी का पवित्र रूप देखा है मैंने। ममता की मूरत देखा है मैंने।
वह होती है- मां
मन पवित्र, प्यार व ममता, कोहिनूर सा रूप है उनका। ईश्वर भी झुक जाता। ऐसी नारी देखी है मैंने।
वह होती है- मां।
वह जो मुझे दुनिया में लाई।
ईश्वर हर जगह नहीं रह सकते इसलिए उन्होंने मां बनायी।।
फिर भी परिवार के सभी को संतुष्ट करती है। खुद का स्वार्थ ना देखती।
ऐसी सृष्टि, ब्रह्मांड देखा है मैंने ।
वह होती है मां।।

लंदन यात्रा

✍ **रूपांजली सईकिया**
उप महाप्रबंधक (प्रशासन)
निगमित कार्यालय, नोएडा

मैं हर वर्ष अपनी माँ और बेटे के साथ लंदन जाती हूँ। हम पूरे एक महीने के लिये लंदन जाते हैं क्योंकि मेरी दीदी वहां पर रहती है किन्तु मेरी इस वर्ष की यात्रा गतवर्षों से अलग खुशियों से भरपूर और यादगार थी।

हर वर्ष की तरह इस बार भी हमलोग लंदन जाने की तैयारी में थे अचानक एक सप्ताह पहले मुझे दीदी का फोन आया कि इस वर्ष पहली बार लंदन स्थित इंडियन अम्बेसी में नार्थ ईस्ट कल्चरल प्रोग्राम का आयोजन हो रहा है और तुमको इस कल्चरल प्रोग्राम में फोक डांस में बोड़ो और नेपाली डांस करना पड़ेगा क्योंकि इस डांस के लिये कुछ महिलायें कम पड़ रहीं हैं। यह सुनकर मैं पहले तो थोड़ी घबड़ाई हुई थी कि लंदन स्थित भारत भवन में इन दोनों डांस को करना होगा परन्तु साथ ही साथ मन में बहुत ही कौतूहलता और खुशी भी हो रही थी।

इस बार लंदन जाते समय मैं बहुत ही भावुक थी। हमलोग 19 सितम्बर, 2018 को दिल्ली से लंदन रवना हुए। लंदन पहुंचते ही डांस प्रोग्राम के लिये रोज मेरी रिहर्सल शुरू हो गई और मुझसे जितना हो सका अच्छे डांस के लिये मैंने अपना पूरा प्रयास किया। आखिर 5 अक्टूबर नार्थ ईस्ट कल्चरल प्रोग्राम का दिन आ गया। भारत भवन में जब मैं और मेरा परिवार एक साथ अंदर जा रहे थे तो उस समय जो खुशी और गर्व का अनुभव मुझे हो रहा था वो एक अलग ही प्रकार की खुशी थी जो मैं शब्दों में बयान नहीं कर सकती, केवल उस समय महसूस कर रही थी। भारत भवन की साफ सफाई, सजावट, सिक्यूरिटी चेकिंग, सुरक्षा बहुत ही कड़ी थी। मेरी माँ, बेटा और मेरा पासपोर्ट चार दिन पहले ही जमा करना पड़ा था क्योंकि हमलोग लंदन में ट्रांस्टि टूरिस्ट थे। भारत भवन में काम करने वाले लोग भारतीय ही हैं। वहां के समन्वय मंत्री (Co-ordination Minister) श्री ए. एस. राजन जी से हम लोग मिले। मैंने वहां बोड़ो और नेपाली दोनों डांस किये जिसको लोगों ने बहुत पसंद किया और मेरी बहुत प्रशंसा की। वहां पर हम लोगों ने नार्थ ईस्ट के 8 राज्यों असम, मणिपुर, अरुणाचल, मेघालय, नागालैंड, त्रिपुरा, सिक्किम एवं मिजोरम का फोक डांस किया जिसका सबने बहुत आनन्द लिया।

समन्वय मंत्री (Co-ordination Minister) एवं अन्य गणमान्य व्यक्तियों ने प्रशंसा करते हुये कहा कि वे अगले साल इंडिया जायेंगे तो नार्थ ईस्ट की प्राकृतिक सुन्दरता देखने जरूर जायेंगे, ये सुनकर मैं बहुत गौरवान्वित महसूस कर रही थी। इस बार मेरी लंदन यात्रा बहुत ही सुखद और खास रही। भारत भवन में मुझे डांस करने का जो मौका मिला उसके लिये मैं वहां के प्रोग्राम आर्गेनाइजर और श्रीमती चीनू किशोर, सचिव (NEICC.UK) एवं श्रीमती गीतांजली कोक्स (कल्चरल सेक्रेटरी ऑफ (NEICC.UK)) दोनों के लिये बहुत ही आभारी हूँ।

मुझे अपने देश का राष्ट्रीय ध्वज जो भारत भवन के ऊपर लहरा रहा था बहुत ही सुन्दर लग रहा था जिसे देखकर मुझे बहुत अच्छा लग रहा था ।

वैसे तो मैं लंदन हर वर्ष जाती हूँ और वहां के बहुत से दर्शनीय स्थानों को भी बहुत बार देखा है लेकिन जो आनन्द इस बार भारत भवन को देखकर और डांस प्रोर्फोमेंस करके मिला वह पल मैं कभी नहीं भुला पाऊंगी। इस बार की मेरी लंदन यात्रा बहुत ही सुखद एवं यादगार रही।

11वां विश्व हिन्दी सम्मेलन, मॉरीशस

✍ **नारायण शर्मा**
वरिष्ठ प्रबंधक(राजभाषा)
पाइपलाइन मुख्यालय, गुवाहाटी

18 से 20 अगस्त 2018 तक मॉरीशस में आयोजित 11वें विश्व हिन्दी सम्मेलन में मुझे भाग लेने का सुअवसर प्राप्त हुआ । ऑ.इ.लि. के निगमित कार्यालय से उप महाप्रबंधक (राजभाषा) श्री रमण जी झा की भी सहभागिता थी। मैं ऑयल इंडिया लिमिटेड के उच्च प्रबंधन के प्रति आभार ज्ञापित करता हूं कि उन्होंने मुझे विश्व स्तरीय सम्मेलन के लिए नामित किया।

इस सम्मेलन में भाग लेना एक बहुत ही अनूठा अनुभव रहा। सम्मेलन का उद्घाटन मॉरीशस के प्रधानमंत्री श्री प्रवीण जगन्नाथ ने किया। माननीय भारत की विदेशमंत्री श्रीमती सुषमा स्वराज ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। विदेश राज्य मंत्री श्री बी.के. सिंह, गृह राज्य मंत्री श्री किरन रिजिजू, मानव संसाधन राज्य मंत्री श्री एस.पी.सिंह, विदेश राज्यमंत्री श्री एम.जे.अकबर, गोवा की माननीया राज्यपाल श्रीमती मृदुला सिन्हा, पश्चिम बंगाल के माननीय राज्यपाल श्री केशरीनाथ त्रिपाठी के साथ, मॉरीशस गणराज्य के प्रधानमंत्री शिक्षामंत्री, विदेश मंत्री, पूर्व राष्ट्रपति एवं पूर्व प्रधानमंत्री जैसे दिग्गजों की उपस्थिति में विश्व हिन्दी सम्मेलन का शुभारंभ हुआ।

सम्मेलन के प्रारंभ में भारत के पूर्व प्रधानमंत्री स्वर्गीय अटल बिहारी बाजपेयी जी को श्रद्धांजली दी गई और हिन्दी के विकास में संयुक्त राष्ट्रसंघ में उनके पहले हिन्दी भाषण और हिन्दी कविता में उनके योगदान सहित उनके व्यक्तित्व के विभिन्न रूपों को याद किया गया।

3 दिन तक चले इस सम्मेलन में अलग-अलग कक्षाओं में अलग-अलग विषयों पर समानांतर सत्र चले। सभी सत्रों में सहभागिता संभव नहीं हो सकी किन्तु जिन सत्रों में भाग लिया वे बहुत ही ज्ञानवर्धक और रोचक रहे। विश्व के अलग-अलग भागों से आए हुए हिन्दी के विद्वानों के विचार सुनने को मिले और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर हिन्दी की साख और संभावनाओं के बारे में भी जानकारी मिली।

समापन सत्र को मॉरीशस के पूर्व राष्ट्रपति माननीय अनिरूद्ध जगन्नाथ और वर्तमान कार्यवाहक राष्ट्रपति दोनों ने सम्बोधित किया। ये सम्बोधन बहुत ही प्रभावी थे और इन संबोधनों का एक-एक शब्द मॉरीशस के अंदर बसे मिनी भारत को परिलक्षित करने वाला था। इन सम्बोधनों के दौरान सभागार बार-बार तालियों की गड़गड़ाहट से गूंजता रहा।

विश्व हिन्दी सम्मेलन में पारित बहुत से प्रस्तावों में से कुछ प्रस्ताव निम्नवत हैं:

1. हिन्दी को भारत की राष्ट्रभाषा घोषित किया जाए
2. हिन्दी को संयुक्त राष्ट्र संघ की भाषा के रूप में मान्यता दिलाई जाए। इसके लिए मॉरीशस भारत का समर्थन करेगा।
3. गृह मंत्रालय के अधीन हिन्दी प्रौद्योगिकी संसाधन केन्द्र की स्थापना की जाए और इसके लिए निधि की व्यवस्था की जाए।
4. इंडिया के स्थान पर भारत शब्द के प्रयोग को प्रोत्साहित किया जाए।
5. एक सांस्कृतिक अवध-ग्राम की स्थापना की जाए।
6. प्रवासी भारतीय लेखकों के साहित्य का संकलन एवं प्रकाशन किया जाए।
7. प्रवासी साहित्य को विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम में शामिल किया जाए।
8. हिन्दी में वर्ड प्रोसेसर विकसित किए जाएं जिसमें अंग्रेजी के समान सभी सुविधाएं हों ।
9. ई मेल ID में हिन्दी तथा अन्य सभी भारतीय भाषाओं के प्रयोग को संभव बनाया जाए ।
10. बाल साहित्य अकादमी की स्थापना की जाए।

इस सम्मेलन में भाग लेने के लिए भारत एवं विश्व के विभिन्न देशों के तकरीबन 2500 प्रतिनिधि मॉरीशस पहुंचे। पेट्रोलियम मंत्रालय सहित तेल उपक्रमों से ऑयल इंडिया लिमिटेड, इंडियन ऑयल, एच.पी.सी., गेल एवं बामन लॉरी द्वारा प्रतिनिधित्व किया गया और सभी प्रतिभागियों को विश्व स्तर पर हिन्दी एवं हिन्दी में जुड़े लोगों से एक साथ-साथ मिलने का अवसर प्राप्त हुआ।

मॉरीशस एक बहुत सुंदर देश है और यहाँ के नागरिक बेहद अनुशासित और ईमानदार हैं। यह जानकर सुखद आश्चर्य हुआ कि भारत के लगभग 20 साल बाद आजाद हुआ यह देश आज अपने सभी नागरिकों को नि:शुल्क शिक्षा, परिवहन एवं चिकित्सा की सुविधा प्रदान करता है और साथ ही 60 वर्ष की आयु के बाद सभी को 5000 रूपये की पेन्शन भी देता है। अधिकांश लोगों के लिए रोजगार उपलब्ध है। यहां के लोग हिन्दी और भारतीय संस्कृति से भावनात्मक रूप से जुड़े हुए हैं और इनसे हृदय से प्रेम करते हैं।

युगपुरुष

✍ **दिगंत डेका**
वरिष्ठ सहायक - I (हिंदी अनुवादक)
राजभाषा अनुभाग, जन संपर्क विभाग, दुलियाजान

धड़क-धड़क धड़कता है दिल उसे धड़कने दे,
बिगुल विकास का आज बजा है उसे बजने दे,
ज्वाला जो जली है नयी उम्मीद की
आज उसे जलने दे।

ए विकास के पुजारी!
करता जा पूजा तू नयी क्रांति की,
चिंतित तू आज इतना क्यों है,
बोलने दे, चाहे जो करे, करने दे।

रूकना मत, थकना मत,
बस सुन अपने मन की,
है विश्वास तुझपे,
तू है वीर संतान भारत माँ की।

दानव वे सभी, सत्ता के हैं भूखे,
निगल रहे देश को, है स्वार्थी मन सबका,
धन के पुजारी सभी, मिट गयी उनकी नैतिकता,
नहीं रहा कोई मोल पारदर्शिता का।

देख रही दुनिया, कितना समर्थ है तू,
जगा देशभक्ति, चुका कर्ज उन जवानों का,
छोड़ जा अमिट छाप अपने कर्मों की,
कर आसीन भारत को विश्व-गुरु-पद पर
बढ़ा मान तिरंगे का।

स्वच्छ भारत एक सपना

✍ **पंकज कुमार यादव,** *कक्षा 8*
केंद्रीय विद्यालय, दुलियाजान

स्वच्छ रहना एक अच्छी आदत है,
मंदिर,मस्जिद के जैसी ही एक इबादत है।
नेताओं का नारा है- एक कदम स्वच्छता की ओर,
हालात देखकर यह लगता नहीं कि अभी हुआ है भोर।
स्वच्छ होगा भारत, सपना हमारा कब से है,
पर है नहीं पता की स्वच्छता शुरू हम सब से है।
साफ हमारा घर है, साफ हमारा फर्श है,
पर एक बार सोचो, क्या साफ हमारा भारतवर्ष है?
जिन नदियों की पवित्रता पर गर्व जताते हैं हम,
आज उन्हीं नदियों की धारा में कूड़ा कचरा बहाते हैं हम।
ऐसे तो स्वच्छता का सपना साकार नहीं होगा,
भारत देश हमारा स्वच्छ और साफ नहीं होगा।
एक दिन ऐसा आएगा, न एक कचरा न एक कूड़ा होगा,
गांधीजी का यह सपना एक दिन जरूर पूरा होगा।

नोट बंदी

✍ **सौभिक नरत्तम रॉय,** *कक्षा 11*
दिल्ली पब्लिक स्कूल, दुलियाजान

मोदी जी, आपने क्या किया?
आपने तो पाँच-सौ और हज़ार के नोट एक दिन में बंद कर दिया
आम लोगों का जीवन जीना हो रहा है हराम,
आप ए . सी. रूम मैं बैठकर कर रहे आराम।
ए. टी. एम. के बाहर बन रही है लंबी-लंबी लाइन
व्यापारियों के हाथ से निकल रहा है महत्वपूर्ण टाइम।
कुछ लोंगों ने ही लिया काले धन का मज़ा
तो क्यों मिले हम सबको, इस भूल की सज़ा?
कुछ भारतीय ही थे टेक्स चोर और भ्रष्ट
लेकिन उनके कारण आम नौकरी करने वालों को हो रहा है कष्ट।
नोटबंदी सही या गलत, मुझे नहीं पता
किन्तु सभी को उठानी पड़ रही है तकलीफ़,
बस मुझे इतना ही है पता।

हिंदी हमारी मातृभाषा

✍ **नेहा सैकिया,** *कक्षा 8*
दिल्ली पब्लिक स्कूल, दुलियाजान

हिंदी हमारी मातृभाषा,
है यह लोगों की आशा।
यह हमारे देश का गर्व है,
आज इस का पर्व है।
सबसे अच्छी, सबसे मीठी
सबसे सुरीली हिंदी।
कश्मीर से कन्याकुमारी तक,
पग-पग बोली जाती हिंदी।
अंग्रेजों के राज में,
हिंदी का स्वर गुंजा था।
जब आजादी की जंग हुई,
तब हिंदी का ही नारा था।
जन-जन में हिंदी, हर मन में हिंदी,
हर दिल में समाई हिंदी।
गांव-गांव में, नगर-नगर में हिंदी,
लोगों की सांसों में समायी है हिंदी।
संस्कृत की बेटी बन
मातृभूमि का किया सिंगार।
लोक भाषा, खड़ी बोली बन,
हिंदुस्तान को किया खुशहाल।
तो आओ। हिंदी को अपनाएं,
हर घर में इसकी खुशबू फैलाएं।
इसके मधुर सरस भाव से,
भारत की शान बढ़ाएं।

नन्हीं चिड़िया

✍ **दिशा अग्रवाल,** *कक्षा 8*
ऑयल हायर सेकेन्ड्री स्कूल, दुलियाजान

मैं हूं नन्हीं चिड़िया
आराम देह, गर्म घोसले में
जन्म हुआ मेरा,
ऊंचे पर्वत के पास
जन्म हुआ मेरा।
मम्मी की लाडली
सबसे न्यारी हूं मैं
नन्हीं चिड़िया।
मैंने सीखा है उड़ना.
ना कभी नीचे गिरना,
यहां वहां उड़ते फिरना
लगता है सबसे अच्छा।
पर एक दिन जब मैं
रही थी आसमान में घूम,
हो गई अचानक से
घने जंगल में गुम।
शिकारियों ने मुझे पकड़ा
मेरे नरम पंखों को जकड़ा,
तब से हूं इस पिंजरे में बंद
अब तो कर दो मुझे स्वच्छंद।

बरसात की बूंदे

✍ **पायल कुमारी डोम,** *कक्षा 9*
ऑयल हायर सेकेन्ड्री स्कूल, दुलियाजान

ये बरसात की बूंदे शायद कुछ कहना चाहती है हमसे
ये झील मिलाती हवाओं का शोर
ये बारिशों में नाचते मोर
शायद कुछ कहना चाहते हैं हमसे

यह वसुधा पर गिरती बारिश की बूंदे टप-टप।
शायद कुछ कहना चाहती हैं हमसे

ये प्रकृति में खिले हुए रंग बिरंगे फूल
ये हवाओं में उड़ती हुई धूल।
शायद कुछ कहना चाहती हैं हमसे

ये प्रकृति वर्षा के साथ लाती है हरियाली
जिससे पशु-पक्षी हो जाते हैं खुशहाल।
यह बरसात भी
शायद कुछ कहना चाहती हैं हमसे।

माँ

✍ **सुमन साहनी,** *कक्षा 8*
राष्ट्रभाषा विद्यालय, दुलियाजान

मां के लिए कुछ लिख सकें
ऐसा शब्द वेदव्यास भी न तलाश पाए
मां के लिए कुछ कह पाए
ऐसा शब्द सरस्वती भी न सोच पाई
मां के सामने अंबर छोटा है
मां के सामने सागर छिछला है
मां के सामने पर्वत कंकड़ सा है
मां के सामने इंद्रधनुष फीका है।
मां है तो सृष्टि का अस्तित्व है
मां है तो धरती की पहचान है
मां है तो ब्रह्मांड का मान है
मां के आगे सब कुछ थोड़ा है।
मां एक शब्द में संपूर्णता है
मां एक भाव का राग है
मां एक प्रार्थना का स्वर है
मां एक पूर्णता का एहसास है
मां को शत-शत प्रणाम है।

माँ

✍ **अमित कुमार प्रसाद**
प्रबंधक (संविदा)
संविदा विभाग, दुलियाजान

शख्सियत ए 'लख्तेजिगर' कहला न सका,
जन्नत के धनी वो पैर कभी सहला न सका।
दूध पिलाया उसने छाती से निचोड़कर,
मैं 'निकम्मा' कभी एक गिलास पानी पिला न सका।
बुढ़ापे का सहारा हूँ यह एहसास दिला न सका,
पेट पर सुलाने वाली को 'मखमल' पर सुला न सका।
वो 'भूखी सो गई' 'बहू के डर से', एक बार मांग कर,
मैं सुकुन के दो निवाले उसे खिला न सका।
नजरें उन बूढ़ी आँखों से, कभी मिला न सका,
वो दर्द सहती रही, मैं खटिया पर तिलमिला न सका।
जो हर रोज ममता के रंग पहनाती रही मुझे।
उसे दिवाली पर दो जोड़ी कपड़े, सिला न सका।
बिमार बिस्तर से उसे शिफा दिला न सका,
पत्नी के डर से उसे बड़े अस्पताल ले जा न सका।
माँ के 'बेटा' कहकर दम तोड़ने के बाद से अब तक
सोच रहा हूँ, दवाई इतनी भी महंगी न थी कि
मैं ला न सका।

डिगबोई में

✍ कुमार विमलेन्दु सिंह

क्षेत्र मुख्यालय, दुलियाजान में आयोजित ''राजभाषा संवाद'' कार्यक्रम में अतिथि वक्ता के रूप में पधारे कुमार विमलेन्दु सिंह, सम्पादक, रत्नासागर प्रा. लि. ने यह कविता अपने डिगबोई भ्रमण के दौरान लिखी थी।

कथाओं के ऐरावत से पूर्णत: भिन्न,
उन हाथियों का रंग और काया भय उत्पन्न करने वाली थी ,
और उनके ऊपर बैठा व्यक्ति, इन्द्र नहीं, मजदूर था,
प्रयोजन, एकमात्र, तेल खोजना था, डिगबोई में।

बात उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध से शुरू हुई थी,
योजना और इच्छा शक्ति का संगम था,
धन प्राप्ति का पूर्ण आश्वासन था,
और एक प्रसारित वन था, चुप रह कर,
मनुष्य की उच्छृंखलताओं को सहने के लिए।

उद्यम ने विवश किया धरा को,
ठीक वैसे ही, जैसे भागीरथ ने किया था, गंगा को।
एक अंतर था यहां लेकिन,
भागीरथ, लाना चाहते थे नदी को, ऊंचाई से नीचे,
और यहां नीचे ही प्रचुर द्रव एकत्रित करना था,
बहुत-बहुत ऊपर जाने के लिए,
तेल मिल गया था धरती के नीचे, डिगबोई में।

एक बस्ती और धीरे-धीरे, एक शहर सा बस गया,
कई लोग आए अलग-अलग प्रदेशों से,
अब कई लोगों का घर था यहां,
संसाधनों को एक बार पुन: जीवन ने खोज लिया था,
अब यहां भी प्रेम हो सकता था, युवाओं में, परस्पर,
अब यहां भी प्रतीक्षा हो सकती थी,
अब यहां भी मनोरंजन हो सकता था,
अब यहां भी जनसंख्या थी,
अब यहां भी खेमे बन सकते थे,
जब इतना कुछ हो सकता था,
तो नेहरू जी भी आ सकते थे यहां,
और आए भी एक बार,
अब इस आगमन के बाद भी,
कुछ विशेष नहीं बदला,
मजदूरों का जीवन, डिगबोई में।
कई कुएं खोदे गए, कई लोगों को रोजगार मिला,
कई लोग रहने लगे, कई क्लब बने,
और ढेर सारी कहानियां बनी,
कुछ कंपनियां भी अंग्रेज़ों ने बना ली, अपने देश में,
उस पैराफिन की, जो यहां मिलती थी,
और चाय बागान भी ख़रीदे उन्होंने, यहीं, डिगबोई में।

मुझे लगता है, सभी कहानियां, जो यहां बनी,
कही नहीं गयीं, चुना गया कुछ को, और कहा गया।
और याद रहे सबको यह कीर्तिमान,
इसके लिए, एक संग्रहालय भी,
बनाया गया है यहां, डिगबोई में।

बीते समय की कई वस्तुएं रखी गई हैं,
संग्रहालय में, और अधिकारियों द्वारा प्रयोग किए गए,
कई उपकरण भी हैं,
मजदूर जिन मशीनों पर काम करते थे, उन्हें भी,
संभाल कर रखा गया है,
भूपेन हज़ारिका के साथ,
और कई महानुभावों के पत्र भी रखे हैं यहां,
कुछ वस्तुएं छूट गई हैं,
या छोड़ दी गई हैं,
जैसे, काम करते समय घायल मजदूर के,
खून के धब्बों वाले कपड़े,
छोटे बच्चों के टूटे खिलौने,
आवश्यकता से कम ही भोजन बना सकने वाले बर्तन,
जो दिहाड़ी कमाने वाली महिलाओं के थे,
कुछ प्रेम पत्र, जो तत्कालीन युगलों ने लिखे होंगे,
उस डाकिए की तस्वीर, जो अच्छे बुरे समाचार लाता था,
बिहार और बंगाल के गांवों से,

और भी बहुत कुछ छूट गया है,
किसी को तो यहां आकर ढूंढना ही होगा,
नहीं तो कोई और आकर खोजेगा,
तेल के कुएं खोदेगा,
और डुबा डालेगा उसी कुएं में,
वही सारी चीज़ें जो छूट गई थी, पिछली बार
और फिर कोई कभी नहीं खोज पाएगा उन्हें,
न पृष्ठों पर, न संग्रहालयों में
और कोई माध्यम नहीं रहेगा,
यह बता पाने का,
कि क्या-क्या था, डिगबोई में।

वर्ष 2017-18 के लिये ऑयल इंडिया लिमिटेड को द्वितीय पेट्रोलियम राजभाषा शील्ड से सम्मानित किया गया

पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा अपने उपक्रमों में सरकारी कामकाज में राजभाषा हिन्दी का अधिक से अधिक प्रयोग करने के लिये उन्हें प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से प्रत्येक वर्ष पेट्रोलियम राजभाषा शील्ड से सम्मानित किया जाता है। इस क्रम में ऑयल इंडिया लिमिटेड को राजभाषा हिन्दी के प्रगामी प्रयोग में उत्कृष्ट कार्य करने हेतु वर्ष 2017-18 के लिये द्वितीय पेट्रोलियम राजभाषा शील्ड से पुरस्कृत किया गया है। इसके लिये ऑयल इंडिया लिमिटेड के समस्त अधिकारीगण एवं कर्मचारीगण को हार्दिक बधाई। आशा है कि आगामी वर्षों में ओ आई एल में राजभाषा हिन्दी का प्रयोग निरंतर बढ़ेगा तथा इस दिशा में आप सभी और भी अधिक ठोस उपाय करेंगे।

इस शील्ड को दिनांक 28.09.2018 को कांस्टीट्यूशन क्लब ऑफ इंडिया, नई दिल्ली में आयोजित एक भव्य पुरस्कार वितरण समारोह में डॉ. एम. एम. कुट्टी, सचिव, पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस मंत्रालय के कर कमलों से श्री उत्पल बोरा, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, ऑयल इंडिया लिमिटेड ने श्री विश्वजीत रॉय, निदेशक (मानव संसाधन एवं वाणिज्य विकास), ऑयल इंडिया लिमिटेड और टीम ओआईएल के अन्य वरिष्ठ अधिकारियों के साथ प्राप्त किया। समारोह में डॉ. आर. झा, उप महाप्रबंधक (राजभाषा) को वर्ष 2017-18 के दौरान ऑयल इंडिया लिमिटेड में संघ की राजभाषा नीति के श्रेष्ठ निष्पादन के लिये उनके सराहनीय योगदान हेतु एक प्रशस्ति पत्र भी प्रदान किया गया।

कोलकाता कार्यालय को वर्ष 2017-18 के दौरान श्रेष्ठ राजभाषा कार्यान्वयन के लिए तृतीय पुरस्कार

दिनांक 24.08.2018 को सम्पन्न हुई नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की छमाही बैठक एवं पुरस्कार वितरण समारोह में ऑयल इंडिया लिमिटेड के कोलकाता कार्यालय को वर्ष 2017-18 के दौरान श्रेष्ठ राजभाषा कार्यान्वयन के लिए, समारोह के विशिष्ट अतिथि डॉ. वी. एस. मूर्ति, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक जूट कार्पोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड के करकमलों द्वारा प्रतिष्ठित पुरस्कार प्रदान किया गया। प्रसंगित पुरस्कार लगातार पांचवें वर्ष प्राप्त करना कार्यालय की उपलब्धि है।

इसके अतिरिक्त इस महत्वपूर्ण अवसर पर खचाखच भरे सम्मेलन कक्ष में विभिन्न सार्वजनिक क्षेत्र उपक्रमों के अध्यक्षों, निदेशकों की उपस्थिति में डॉ. वी. एम. बरेजा, उप महाप्रबन्धक (राजभाषा) को कार्यालय में राजभाषा हिन्दी का कार्य कुशलतापूर्वक करने के लिए प्रशस्ति फलक भी प्रदान किया गया। कोलकाता कार्यालय की ओर से कार्यालय के श्री ए. रॉयचौधुरी, महाप्रबन्धक (कोलकाता कार्यालय) एवं डॉ. वी. एम. बरेजा, उप महाप्रबन्धक (राजभाषा) ने यह पुरस्कार ग्रहण किया।

स्मरण रहे कि वर्ष 2013-14, 2014-15, 2015-16, 2016-17 में भी कोलकाता कार्यालय द्वारा यह प्रतिष्ठित राजभाषा शील्ड हासिल की गई थी।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, दुलियाजान की 34वीं बैठक संपन्न

ऑयल इंडिया लिमिटेड के क्षेत्र मुख्यालय, दुलियाजान में राजभाषा के प्रचार-प्रसार के लिये 'राजभाषा संवाद' कार्यक्रम का आयोजन दिनांक 26.10.2018 (शुक्रवार) को ज्ञानार्जन एवं विकास विभाग, दुलियाजान के प्रेक्षागृह में किया गया। उक्त कार्यक्रम के अंतिम सत्र को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, (नराकास) दुलियाजान की 34वीं बैठक के रूप में आयोजित किया गया। बैठक में नराकास, दुलियाजान के अध्यक्ष एवं आवासी मुख्य कार्यपालक, ऑयल, श्री सी. पाल, नराकास, दुलियाजान के सचिव एवं कार्यकारी निदेशक (मा.सं. एवं प्र.), ऑयल, श्री प्राणजित डेका एवं श्री बदरी यादव, उप निदेशक कार्यान्वयन, क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, गुवाहाटी उपस्थित थे। दुलियाजान और निकटवर्ती क्षेत्रों में स्थित केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों, उपक्रमों और बैंकों के सदस्य कार्यालयों ने इस बैठक में अपनी सक्रीय सहभागिता सुनिश्चित की।

उक्त बैठक में सदस्य कार्यालयों के साथ विभिन्न मुद्दों यथा वार्षिक कार्यक्रम 2018-19, धारा 3(3) का अनुपालन, तिमाही रिपोर्ट का प्रेषण पर विस्तृत चर्चा की गई। डॉ. शैलेश त्रिपाठी ने कार्यक्रम को आगे बढ़ाते हुए, नराकास के सभी कार्यालयों को राजभाषा विभाग द्वारा जारी दिशा निर्देशों का पालन करने और वार्षिक कार्यक्रम के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए सदैव प्रयत्नशील रहने का आग्रह किया और प्रस्तुतीकरण के माध्यम से उपस्थित सदस्य कार्मिकों को नराकास के गठन, कार्य पद्धति व उसकी महत्ता पर विस्तार पूर्वक प्रकाश डाला।

ऑयल इंडिया लिमिटेड द्वारा नराकास, दुलियाजान की अध्यक्षता निरंतर कई वर्षों से की जा रही है। नराकास, दुलियाजान के सदस्य कार्यालयों के बीच राजभाषा हिन्दी के उत्कृष्ट कार्य निष्पादन को रेखांकित करने के उद्देश्य से ऑयल ने प्रथमतया सदस्य कार्यालयों के लिए राजभाषा शील्ड योजना का प्रारम्भ किया गया । वर्ष 2017-18 के लिए नराकास, दुलियाजान के सदस्य कार्यालयों के बीच प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय राजभाषा शील्ड का वितरण किया गया। नराकास, दुलियाजान के अध्यक्ष श्री सी पाल, आवासी मुख्य कार्यपालक, ऑयल के करकमलों द्वारा प्रथम, द्वितीय व

तृतीय राजभाषा शील्ड क्रमश: नीपको बकुलोनी, केन्द्रीय विद्यालय दुलियाजान व केन्द्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल, दुलियाजान को प्रदान किया गया।

गुवाहाटी से पधारे श्री बदरी यादव, उप निदेशक कार्यान्वयन ने आज की इस 34वीं बैठक में नराकास के सदस्य कार्यालयों से पधारे प्रतिनिधियों का स्वागत करते हुए कहा कि बैठकों में विभागाध्यक्ष की अनिवार्य उपस्थिति राजभाषा कार्यान्वयन को गति प्रदान करेगी। उन्होंने राजभाषा से संबंधित अपनी कठिनाइयों को राजभाषा विभाग को अवगत कराने के साथ ही नराकास द्वारा आयोजित कार्यशालाओं में भाग लेने का सभी कार्यालयों से अनुरोध किया। सभी सदस्य कार्यालयों से आग्रह किया कि प्रत्येक तिमाही में तिमाही रिपोर्ट ऑनलाइन भेजा करें। उन्होंने ऑयल की अध्यक्षता में, राजभाषा हिन्दी के लिए किये गये उत्कृष्ट कार्य निष्पादन के आधार पर राजभाषा शील्ड पुरस्कार वितरण करने की योजना के पहल की भूरि-भूरि प्रशंसा की और साथ ही ऑयल इंडिया लिमिटेड के कुशल नेतृत्व प्रदान करने के साथ-साथ आज के उत्कृष्ट एवं सफल आयोजन के लिए अपना हार्दिक धन्यवाद ज्ञापित किया।

डॉ. शैलेश त्रिपाठी, हिंदी राजभाषा अधिकारी, दुलियाजान के औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन के साथ ही नराकास, दुलियाजान की 34वीं बैठक समाप्त हुई।

ऑयल इंडिया लिमिटेड, दुलियाजान में राजभाषा संवाद कार्यक्रम संपन्न

ऑयल इंडिया लिमिटेड के क्षेत्र मुख्यालय, दुलियाजान में राजभाषा के प्रचार-प्रसार के लिये 'राजभाषा संवाद' कार्यक्रम का आयोजन दिनांक 26.10.2018 (शुक्रवार) को ज्ञानार्जन एवं विकास विभाग, दुलियाजान के प्रेक्षागृह में किया गया।

कार्यक्रम का प्रारंभ करते हुए डॉ. शैलेश त्रिपाठी, हिन्दी अधिकारी ने सभागार में उपस्थित अधिकारियों, कर्मचारियों व नराकास सदस्य के कार्मिकों का हार्दिक स्वागत करते हुए मुख्य अतिथि, वक्ता एवं अतिथि संकाय के रूप में उपस्थित अतिथियों से मंचासीन होने का आग्रह किया। अतिथियों को फुलाम गामोछा व पुष्पगुच्छ प्रदान कर पारंपरिक ढंग से स्वागत किया गया। तत्पश्चात आग्रह किया गया कि वे दीप प्रज्ज्वलित कर सत्रारंभ करने की कृपा करें।

डॉ. शैलेश त्रिपाठी ने कार्यक्रम को आगे बढ़ाते हुए ऑयल इंडिया लिमिटेड में हिन्दी और कम्पनी द्वारा राजभाषा हिन्दी के प्रगामी प्रयोग के लिए किये जाने वाले कार्यों की विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने यह भी कहा कि ऑयल इंडिया लिमिटेड, भारत सरकार की राजभाषा नीति के पूर्ण क्रियान्वयन के प्रति सदैव संकल्पित रहा है। अपनी समृद्ध विरासत, इतिहास एवं परंपरा के अनुरूप ऑयल इंडिया लिमिटेड द्वारा अपने कार्मिकों एवं नराकास सदस्यों के मध्य भाषा, साहित्य, कला एवं संस्कृति के प्रति रूझान एवं राजभाषा में अपना कार्यालयीन कार्य करने में सक्षम बनाने हेतु आज का यह एक दिवसीय कार्यक्रम ''राजभाषा संवाद'' आयोजित किया गया।

डॉ. आशीष त्रिपाठी, प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय ने अपने विषय 'भूमंडलीकरण एवं राजभाषा हिन्दी; वैश्विक परिदृश्य एवं भविष्य' पर विस्तार पूर्वक अपनी बात रखी। उन्होंने कहा कि राजभाषा हिन्दी के विकास के इतिहास पर नजर डालें तो हमें इसके विकास में जन-जन का योगदान सबसे ज्यादा दिखाई देता है। मिडिया के योगदान को भी नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। व्यक्तिगत विचार के रूप में उन्होंने कहा कि प्रशासन का कर्तव्य अहम है पर हिन्दी के विकास के लिए जन-जन के हृदय में स्थान बनाना आवश्यक है न कि प्रशासन के दबाव में।

डॉ. विमलेन्दु सिंह, संपादक, रत्नासागर प्रा. लिमिटेड ने अपने विषय 'व्यावसायिक हिन्दी का लोक एवं भविष्य की हिन्दी' पर संक्षिप्त रूप में अपना विचार रखा। उन्होंने कहा कि हिन्दी भाषा का विकास तभी संभव है जब लोग उसे हृदय से अपना समझे। हिन्दी भाषा के व्यवहार में अपनापन झलके, न कि उसमें नाटकपन दिखाई दे। शब्दों को ग्रहण और त्याज्यता पर भी इन्होंने अपने विचार व्यक्त किए।

डॉ. हरेराम पाठक, प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, डिग्बोई महाविद्यालय, डिग्बोई ने कहा कि मनुष्य के पास भाषा एक ऐसी शक्ति है जो उसे अपनी सभ्यता, संस्कृति के संरक्षण एवं अपने राष्ट्र के विकास करने में सहायता प्रदान करती है। डॉ. पाठक ने अपने विषय 'भारतीय भाषाओं से हिन्दी का अन्त: संबंध' पर अपनी बात रखी।

ऑयल के कार्यकारी निदेशक (मा.सं. व प्र.), श्री प्राणजित डेका ने कहा कि हिंदी का प्रयोग अब पूरे भारत में संपर्क भाषा के रूप में हो रहा है। इसलिए शासन के कामकाज में भी राजभाषा हिंदी को बढ़ावा देना अत्यंत आवश्यक है। राजभाषा हिंदी तथा स्थानीय भाषाओं के माध्यम से सरकार की विकास योजनाओं को जन-जन तक पहुंचाया जा सकता है। ऑयल इंडिया लिमिटेड राजभाषा हिन्दी के विकास के लिए सदैव वचनबद्ध है और भविष्य में भी प्रयास करते रहेंगे। नराकास सदस्य कार्यालयों को भी अपने यहाँ प्रशिक्षण दिलाने के लिए और हिन्दी माह समारोह में आयोजित होनेवाले प्रतियोगिता में हिस्सा लेने के लिए आमंत्रित किया जाता है। हमें प्रयास करना चाहिए कि कार्यालय में यथासंभव कार्य हिन्दी

भाषा में किया जाए।

ऑयल इंडिया लिमिटेड के आवासी मुख्य कार्यपालक श्री सी पाल ने अपना विचार व्यक्त करते हुए कहा कि वास्तव में मनुष्य के पास भाषा एक ऐसी शक्ति है जो उसे अपनी सभ्यता, संस्कृति के संरक्षण एवं राष्ट्र के विकास करने में सहायता प्रदान करती है। हिन्दी भारत की सर्वाधिक व्यवहारिक भाषा होने के साथ ही राजभाषा पद पर भी सुशोभित है। हम भारत सरकार की राजभाषा नीति के पूर्ण क्रियान्वयन के प्रति संकल्पित है। ऑयल इंडिया लिमिटेड और नराकास के सभी कार्मिकों से आग्रह है कि आप अपने कार्यालय में अधिक से अधिक कार्य हिन्दी में करने का प्रयास करें ताकि हम भारत सरकार के वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त कर सकें।

अंत में कार्यक्रम संचालक डॉ. शैलेश त्रिपाठी के औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन से कार्यक्रम समाप्त हुआ।

कोलकाता कार्यालय में हास्य कवि सम्मेलन का आयोजन

ऑयल इंडिया लिमिटेड के कोलकाता कार्यालय में पहली बार हास्य कवि सम्मेलन का आयोजन दिनांक 21 सितम्बर 2018 को उत्तम मंच में किया गया। विश्व विख्यात हास्य कवि पद्म श्री सुरेंद्र शर्मा, हास्य कवि श्री दिनेश बावरा तथा युवा हास्य कवि श्री रोहित शर्मा ने बहुप्रतीक्षित सम्मेलन को रंगारंग बनाने में कोई कसर नहीं छोड़ी। खचाखच भरे हॉल में उपस्थित कार्मिकों तथा नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति व अन्य प्रतिष्ठित संस्थाओं से पधारे आमंत्रित अतिथियों ने सम्मेलन का भरपूर आनन्द उठाया। हंसी और ठहाकों के बीच कवियों ने जितनी सुंदरता से गंभीर सीख दी वह काबिले तारीफ थी। कार्यक्रम की शुरुआत मंच पर दीप प्रज्वलन के साथ हुई। कार्यक्रम के प्रारम्भ में श्री ए. रॉयचौधुरी,

महाप्रबंधक (कोलकाता शाखा) ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि कोलकाता शाखा द्वारा पिछले कई वर्षों से हास्य कवि सम्मेलन का आयोजन करने का प्रयास किया जा रहा था और आज ऐसा सम्भव हो पाया। देश की सांस्कृतिक राजधानी के नाम से जाना जाने वाला कोलकाता महानगर भाषा, साहित्य एवं संस्कृति के संरक्षण के प्रति सचेत और संवेदनशील रहा है। यहां के जीवन में रोमानी भाव है जहां कविता का सृजन खुद बखुद होता है। कवियों ने हिन्दी की वाचिक परंपरा को आगे बढ़ाने में फूहड़ हास्य को दरकिनार करते हुए शुद्ध हास्य तथा तीखे व्यंग्य से अपनी कविताओं और प्रस्तुति का अलंकरण किया है और विशेष बात यह है कि अतिगंभीर विषयों की बात करते समय भी श्रोताओं को कहीं भी नीरस नहीं होने देते। इनकी कविता में हास्य व्यंग्य भी जिंदगी की रोजमर्रा की समस्याओं को स्पर्श करते हुए प्रवाहित होता है। उन्होंने हास्य कवियों को धन्यवाद देते हुए कहा कि उनकी विशेष उपस्थिति की वजह से कविता प्रेमियों में उत्साह देखने को मिला है। कवि सम्मेलन के दौरान कार्यालय के संविदा कर्मचारी की ओर से पद्मश्री सुरेंद्र शर्मा जी को उनका पेंसिल स्केच बनाकर उन्हें उपहार स्वरूप दिया गया जिसकी उन्होंने भूरि भूरि प्रशंसा की। उन्होंने ऑयल इंडिया लिमिटेड के कोलकाता कार्यालय द्वारा आयोजित किए गए हास्य कवि सम्मेलन के लिए महाप्रबंधक महोदय का धन्यवाद किया तथा कहा कि ऐसे कार्यक्रमों के आयोजन से राजभाषा हिंदी का प्रचार प्रसार होता है तथा अच्छा जीवन व्यतीत करने के लिए काम की बातें भी जानने को मिलती हैं। लगभग दो घंटे चले कार्यक्रम का समापन डॉ. वी एम बरेजा,

उप महाप्रबंधक (रा.भा.) द्वारा दिए गए धन्यवाद प्रस्ताव के साथ हुआ। कार्यक्रम का मंच संचालन भी डॉ. वी एम बरेजा द्वारा किया गया। उपस्थित कवियों को कोलकाता कार्यालय द्वारा स्मृति चिन्ह दिए जाने के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

ऑयल, क्षेत्र मुख्यालय, दुलियाजान में हिन्दी माह समारोह 2018 का आयोजन

राजभाषा नीतियों एवं निर्देशों का पूर्ण अनुपालन सुनिश्चित करते हुए ऑयल इंडिया लिमिटेड के क्षेत्र मुख्यालय, दुलियाजान में 01 सितंबर 2018 से 30 सितंबर 2018 तक बड़े ही हर्षोल्लास के साथ हिंदी माह समारोह 2018 का आयोजन किया गया। समारोह का उद्घाटन 1 सितंबर 2018 को जनरल ऑफिस, क्षेत्र सम्मेलन कक्ष में श्रुतिलेख प्रतियोगिता के आयोजन से हुआ। हिंदी माह के दौरान विभिन्न वर्गों में अधिकारियों, कर्मचारियों, कार्मिकों के आश्रितों तथा नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, दुलियाजान के सदस्य कार्यालयों के कार्मिकों के लिए अनेक रचनात्मक प्रतियोगिताओं यथा- हिन्दी श्रुतिलेखन, स्वरचित कहानी लेखन, राजभाषा ज्ञान, हिन्दी टिप्पण/आलेखन, रिक्त स्थान पूर्ति, नारा (स्लोगन) एवं प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। इसके अलावा दुलियाजान में स्थित विद्यालयों के छात्र-छात्राओं के लिए भी स्वरचित कविता, स्वरचित कहानी एवं नारा (स्लोगन) लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

उक्त सभी प्रतियोगिताओं के विजेता प्रतिभागियों को दिनांक 26.10.2018 (शुक्रवार) को ज्ञानार्जन एवं विकास विभाग, दुलियाजान के प्रेक्षागृह में आयोजित 'राजभाषा संवाद' कार्यक्रम के दौरान गणमान्य अतिथियों के करकमलों से पुरस्कृत किया गया साथ ही ऑयल की प्रतिष्ठित अंतर क्षेत्रीय राजभाषा शील्ड एवं अंतर विभागीय राजभाषा शील्ड के विजेता क्षेत्रों/विभागों को राजभाषा शील्ड प्रदान की गई। इस वर्ष के ऑयल राजभाषा शील्ड के विजेता है- अंतर-क्षेत्रीय राजभाषा शील्ड: प्रथम - पाइपलाइन मुख्यालय, गुवाहाटी और द्वितीय - कोलकाता कार्यालय, कोलकाता। अंतर-विभागीय राजभाषा शील्ड: प्रथम - क्षेत्र संचार विभाग, द्वितीय - अनुसंधान एवं विकास विभाग, तृतीय - रसायन विभाग एवं प्रोत्साहन राजभाषा शील्ड - भूभौतिकी विभाग तथा योजना विभाग। नराकास, दुलियाजान के स्तर पर भी इस बार राजभाषा में श्रेष्ठ कार्य निष्पादन के आधार पर सदस्य कार्यालयों को भी राजभाषा शील्ड से सम्मानित किया गया। इस वर्ष के राजभाषा शील्ड के विजेता कार्यालय है- प्रथम : ए.जी.वी.पी, निपको, द्वितीय : केन्द्रीय विद्यालय, दुलियाजान एवं तृतीय : केन्द्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल, दुलियाजान। इसके साथ ही विद्यार्थियों को राजभाषा अनुभाग तथा विद्यालय द्वारा संयुक्त रूप से स्कूल में ही आयोजित हिंदी माह पुरस्कार वितरण समारोह के दौरान गणमान्य अतिथियों द्वारा पुरस्कृत किया गया।

हिंदी माह के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं की कुछ झलकियाँ

हिंदी डिक्टेशन (श्रुतिलेख) प्रतियोगिता

स्वरचित कहानी लेखन प्रतियोगिता

राजभाषा ज्ञान प्रतियोगिता

हिंदी टिप्पण, आलेखन एवं रिक्त स्थान पूर्ति प्रतियोगिता

क्वीज (प्रश्नोत्तरी) प्रतियोगिता

विद्यालयों के छात्र-छात्राओं के लिए प्रतियोगिताएँ

विद्यालयों के छात्र-छात्राओं के लिए प्रतियोगिताएँ

अंतर- विभागीय राजभाषा शील्ड

प्रथम – क्षेत्र संचार विभाग

द्वितीय – अनुसंधान एवं विकास विभाग

तृतीय – रसायन विभाग

प्रोत्साहन राजभाषा शील्ड

भूभौतिकी विभाग

योजना विभाग

नराकास, दुलियाजान के स्तर पर राजाभाषा शील्ड

प्रथम – ए. जी. वी. पी., निपको, बोकुलोनी

द्वितीय – केन्द्रीय विद्यालय, दुलियाजान

तृतीय – केन्द्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल, दुलियाजान

निगमित कार्यालय, नोएडा में हिन्दी पखवाड़ा 2018 का आयोजन

ऑयल इंडिया लिमिटेड के निगमित कार्यालय, नोएडा में हिन्दी पखवाड़ा का आयोजन 14 सितंबर से 28 सितंबर तक किया गया। इस दौरान दो श्रेणी- हिन्दी एवं हिन्दीतर भाषी के लिए अनेक रचनात्मक प्रतियोगिताएं आयोजित की गयी, यथा - हिन्दी पत्राचार, टिप्पण/आलेखन एवं अनुवाद प्रतियोगिता, हिन्दी वाद-विवाद और हिन्दी डिक्टेशन प्रतियोगिता। इन प्रतियोगिताओं में कार्यालय के अधिकारीगण एवं कर्मचारीगण ने काफी संख्या में भाग लिया। हिन्दी पखवाड़ा समारोह का उद्घाटन दिनांक 14 सितंबर 2018 को किया गया। इस अवसर पर अपने स्वागत वक्तव्य में डॉ. आर. झा, उप महाप्रबंधक (राजभाषा) ने कहा कि भारत की सभ्यता और भाषायी संस्कृति की जड़े गहरी हैं तथा ये विविध संस्कृतिओं के सम्मिश्रण से गुजरकर सदियों से विकसित हुई हैं। भाषायी विविधता एवं बहुआयामी संस्कृति के बावजूद राजभाषा हिन्दी ने देश के स्वतंत्रता आंदोलन से लेकर आज तक पूरे देश को एकता के सूत्र में पिरोकर अनेकता में एकता की धारणा को पुष्ट किया है। हिंदी हमारे देश की राष्ट्रीय एकता और अस्मिता का सबसे शक्तिशाली एवं प्रभावी माध्यम है। विश्व के सभी प्रमुख विकसित एवं विकासशील देश अपनी-अपनी भाषाओं में ही अपना सरकारी कामकाज करके उन्नत हुए हैं। हिंदी हमारे देश की सबसे बड़ी संपर्क भाषा है। यह देश के अधिकांश लोगों द्वारा पारस्परिक व्यवहार में प्रयुक्त की जाती है। हिन्दी के इसी महत्व को देखते हुए भारतीय संविधान में इसे संघ सरकार की राजभाषा का दर्जा दिया गया है। देश और समाज के व्यापक हित में राजभाषा हिन्दी के प्रति जनता और सरकारी तंत्र दोनों को अधिक से अधिक संवेदनशील ओर सक्रिय बनाए जाने की आवश्यकता है ।

कार्यक्रम में अतिथि वक्ता के रूप में उपस्थित श्री डी. एस. रावत, परामर्शदाता (राजभाषा), पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस मंत्रालय ने कहा कि भारत विविधताओं का देश है। यहां अनेक भाषाएं और बोलियां बोली जाती हैं। हिन्दी आम-आदमी की भाषा के रूप में देश की एकता का सूत्र है। किसी भी भाषा का विकास उसके साहित्य पर निर्भर करता है। इसके लिए जरूरी है कि हिंदी एवं अन्य भारतीय भाषाओं में उच्च कोटि के साहित्य का सृजन किया जाए। तकनीकी विषयों की पुस्तकों को भी सरल एवं सुगम भाषा में उपलब्ध कराना होगा तथा अंग्रेजी में प्रचलित इन पुस्तकों का हिन्दी तथा भारतीय भाषाओं में अनुवाद कराना होगा। इस दिशा में हमारे विश्वविद्यालय और संस्थान अहम भूमिका निभा रही हैं। भारत सरकार द्वारा हिन्दी को विश्व-भाषा के रूप में स्थापित करने का प्रयास भी किया जा रहा है। वर्धा में महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालय तथा मॉरीशस में विश्व हिन्दी सचिवालय की स्थापना ऐसे ही कुछ प्रयास हैं। विदेशों में बसे भारतीय मूल के प्रवासियों द्वारा भी हिन्दी को विश्व भाषा बनाने की दिशा में सहयोग दिया जा रहा है। हम सभी का यह प्रयास होना चाहिए कि हिंदी को संयुक्त राष्ट्र की मान्य भाषा का दर्जा जल्दी से जल्दी प्राप्त हो।

कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के रूप में पधारे श्री केवल कृष्ण, वरिष्ठ निदेशक (तकनीकी), राजभाषा विभाग ने कहा कि अब समय आ गया है कि सभी कार्यों को अपनी भारतीय भाषाओं और हिन्दी में किया जाए। यह तर्क अब निर्मूल हो चुका है कि अपनी भाषाओं में काम करके आप विकसित और विकासशील विश्व में पिछड़ जायेंगे। क्योंकि अनेक विकसित देश केवल अपनी भाषा में ही काम करके विश्व में अग्रणी बना है। अगर ऐसा होता तो चीन, जापान, रूस, फ्रांस, जर्मनी, इटली आदि देश आज विश्व में विकास की दौर में पिछड़े होते। भाषा केवल अभिव्यक्ति का माध्यम ही नहीं बल्कि जनता और सरकारी तंत्रों के बीच पारदर्शिता लाने का जरिया भी हो। इसलिए हम सभी को अपना अधिकाधिक कार्य मूल रूप में अपनी भाषा में ही करना चाहिए।

धन्यवाद ज्ञापन और कार्यक्रम का संचालन डॉ. आर. झा., उप महाप्रबंधक (राजभाषा) ने किया।

कोलकाता कार्यालय में हिन्दी पखवाड़ा का आयोजन

ऑयल इंडिया लिमिटेड के कोलकाता कार्यालय में दिनांक 01.09.2018 से 15.09.2018 तक हिन्दी पखवाड़ा का आयोजन किया गया। पखवाड़ा के दौरान कार्यालय के अधिकारियों व कर्मचारियों के लिए कई प्रकार की प्रतियोगिताएं आयोजित की गयी। तत्क्षण आशुभाषण प्रतियोगिता, कम्प्यूटर हिन्दी टाइपिंग प्रतियोगिता, हिंदी काव्यपाठ प्रतियोगिता, हिंदी अंताक्षरी प्रतियोगिता, हिंदी गीत-गायन तथा हिन्दी क्विज प्रतियोगिता में कार्मिकों नें पूरे उत्साह के साथ भाग लिया। पखवाड़ा का उद्घाटन एक दिवसीय हिन्दी कार्यशाला के आयोजन के साथ हुआ। दिनांक 03.09.2018 को आयोजित हिन्दी कार्यशाला में 15 कर्मचारियों तथा अधिकारियों ने भाग लिया। कार्यशाला में विशेष रूप से श्री नवीन प्रजापति बतौर संकाय उपस्थित हुए। उनके अनुभव का लाभ सभी उपस्थित अधिकारियों नें उठाया।

पाइपलाइन मुख्यालय में हिन्दी माह समारोह- 2018 का आयोजन

भारत सरकार के गृह मंत्रालय अंतर्गत राजभाषा विभाग के दिशा-निदेशानुसार कार्यालयीन काम-काज में राजभाषा हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देने एवं लोगों को राजभाषा के प्रति आकृष्ट करने के उद्देश्य से 01 सितम्बर, 2018 से पाइपलाइन विभाग में विभिन्न कार्यक्रमों के साथ हिन्दी माह समारोह, 2018 का भव्य आयोजन किया गया। समारोह का शुभारंभ 01 सितम्बर, 2018 को पाइपलाइन मुख्यालय के लुईतपार क्लब सभागार में हिन्दी माह समारोह-2018 का उद्घाटन एवं राजभाषा संगोष्ठी के आयोजन से हुआ। उक्त अवसर पर राजभाषा विभाग क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (पूर्वोत्तर क्षेत्र) के कार्यालय प्रमुख एवं अनुसंधान अधिकारी श्री बदरी यादव मुख्य अतिथि एवं सम्मानित अतिथि के तौर पर आमंत्रित थे हिन्दी अखबार दैनिक पूर्वोदय के सम्पादक श्री रविशंकर रवि। मुख्य महाप्रबंधक (पाला सेवाएं) श्री समीर कुमार दास तथा आमंत्रित अतिथियों ने दीप प्रज्ज्वलित कर हिन्दी माह समारोह-2018 का विधिवत उद्घाटन किया। ''सरकारी नीतियों के कार्यान्वयन में हिन्दी का महत्व'' शीर्षक पर आयोजित राजभाषा संगोष्ठी में आमंत्रित अतिथि द्वय ने अपने सारगर्भित विचारों से सभागार में उपस्थित सभी को प्रेरित किया।

हिंदी माह के दौरान सभी कार्मिकों के लिए कविता पाठ, प्रश्नोत्तरी, श्रुतिलेख, आशुभाषण प्रतियोगिता तथा गृहिणियों के लिए कविता पाठ, निबंध लेखन, प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इसके अतिरिक्त कॉलेजों के विद्यार्थियों के लिए हिंदी कविता पाठ, स्कूली विद्यार्थियों के लिए श्रुतिलेख प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया।

दिनांक 29 सितंबर, 2018 को पाइपलाइन मुख्यालय के लुइतपार क्लब सभागार में हिंदी माह समारोह 2018 का समापन एवं पुरस्कार वितरण कार्यक्रम आयोजित किया गया। उक्त अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में उप-निदेशक (पूर्वोत्तर क्षेत्र), हिंदी शिक्षण योजना, श्रीमती कमलेश बजाज एवं श्री वशिष्ठ पाण्डेय, कार्यकारी संपादक, पूर्वांचल प्रहरी सम्मानित अतिथि के रूप में आमंत्रित थे। हिंदी माह के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेता प्रतिभागियों को उपस्थित गणमान्य अतिथियों के करकमलों से पुरस्कृत किया गया।

राजस्थान परियोजना, जोधपुर में राजभाषा समारोह आयोजित

ऑयल इंडिया लिमिटेड, राजस्थान परियोजना, जोधपुर द्वारा राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार को गतिमान बनाने के उद्देश्य से 01 सितंबर से हिन्दी पखवाड़ा का आयोजन किया गया एवं दिनांक 14 सितंबर,2018 को पखवाड़ा का समापन राजभाषा समारोह के साथ सम्पन्न हुआ। श्री सुशील चन्द्र मिश्र, कार्यकारी निदेशक (रा.प.), श्री माधुर्य बरुआ, उप महाप्रबंधक (प्रशासन एवं क.सं.) के साथ-साथ राजस्थान परियोजना कार्यालय के उच्चाधिकारियों एवं कर्मचारियों ने इस समारोह में भाग लिया। राजभाषा समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में विराजमान थे रिटायर प्रोफेसर (हिन्दी एवं जन संचार) डॉ. हरिदास व्यास। श्री हरेकृष्ण बर्मन, मुख्य प्रबंधक (राजभाषा) ने मंचासिन गण्य-मान्य व्यक्तियों के साथ-साथ उपस्थित सभी सज्जनों का स्वागत किया। समारोह के शुरुआत में श्री अजय कुमार मीना, प्रबंधक (प्रशासन) ने माननीय मंत्री, पेट्रोलियम एवं प्रकृतिक गैस श्री धर्मेंद्र प्रधान जी द्वारा हिन्दी दिवस के अवसर पर दिये गये अपील को पढ़कर सुनाया।

समारोह की अध्यक्षता राजस्थान परियोजना, जोधपुर के कार्यकारी निदेशक श्री सुशील चन्द्र मिश्र ने की। उन्होंने अपने भाषण में दैनन्दिन कार्य में राजभाषा हिन्दी को ज्यादा से ज्यादा प्रयोग में लाने हेतु सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों से अपील की। समारोह के मुख्य अतिथि डॉ. हरिदास व्यास ने कहा कि हिन्दी भारत की अधिकांश जनता की प्यार की जनभाषा है। हिन्दी की सबसे बड़ी खूबी यह है कि वह सभी भाषाओं को अपने में मिलाकर, अपना बनाकर चलती है। इससे उसके शब्दभंडार में विस्तार हुआ है। विज्ञान एवं तकनीकी विकास के समानान्तर हिन्दी का तकनीकी एवं वैज्ञानिक क्षेत्र में अधिक प्रयोग होने लगा है। डॉ. व्यास ने ऑयल इंडिया लिमिटेड, राजस्थान परियोजना, जोधपुर द्वारा राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए किए गए कार्यों की सराहना की। इसके पश्चात हिन्दी पखवाड़ा के दौरान आयोजित अनुवाद, निबंध, श्रुतिलेख, आदि विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजयी प्रतियोगियों को पुरस्कृत किया गया। समारोह के दौरान श्री प्रणब कुमार दास, प्रबंधक (प्रशासन) द्वारा खुला मंच प्रश्नोत्तरी का संचालन किया गया। श्री अजय कुमार मीना, प्रबंधक (प्रशासन) के आभार प्रकट के साथ समारोह का सफल समापन हुआ।

राजस्थान परियोजना, जोधपुर में राजभाषा कार्यशाला आयोजित

ऑयल इंडिया लिमिटेड, राजस्थान परियोजना, जोधपुर में दिनांक 05-06 सितंबर, 2018 को हिन्दी पखवाड़ा के उपलक्ष्य में एक दो दिवसीय राजभाषा कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें परियोजना कार्यालय के कार्यकारी निदेशक श्री सुशील चन्द्र मिश्र एवं उप महाप्रबंधक (प्रशासन एवं क.स.) श्री माधुर्ज्य बरुआ के साथ-साथ परियोजना कार्यालय के उच्चाधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भाग लिया। कार्यशाला के शुरूआत में मुख्य प्रबंधक (राजभाषा) श्री हरेकृष्ण बर्मन ने उपस्थित सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों का स्वागत किया एवं कार्यशाला के उद्देश्यों की जानकारी दी। कार्यकारी निदेशक श्री सुशील चन्द्र मिश्र ने सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को राजभाषा कार्यान्वयन में सहयोग देने हेतु एवं कार्यशाला में बड़ी उत्साह के साथ भाग लेने हेतु आभार प्रकट किया।

कार्यशाला के दौरान अनुवाद एवं श्रुतिलेख के ऊपर एक प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतिभागियों ने बड़े उत्साह के साथ प्रतियोगितायों में भाग लिया। कार्यशाला का संचालन प्रशासन विभाग के वरिष्ठ कार्मिक श्री नरेंद्र कुमार स्वामी ने किया।

कोलकाता कार्यालय में अधिकारियों के लिए एक उच्चस्तरीय हिन्दी कार्यशाला का आयोजन

दिनांक 31.07.2018 को कोलकाता कार्यालय में अधिकारियों के लिए एक दिवसीय उच्चस्तरीय हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। हिन्दी कार्यशाला के आयोजन के अवसर पर विशेष रूप से क्षेत्र मुख्यालय से कार्यपालक निदेशक (मा.सं. एवं प्रशासन) श्री प्राणजित डेका, विशेष वक्ता के रूप में, श्री कैलाश नाथ यादव, सदस्य सचिव नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम) तथा श्री जी के भल्ला, मुख्य प्रबंधक (राजभाषा), सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया, विशिष्ट अतिथि के रूप मे उपस्थित हुए। जबकि कार्यशाला में स्वागत भाषण कोलकाता कार्यालय के महाप्रबंधक श्री ए. रॉयचौधुरी द्वारा प्रस्तुत किया गया। आमंत्रित अतिथियों का स्वागत करते हुए उन्होंने कहा कि कोलकाता कार्यालय हिंदी कार्यान्वयन के प्रति सदैव गम्भीर रहा है तथा इसी के परिणामस्वरूप कोलकाता कार्यालय को वर्ष 2017-18 के लिए नराकास (उपक्रम) कोलकाता द्वारा राजभाषा शील्ड प्रदान की जा रही है। कार्यशाला में शामिल हुए अधिकारियों को सम्बोधित करते हुए विशेष वक्ता सहित आमंत्रित अतिथियों ने हिंदी कार्याशालाओं की उपयोगिता पर प्रकाश डाला। श्री प्राणजित डेका ने दुलियाजान में ऑयल इंडिया लिमिटेड द्वारा चलाई जा रही नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की उपलब्धियों तथा समिति द्वारा हिंदी प्रचार-प्रसार के लिए किए जा रहे नवीन प्रयासों की जानकारी दी। श्री के एन यादव ने कहा कि कोलकाता नराकास के मंच पर राजभाषा हिंदी कार्यान्वयन के लिए अनेक प्रकार के प्रयास किए जाते रहे हैं और नराकास को कई बार इंदिरा गांधी राजभाषा शील्ड मिली है। श्री जी के भल्ला ने कोलकाता कार्यालय द्वारा हिंदी कार्यान्वयन द्वारा किए जा रहे कार्यों की भूरि भूरि प्रशंसा की तथा कार्यालयी पत्राचार में सम्प्रेषण की भूमिका पर प्रकाश डाला। महाप्रबन्धक (कोलकाता कार्यालय) ने कहा कि ऐसी कार्यशालाओं से कार्यालय में कार्यरत कार्मिकों को हिन्दी में काम करने में सुविधा होगी तथा उनकी हिन्दी में काम करने की झिझक दूर होगी। उन्होंने यह भी कहा कि इस प्रकार की कार्यशालाओं की उपयोगिता कोलकाता कार्यालय के लिए अधिक है क्योंकि इन कार्यशालाओं में कार्मिकों को राजभाषा हिन्दी के बारे में जानकारी मिलती है तथा उन्हें हिन्दी में कार्य करने का अभ्यास भी कराया जाता है। दुलियाजान कार्यालय के हिंदी अधिकारी डॉ. शैलेश कुमार त्रिपाठी ने अधिकारियों को राजभाषा हिंदी के पोर्टल की विस्तृत जानकारी दी। प्रसंगित कार्यशाला में विभिन्न अनुभागों के कुल 15 अधिकारियों ने भाग लिया। डॉ.वी एम बरेजा, उप महाप्रबंधक (राजभाषा) द्वारा धन्यवाद ज्ञापित करने के साथ कार्यशाला का समापन हुआ।

समझ में आसान, इस्तेमाल में सरल।
राजभाषा हिन्दी की, बात ही विरल।।

– सत्येन्द्र कुमार शर्मा
उत्पादन सहायक सेवाएं विभाग, दुलियाजान

पाइपलाइन मुख्यालय, गुवाहाटी को राजभाषा हिन्दी में उत्कृष्ट कार्य निष्पादन हेतु प्रथम पुरस्कार से सम्मानित

केन्द्रीय गृह मंत्रालय के राजभाषा विभाग द्वारा दिनांक 10 मार्च, 2018 को पटना के सम्राट अशोक कन्वेंशन केन्द्र, ज्ञान भवन में पूर्व तथा पूर्वोत्तर क्षेत्र के लिए संयुक्त राजभाषा सम्मेलन एवं पुरस्कार वितरण समारोह आयोजित किया गया था। उक्त समारोह के मुख्य अतिथि एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में क्रमशः – केन्द्रीय गृह राज्यमंत्री श्री किरण रिजीजू एवं बृजेन्द्र महरोत्रा, मंत्रिमंडल सचिव, बिहार सरकार आमंत्रित थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता भारत सरकार के राजभाषा विभाग गृह मंत्रालय के सचिव श्री प्रभास कुमार झा कर रहे थे। विभिन्न कार्यक्रमों के साथ आयोजित इस

समारोह में पूर्व तथा पूर्वोत्तर क्षेत्र के राज्यों में स्थित सरकारी कार्यालयों, उपक्रमों, बैंकों आदि में राजभाषा हिन्दी में अधिकाधिक कार्य निष्पादन कर पुरस्कार प्राप्त करने वाले संगठनों के प्रमुखों एवं राजभाषा अधिकारियों को पुरस्कार प्रदान करना आकर्षण का

विषय था। पूर्वोत्तर के राज्यों असम, मेघालय, नागालैण्ड, मणिपुर, अरूणाचल प्रदेश मिजोराम एवं सिक्किम को मिलाकर कुल आठ राज्यों में स्थित सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम(पीएसयू) वर्ग में ऑयल इंडिया लिमिटेड, पाइपलाइन मुख्यालय, गुवाहाटी को वर्ष 2016-17 के दौरान राजभाषा हिन्दी में उत्कृष्ट कार्य निष्पादन के एवज में प्रथम पुरस्कार से उक्त समारोह में माननीय गृह राज्यमंत्री श्री किरण रिजीजू द्वारा सम्मानित किया गया।

राजस्थान परियोजना, जोधपुर में राजभाषा कार्यशाला आयोजित

ऑयल इंडिया लिमिटेड, राजस्थान परियोजना, जोधपुर में दिनांक 23 मार्च, 2018 को यूनिकोड विषयक एक राजभाषा कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें परियोजना कार्यालय के कार्यकारी निदेशक श्री सुशील चन्द्र मिश्र एवं उप महाप्रबंधक (प्रशासन एवं क.स.) श्री माधुर्ज्य बरुआ के साथ-साथ परियोजना कार्यालय के उच्चाधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भाग लिया। कार्यशाला के

शुरूआत में उप महाप्रबंधक (प्रशासन एवं क.स.) माधुर्ज्य बरुआ एवं मुख्य प्रबंधक (राजभाषा) श्री हरेकृष्ण बर्मन ने उपस्थित सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों का स्वागत किया एवं कार्यशाला के उद्देश्यों की जानकारी दी।

कार्यशाला में मुख्य अतिथि के रूप में विराजमान मरुस्थलीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान केंद्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. मुरली लाल माथुर ने कहा कि यूनिकोड संकेत भाषा से संबन्धित एक सॉफ्टवेर जिसके जरिए एक स्थान से दूसरे स्थान पर भेजे गए फॉन्ट में कोई परिवर्तन नहीं होता डॉ. माथुर ने यूनिकोड के जरिये कंप्यूटरों पर हिन्दी में काम करने के संबंध में विस्तृत जानकारी दी एवं कार्यालय में कंप्यूटरों के जरिये हिन्दी में काम करने में आई बाधाओं को दूर करने के तरीके बताए। कार्यकारी निदेशक श्री सुशील चन्द्र मिश्र ने भी यूनिकोड के जरिये राजभाषा कार्यान्वयन की गति बढ़ाने हेतु सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों से अपील की। कार्यशाला का संचालन श्री हरेकृष्ण बर्मन, मुख्य प्रबंधक (राजभाषा) ने किया। श्री अजय कुमार मीना, प्रबन्धक (प्रशासन) के धन्यवाद ज्ञापन के साथ कार्यशाला का समापन हुआ।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, दुलियाजान की 33वीं बैठक संपन्न

दिनांक 08 मई, 2018 को ऑयल इंडिया लिमिटेड की अध्यक्षता में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, (नराकास) दुलियाजान की 33वीं बैठक संपन्न हुई। इस बैठक की अध्यक्षता ऑयल के श्री दिलीप कुमार भूयाँ, महाप्रबंधक (जन संपर्क) एवं उपाध्यक्षता श्री त्रिदिव हजारिका, उप महाप्रबंधक (सीएसआर एवं सीसी) ने की। दुलियाजान और निकटवर्ती क्षेत्रों में स्थित केंद्रीय सरकार के कार्यालयों, उपक्रमों और बैंकों के सदस्य कार्यालयों ने इस बैठक में अपनी सक्रीय सहभागिता सुनिश्चित की।

इस बैठक में सदस्य कार्यालयों के साथ (1) राजभाषा विभाग द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम 2018-19 (2) धारा 3(3) का अनुपालन (3) राजभाषा नियम 5 एवं 11 का अनुपालन (4) ई-मैगजीन का प्रकाशन (5) आनलाइन तिमाही रिपोर्ट का प्रेषण (6) विगत वर्ष की तिमाही रिपोर्ट की समीक्षा (7) हिन्दी प्रशिक्षण एवं हिन्दी कार्यशाला के आयोजन पर विस्तृत चर्चा की गई।

नराकास, दुलियाजान के सदस्य सचिव डॉ. शैलेश त्रिपाठी, हिन्दी अधिकारी, ऑयल ने हिन्दी के नवीन ई-टूल्स 'गूगल वाइस टाइपिंग' पर प्रस्तुतिकरण देकर सदस्यों को अवगत कराया। सदस्य कार्यालयों ने भी अध्यक्ष महोदय को आश्वस्त किया कि हम इसका प्रयोग कर अपना ज्यादा से ज्यादा काम हिन्दी में करने हेतु प्रयास करेंगे।

इस बैठक के अध्यक्ष, उपाध्यक्ष एवं सदस्य कार्यालयों के वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा नराकास, दुलियाजान की वेबसाइट का लोकार्पण भी किया गया।

बैठक के उपाध्यक्ष श्री त्रिदिव हजारिका ने सदस्यों का स्वागत करते हुए इस बात पर बल दिया कि हमें हमारी एकता बनायें रखने के लिए हिन्दी को राजभाषा के रूप में स्थापित कर अपना काम हिन्दी में करना चाहिए। उन्होंने बल देते हुए कहा कि अब हमें इसके लिए तकनीकी के साथ साथ सभी जरूरी सहयोग प्राप्त हो रहे हैं। अत: हमें ज्यादा से ज्यादा काम हिन्दी में करने पर बल देना चाहिए।

अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में श्री दिलीप कुमार भूयाँ, महाप्रबंधक (जन संपर्क) ने कार्यालयों की उपस्थिति पर संतोष जताते हुए कहा कि नराकास की वेबसाइट के उद्घाटन से हमें सार्थक रूप से आपसी संवाद एवं सूचनाओं के आदान प्रदान में सहायता मिलेगी साथ ही उन्होंने आग्रह किया कि सभी कार्यालय तिमाही रिपोर्ट भेजने की व्यवस्था करें जिससे की हम नराकास स्तर पर भी उत्कृष्ट सदस्य कार्यालयों को पुरस्कृत कर सकें। तकनीकी उपलब्धता एवं उपयोग पर अपनी बात रखने के साथ ही सभी सदस्यों को धन्यवाद देते हुए अपनी बात समाप्त की।

डॉ. त्रिपाठी, सदस्य सचिव, नराकास, दुलियाजान के औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन के साथ ही नराकास, दुलियाजान की 33वीं बैठक समाप्त हुई।

उक्त बैठक में दुलियाजान एवं निकटवर्ती निम्न कार्यालयों के अपनी सक्रिय सहभागिता सुनिश्चित करते हुए नराकास की इस बैठक को सफल बनाया - नेशनल इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड, आयकर विभाग, केन्द्रीय विद्यालय (नामरूप), केन्द्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल (दुलियाजन), नीपको (कथालगुरी), डाकघर, सिंडिकेट बैंक, केन्द्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल (नामरूप), केन्द्रीय विद्यालय संगठन, तिनसुकिया, केन्द्रीय विद्यालय (दुलियाजान), यूको बैंक, इंडियन बैंक, भारतीय स्टेट बैंक, दि ओरिएण्टल इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड, इंडियन ओवरसीज बैंक, सेंट्रल बैंक, और इलाहाबाद बैंक।

कोलकाता कार्यालय में भारतीय भाषा सुगम संगीत समारोह का आयोजन

नववर्ष की पूर्व संध्या के शुभ अवसर पर कोलकाता कार्यालय में 13 अप्रैल 2018 को पहली बार भारतीय भाषा सुगम संगीत समारोह का आयोजन किया गया। संगीत को भाषाई सद्भाव के माध्यम के रूप में अपनाते हुए यह रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित हुआ। इस कार्यक्रम में कार्यालय के अधिकारियों कर्मचारियों

सहित उनके परिवार के सदस्यों को भी मंच प्रदान किया गया। प्रत्येक प्रस्तुति एक से बढ़कर एक थी। मुख्य अतिथि के रूप में विशेष रूप से आमंत्रित श्री निर्मल कुमार दूबे, उप-निदेशक (कार्यान्वयन) ने सभागार में उपस्थित ऑयल परिवार के सदस्यों को सम्बोधित करते हुए कहा कि यह अपने आप में एक अनूठा प्रयास है, जिसमें न केवल हिंदी भाषा बल्कि क्षेत्रीय भाषाओं को भी बराबर सम्मान दिया गया है। धीरे धीरे हमारी नई पीढ़ी अपनी मातृभाषा के प्रयोग से दूर होती जा रही है। अत: इस सरीखे प्रयासों से अष्टम अनुसूची में दर्ज क्षेत्रीय भाषाओं में सुगम संगीत का आनंद मिल पाएगा और ये भाषाएं मजबूती से स्थापित रहेंगी। उन्होंने कोलकाता कार्यालय की भूरि भूरि प्रशंसा की और कार्यक्रम के सफल आयोजन के लिए कार्यालय को बधाई दी। विशिष्ट अतिथि श्री कैलाश नाथ यादव, सदस्य सचिव नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति(उपक्रम) कोलकाता ने कोलकाता कार्यालय द्वारा हिंदी कार्यान्वयन के लिए किए जा रहे प्रयासों की प्रशंसा की और कहा कि नियमित रूप के हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन, हिंदी यूनीकोड कार्यशाला का आयोजन तथा हिंदी पखवाड़ा के दौरान नए नए प्रकार की प्रतियोगिताएं को शामिल किया जाना यह दर्शाता है कि इस कार्यालय के कार्मिकों में हिंदी भाषा के प्रति प्रेम जागृत करने के लिए अनोखे तथा गम्भीर प्रयास किए जा रहे हैं। इसी का परिणाम यह देखने को मिला है कि सभागार खचाखच भरा हुआ है तथा प्रस्तुति देने के लिए अधिकारियों, कर्मचारियों सहित उनके परिवार के सदस्यों का उत्साह देखते ही बन रहा है। इससे पहले महाप्रबंधक (कोलकाता कार्यालय) श्री अंशुमन रॉयचौधरी ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया। कार्यक्रम में कुल बीस प्रस्तुतियां दी गईं। हिंदी, बांग्ला, असमिया तथा पंजाबी गीतों व गज़लों, समूह गान का आनन्द सभी उपस्थित श्रोताओं ने लिया। कार्यक्रम का अंत डॉ. वी एम बरेजा, उप महाप्रबंधक (राजभाषा) द्वारा धन्यवाद ज्ञापित करने तथा प्रस्तुतिकर्ताओं को स्मृति चिह्न भेंट करने के साथ हुआ।

के जी बेसिन परियोजना कार्यालय में हिंदी कार्यशाला का आयोजन

दिनांक 22.03.2018 को के जी बेसिन परियोजना कार्यालय में अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए एक दिवसीय उच्चस्तरीय हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में स्वागत भाषण के जी बेसिन परियोजना कार्यालय के मुख्य महाप्रबंधक श्री आर के तालुकदार द्वारा प्रस्तुत किया गया। उन्होंने कहा कि परियोजना कार्यालय हिंदी कार्यान्वयन के प्रति गम्भीरता से प्रयास कर रहा है। कार्यशाला में शामिल हुए कार्मिकों को सम्बोधित करते हुए श्री स्वदेश दे, कार्यपालक निदेशक (के जी बेसिन एवं बी ई पी) ने कार्यशालाओं की उपयोगिता पर प्रकाश डाला। उन्होंने यह भी कहा कि ऐसी कार्यशालाओं से कार्यालय में कार्यरत कार्मिकों को हिन्दी में काम करने में सुविधा होगी तथा उनकी हिन्दी में काम करने की झिझक दूर होगी। इस प्रकार की कार्यशालाओं की उपयोगिता के जी बेसिन परियोजना कार्यालय के लिए अधिक है क्योंकि इन कार्यशालाओं में कार्मिकों को राजभाषा हिन्दी के बारे में जानकारी मिलती है। प्रसंगित कार्यशाला में विभिन्न अनुभागों के कुल 20 कार्मिकों ने भाग लिया। डॉ. वी एम बरेजा, मुख्य प्रबंधक (राजभाषा) द्वारा राजभाषा अधिनियम व नियमों का प्रस्तुतिकरण किया गया। नामांकित अधिकारियों को हिन्दी साहित्य से सम्बन्धित रुचिकर पाठ्य सामग्री वितरित करने के साथ कार्यशाला का समापन हुआ।

पाइपलाइन मुख्यालय, गुवाहाटी में राजभाषा कार्यशाला आयोजित

ऑयल इंडिया लिमिटेड, पाइपलाइन मुख्यालय, गुवाहाटी में दिनांक 31 मार्च, 2018 को एक राजभाषा कार्यशाला का आयोजन किया गया। पाइपलाइन के मुख्य महाप्रबंधक (पाला सेवाएं) श्री बिजन कुमार मिश्रा के साथ-साथ पाइपलाइन के उच्चाधिकारियों एवं कर्मचारियों ने इस कार्यशाला में भाग लिया। कार्यशाला के शुरूआत में वरिष्ठ प्रबंधक(राजभाषा) श्री नारायण शर्मा ने उपस्थित सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों का स्वागत किया एवं कार्यशाला के उद्देश्य की जानकारी दी। पाइपलाइन के मुख्य महाप्रबंधक (पाला सेवाएं) श्री बिजन कुमार मिश्रा ने इस कार्यशाला का विधिवत् उद्घाटन करते हुए कहा कि ''पाइपलाइन मुख्यालय में हम नियमित रूप से राजभाषा कार्यशाला का आयोजन करते रहे हैं और राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय के वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित प्रावधान अनुसार आज इस राजभाषा कार्यशाला का आयोजन हो रहा है। कार्यालयीय काम-काज में हिन्दी के प्रयोग की जानकारी देना कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य होता है। हमारे बीच सहायक निदेशक (हिन्दी शिक्षण-प्रशिक्षण)एवं सहायक निदेशक (आशुलिपि) क्रमश: श्री ज्ञान चंद प्रसाद तथा श्री धीरजलाल हिन्दी शिक्षण योजना मालीगाँव से बतौर फैकल्टी आमंत्रित हैं। मुझे उम्मीद है इनके मार्ग दर्शन में आप सभी को काफी जानकारियां मिलेगी। इसी विचार के साथ आज के इस राजभाषा कार्यशाला के विधिवत् उद्घाटन की घोषणा करता हूं।''

कार्यशाला का शुभारंभ करते हुए श्री ज्ञान चंद प्रसाद ने राजभाषा नियम, अधिनियम, संसदीय राजभाषा समिति, हिन्दी परीक्षा प्रबोध, प्रवीण एवं प्राज्ञ आदि के संबंध में विस्तृत चर्चा की। श्री प्रसाद जी ने आशा व्यक्त की कि राजभाषा कार्यशाला में उपस्थित सभी प्रतिभागी अपना अधिक से अधिक कार्यालयीन काम-काज हिंदी में करेंगे। श्री प्रसाद जी ने अपने व्याख्यान से कार्यालय में राजभाषा कार्यान्वयन में आनेवाली बाधाओं को दूर करने का प्रयास किया। साथ ही उन्होंने टिप्पण, आलेखन तथा मसौदा लेखन में आने वाली दुविधाओं का भी निदान करते हुए सहज व सरल भाषा से ही इसके निपटान पर जोर भी दिया। श्री धीरजलाल ने कम्प्यूटर में यूनिकोड पर कार्यालयीय काम-काज किस तरह से किया जाता है इस पर विस्तृत जानकारी पावर प्वांइट के जरिये प्रदान किया।

कार्यशाला में उपस्थित कार्मिकों ने उत्साह पूर्वक भाग लिया। पाइपलाइन के मुख्य महाप्रबंधक (पाला सेवाएं) श्री बिजन कुमार मिश्रा ने भी राजभाषा कार्यान्वयन की वर्तमान स्थिति को देखते हुए संतोष व्यक्त किया तथा इसकी गति और बढ़ाने हेतु सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों से अपील की। कार्यशाला का संचालन श्री नारायण शर्मा, वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा) ने किया।

अंत में श्री सुनील कुमार राय के धन्यवाद ज्ञापन के पश्चात कार्यशाला का समापन हुआ।

के जी बेसिन कार्यालय में हिंदी क्विज प्रतियोगिता का आयोजन

दिनांक 10 अक्तूबर 2018 को ऑयल इंडिया लिमिटेड के के. जी.बी. एवं बी. ई. पी. काकीनाडा कार्यालय में हिंदी दिवस मनाया गया तथा इस अवसर पर राजभाषा हिंदी की प्रगति एवं प्रसार के लिए अनेक प्रकार की प्रतियोगिताएं आयोजित की गई। मुख्य रूप से कार्यालय के अधिकारियों तथा कर्मचारियों ने हिंदी क्विज प्रतियोगिता का भरपूर आनंद उठाया। इस प्रतियोगिता के प्रारम्भ में श्री आर तालुकदार, मुख्य प्रबंधक (प्रशासन एवं क. स.) ने स्वागत सम्बोधन प्रस्तुत किया तथा कार्यपालक निदेशक (केजीबी एवं बीईपी) श्री एस बी पॉल राय ने उपस्थित कार्मिकों को सम्बोधित करते हुए कहा कि कार्यालय में अब राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन का माहौल बन चुका है। कुछ माह पूर्व कार्यालय में हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया था तथा आज हिंदी क्विज प्रतियोगिता का आयोजन किया गया है। यह देख कर प्रसन्नता होती है कि इस प्रतियोगिता में छ: टीमें भाग ले रही हैं। मैं अपनी ओर से सभी को शुभकामनाएं देता हूं तथा आशा करता हूं कि आप सभी

इसी प्रकार हमारी सभी की प्रिय भाषा हिंदी को आगे बढाने का प्रयास करते रहेंगे। डॉ. वी एम बरेजा, उप महाप्रबंधक (रा.भा.) ने क्विज मास्टर की भूमिका का निर्वहन किया। प्रतियोगिता के अंत में पुरस्कार विजेता टीमों के लिए पुरस्कारों की घोषणा की गई तथा ईनामी राशि का भुगतान ई-भुगतान के माध्यम से कर दिया गया। श्री बी एस राव द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 3(3) के अनुसार कार्यालय के इन दस्तावेजों को हिन्दी और अंग्रेजी में एक ही साथ जारी करना आवश्यक है :-

1	सामान्य आदेश	General Orders
2	परिपत्र	Circulars
3	अधिसूचनाएं	Notifications
4	प्रेस विज्ञप्तियां / टिप्पणियां	Press Communiques / Releases
5	संविदाएं	Contracts
6	करार	Agreements
7	लाइसेंस	Licences
8	परमिट	Permits
9	टेंडर के फार्म और नोटिस	Notice & forms of tenders
10	संकल्प	Resolutions
11	नियम	Rules
12	संसद के एक सदन में या दोनों सदनों में प्रस्तुत कागजपत्र (रिपोर्टों के अलावा)	Official papers laid before a House or both Houses of Parliament (other than reports)
13	संसद के एक सदन में या दोनों सदनों में प्रस्तुत प्रशासनिक और अन्य रिपोर्टें	Administrative and other reports laid before a House or both houses of Parliament
14	प्रशासनिक एवं अन्य रिपोर्टें (संसद के एक सदन या दोनों सदनों में प्रस्तुत की गई रिपोर्टों के अलावा)	Administrative and other reports (other than those laid before a House or both Houses of Parliament)

पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस मंत्रालय
राजभाषा पुरस्कार वितरण समारोह